KOṄKAṆĪ SWAYAṀ ŞIKSHAK

कोंकणी स्वयंशिक्षक

Prof. R.K.RAO, M.A.

कौंकणी स्वयंशिक्षक

लेखक :

प्रोफ़ेसर आर० के० राव, एम० ए०

(सदस्य, विशेषज्ञ-समिति, भारतीय जनजाति भाषाएँ/बोलियाँ तथा लघु भाषाएँ —केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

प्रकाशक :

कोंकणी भाषा संस्थान

कोचीन – 682025

Konkani Language Institute Book Series, No 1

KONKANI SWAYAM SIKSHAK
[Konkani Self Instructor]

Author : Professor R. K. RAO, M.

1st Edition, June, 1975

Printed at :
Hindi Prachar Press,
Ernakulam, Cochin - 682 016

Price : Rs. 15/-

Publishers :
Konkani Language Institute.
Karnakodam, Cochin - 682 025

स्व० प्रोफ़ेसर चन्द्रहासन, एम० ए०

भूतपूर्व निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,

भारत सरकार

को

सादर समर्पित

—राव

आभारोक्ति

कोंकणी में व्याकरण, भाषाशास्त्र, कोष आदि से संबन्धित पुस्तकें बहुत ही कम मिलती हैं। अतः भाषा के मूल रूप को पहचानने तथा उसे व्यवस्थित करने का काम अत्यन्त दुष्कर हो गया है। इस कार्य के संपन्न होने पर ही 'स्वयं शिक्षक' की रचना सुगम हो सकती है, तो भी पर्याप्त चिन्तन के पश्चात् इस स्वयं शिक्षक की रचना की ओर मैं अग्रसर हुआ हूँ।

स्वयं शिक्षक लिखने की प्रेरणा मुझे स्व० ए० चन्द्रहासनजी से प्राप्त हुई। जिन्होंने संपर्क भाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार केलिये भारतीय लघु भाषाओं का विकास अनिवार्य समझा। फलस्वरूप सन् 1968 में भारतीय लघुभाषा विकास विशेषज्ञ समिति की स्थापना हुई। इस केलिये मैं उनका आभारी हूँ।

गोआ के भाषा-साहित्यकार श्री० रवीन्द्र केलेकर और डॉ० मनोहर राय सार देशाई ने पुस्तक की पाण्डु लिपि का अध्ययन कर के कई सुझाव दिये। श्री० केलेकर ने तो 'स्वागत' लिखकर अनुगृहीत भी किया। इन केलिये मैं इन सज्जनों का कृतज्ञ हूँ।

—राव

स्वागत

बहुत ही कम विद्वानों को मालूम है कि आर्यपरिवार की आधुनिक भारतीय भाषाओं में सबसे प्रथम व्याकरण लिखा गया कोंकणी में। मुद्रणालय में मुद्रित सबसे पहली भारतीय पुस्तक भी है कोंकणी। गद्य साहित्य की निर्मिति भी प्रथम कोंकणी में ही हुई। सोलहवीं शताब्दी में संपादित जो उत्तमोत्तम कोंकणी कोश हैं, वे भी आधुनिक भारतीय भाषाओं के सबसे पुराने कोश हैं।

कोंकणी की इस प्रगतियात्रा में यदि कोई रुकावट न आती तो निश्चय ही यह भाषा आज देश की विकसित भाषाओं में गिनी जाती। किन्तु कोंकणी के भाग्य में कुछ और ही बात थी।

अन्य भारतीय भाषाओं को किसी न किसी समय अपने प्रदेशों में प्रतिष्ठा मिली है। कोंकणी को न कभी यह भाग्य मिला, न मौका। पुर्तुगालियों ने कोंकणी प्रदेश के एक हिस्से पर—गोआ पर—अपनी सत्ता जमायी। उसके पहले लगभग ढाई हज़ार वर्षों तक यहां किसी न किसी गैर-कोंकणी राजाओं की ही सत्ता चली आ रही थी। इसलिये इस प्रदेश में राजनैतिक या धार्मिक महत्व का स्थान कोंकणी के बदले हमेशा या तो कन्नड़ भाषा को मिला या मराठी को। परिणामस्वरूप इस प्रदेश के विद्वानों में कोंकणी के बजाय राज्य कर्ताओं की भाषाओं में रचनायें लिखकर प्रतिष्ठा प्राप्त करने की परंपरा चली आ रही है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से कोंकणी एक स्वतंत्र भाषा होते हुए भी और साहित्यिक क्षमता में वह सत्ताधारियों की भाषाओं की ही बराबरी की होते हुए भी, कोंकणी भाषा कोंकणी प्रदेश के लोगों की निष्ठापूर्वक चलायी हुई महज बोलचाल की ही भाषा रही।

पुर्तुगालियों ने ही इसको सबसे पहले साहित्यिक प्रतिष्ठा प्रदान की। कोंकणी में सोलहवीं शताब्दी का कोश, व्याकरण, गद्य आदि जो कुछ साहित्य उपलब्ध है, वह पुर्तुगालियों के ही कारण निर्माण हो सका। किन्तु यह सब शुरू शुरु में हुआ। बाद में—कुछ ही वर्षों के भीतर—उनकी नीति में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। उन्होंने हिन्दु-धर्म के विरुद्ध जैसे युद्ध छेडा वैसे ही कोंकणी के संपूर्ण उन्मूलन का भी एक कार्यक्रम तय्यार किया और बडे जनून के साथ चलाया। सन् १६८४ में गोआ के पुर्तुगाली व्हाइसराय कॉन्दि द आल्वोर ने एक आज्ञा प्रकाशित की कि 'तीन वर्षों के भीतर गोआ में कोंकणी का प्रचलन बन्द हो जाना चाहिये।' तीन वर्षों के बाद जब उसने देखा कि बावजूद उसकी आज्ञा के कोंकणी जीवित है, तब वह कोंकणी बोलनेवालों के घरबार, ज़मीन आदि छीनने लगा। सन् १७३१ में गोआ में इन्क्विझीशन की स्थापना हुई। उसके बाद कोंकणी बोलनेवालों को ज़िन्दा जलाने की नीति शुरू हुई। कोंकणी पर जो उस ज़माने में अत्याचार हुए हैं, उसकी कोई सीमा नहीं है। इतिहास में शायद ही किसी देशी या विदेशी भाषा पर इतने अत्याचार हुए होंगे।

कोंकणी के भाग्य में जो यह इतिहास आया उसका एक नतीजा यह हुआ कि कोंकणी भाषिक लोग पाँच सांस्कृतिक परंपराओं में विभाजित हुए। जो पुर्तुगाली प्रदेश में रहे उन्होंने पुर्तुगाली परंपरा को स्वीकार किया। जो मराठी प्रदेशों में जाकर रहे उन्होंने मराठी परंपरा अपना ली। बहुत से लोग कर्नाटक में जाकर बसे। उन्होंने कन्नड़ परंपरा ले ली। कुछ कोचीन में भी जाकर बसे। उन्हें मलयालम परंपरा को स्वीकार करना पडा।

पुर्तुगाली परंपरा में जिनकी परवरिश हुई थी उनमें से जिन लोगों को व्यवसाय के कारण पूर्व आफ्रिका जैसे प्रदेशों में जाकर रहना पडा उन्होंने अंग्रेज़ी की सांस्कृतिक परंपरा अपना ली।

महत्व की बात तो यह है कि इस प्रकार पाँच विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं में बंटे हुए होते हुए भी कोंकणी लोगोंने कोंकणी भाषा कभी नहीं छोड़ी। वे लिखते आये हैं अपनी अपनी अपनायी हुई सांस्कृतिक भाषाओं में किन्तु निष्ठापूर्वक और आग्रहपूर्वक आपस में कोंकणी में ही व्यवहार करते आये हैं। आपस में वे हमेशा कोंकणी ही बोलते हैं। मराठी के कवि बोरकर जब कन्नड़ कवि मंजेश्वर गोविन्द पै से मिलते थे तब दोनों का माध्यम कोंकणी ही रहता था।

पाँच अलग परंपराओं में विभाजित लोगों को आपस में जोडनेवाली कड़ी कोंकणी ही है—यहाँ तक कि हिन्दू और ख्रिस्ती नामक दो स्वायत्त संसारों में बंटे हुए लोगों को भी एकत्र लाने की शक्ति कोंकणी में है, इस बात का जब चन्द लोगों को साक्षात्कार हुआ, तब उनसे रहा नहीं गया। अपने खोये हुए व्यक्तित्व की खोज के तौर पर उन्होंने कोंकणी की पुन:स्थापना की प्रवृत्ति शुरू कर दी। करीब पचास साल हुए, यह प्रवृत्ति चली आ रही है।

कोंकणी लोगों ने संस्कृत, मराठी, कन्नड़, मल्यालम, अंग्रेज़ी और पोर्तुगीज—इन भाषाओंकी उत्तमोत्तम सेवायें की हैं। इनके अलावा लेटिन, फ्रेंच, स्पेनिश जैसी भाषाओं की भी की हैं। सन् १९५० के पहले के ढाई सौ वर्षों में केवल गोआ के दो हज़ार साहित्यिकों ने संसार की चौदह भाषाओं में लगभग दस हज़ार पुस्तकों की रचना की है। इनमें नौ भाषायें तो यूरप की हैं। कोंकणी के जिस दुर्भागी इतिहास का ज़िक्र मैं ने ऊपर किया उसी की यह एक समृद्ध विरासत है। बहुभाषा संपर्क और उपासना में जिनकी परवरिश हुई और जिन्होंने राष्ट्र की अनेक क्षेत्रों में अनन्यसाधारण सेवायें कीं वे यदि चाहें और नित्य व्यवहार में निष्ठापूर्वक चलायी हुई अपनी जन्म भाषा कोंकणी में भी साहित्य निर्मिति करें तो क्या देश का फ़ायदा नहीं होगा? कोंकणी प्राच्य विद्याविशारद डॉ॰ भांडारकर की जन्म-भाषा है। महाभारत के संपादक डॉ॰ सुखथनकर की भी जन्मभाषा है। पाली के प्रकांड पंडित धर्मानंद कोसंबीजी की जन्मभाषा है। मराठी के

कवि बोरकर, कन्नड़ के कवि मंजेश्वर गोविन्द पै, मलयालम के भाषाविज्ञ शेषगिरि प्रभु, साहित्यकार हरिशर्मा, पुर्तुगाली के कवि आदेओदात बार्रेतु और नारशीमेन्तु द मेन्दोंसा, अंग्रेज़ी के कवि आरमान्दु मिनेझिश और पत्रकार फ्रँक मोराइश—ये सब कोंकणी के ही सुपुत्र हैं। 'यथा भाषिकस्तथा भाषा' न्याय यदि सच है, तो इन साहित्य स्वामियों की जन्मभाषा उनकी 'अपनायी हुई' भाषाओं के स्तर की ही होनी चाहिये।

कोंकणी में विपुल साहित्य भले न हो, उसकी साहित्यिक शक्ति किसी भी विकसित भारतीय भाषा से कम नहीं है। जो थोड़ासा साहित्य उसमें है और जो अब ज़ोरों से निर्माण होता है उसकी भी योग्यता कम नहीं है। कोंकणी की साहित्यिक क्षमता का संदेह नहीं किया जा सकता। वह बडी ही मधुर भाषा है। डा० राम मनोहर लोहिया के शब्दों में कहूँ तो वह 'भारत की मधुरतम भाषा है।' बहुभाषा संपर्क और उपासना के कारण कोंकणी का भविष्यकाल भी बडा उज्वल है।

गोआ की स्वतंत्रता के कारण गोआ के दरवाज़े जो भारतीयों के लिये आज तक बन्द थे, अब खुले हो गये हैं। स्वतंत्रता के बाद देश के विभिन्न हिस्सों से कई लोग गोआ में आकर बसने लगे हैं।

कोंकणी के साहित्य ने भी गोआ की स्वतंत्रता के बाद कई आंतर-राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। आचार्य काकासाहब कालेलकर, पं० जवाहरलाल नेहरू, डा० सुनीति कुमार चाटर्जी जैसे भारत के सुपुत्रों ने कोंकणी का समर्थन करना शुरूकर दिया, तब से देश के विद्वानों का भी ध्यान इस भाषा की ओर खींचा गया।

अब साहित्य अकादमी ने कोंकणी को एक 'स्वतंत्र साहित्यिक भाषा' के तौर पर मान्यता दी है।

अब गैर कोंकणी लोग कोंकणी सीखना चाहें तो वह आश्चर्य की
ात नहीं है। कई दिनों से 'कोंकणी स्वयं शिक्षक' की मांग
ली आ रही थी। मुझे बडी खुशी है कि इस मांग
ी पूर्ति बड़ी योग्यता के साथ श्री० आर० के० राव कर
हे हैं। श्री० राव कोंकणी भाषी केरलवासी हैं। मलयालम भाषा-
ाषी लोगों के बीच हिन्दी के प्रचार और प्रसार में उनके जीवन के
हत्व के वर्ष खर्च हुए हैं। अब वे उसी भाषा के माध्यम से देश
 लोगों को कोंकणी जैसी एक महत्व की लघु भाषा का परिचय
रा रहे हैं। मुझे विश्वास है, देश के लोग—खास कर के हिन्दी
ाषा-भाषी – उनकी इस सेवा की कद्र करेंगे।

श्री० राव ने जिस कोंकणी का इस स्वयं शिक्षक में परिचय करा दिया
 वह मंगळूरी और केरली शैली की कोंकणी है। याने कर्णाटक और
रल में प्रचलित कोंकणी है। गोआ की राजधानी पणजी के आसपास
ी कोंकणी बोली जाती है वह उच्चारण में (केवल उच्चारण में) इस
 कुछ भिन्न है। किन्तु कोंकणी की खूबी यह है कि उसकी जो
ाँच या छः शैलियां हैं, उनमें से किसी एक का अच्छा परिचय होने
र बाकी की अपने आप समझ में आने लगती हैं।

जो हो; इस 'स्वयं शिक्षक' को लिखकर श्री० राव ने कोंकणी के
ाथ साथ देश की भी उत्तम सेवा की है। इस बहुभाषी देश में
ो कोई भिन्न-भिन्न भाषाओं का एक दूसरे से परिचय करा देता है,
ह बहुत बडा सांस्कृतिक कार्य करता है और श्री० राव ने यह कार्य
डी योग्यता के साथ किया है। एक भारत भक्त कोंकणी भाषा-भाषी
 नाते मैं उनके इस कार्य के प्रति बडी कृतज्ञता से देखता हूँ।
ाशा करता हूँ कि जो इस पुस्तक से लाभ उठाकर कोंकणी सीखेंगे
 भी श्री० राव के प्रति बडी कृतज्ञता से देखेंगे।

म्हादोळ, गोआ
७५ (अक्षय तृतीया)

रवीन्द्र केळेकर

अनुक्रमणिका

कोंकणी भाषा

कोंकणी भारतीय आर्य परिवार की भाषा है जो सह्याद्रि प्रदेश पर उत्तर में रत्नगिरि से लेकर दक्षिण में तिरुवनन्तपुरम तक बोली जाती है। गोवा की तो यह "आवय भास" (मातृ-भाषा) है। गोवा सरकार ने इसे लोक-सम्पर्क की भाषा भी माना है। आबादी की हैसियत से करीब पैंतीस लाख लोग यह भाषा बोलते हैं।

स्थान भेद के कारण कोंकणी की खास कर चार बोलियाँ पाई जाती हैं जो निम्न प्रकार हैं:—

i) महाराष्ट्र राज्य के रत्नगिरि–सावन्तवाडी प्रदेशों के लोगों की बोली।

ii) गोवा के हिन्दुओं की बोली।

iii) गोवा और कारवार–मंगलूर प्रदेश के ईसाइयों की बोली।

iv) कारवार–मंगलूर वा केरल (कोचीन) के सारस्वतों की बोली।

रत्नगिरि–सावन्तवाडी की बोली आधुनिक मराठी से प्रभावित और उस भाषा के सम्पर्क में आकर उससे बहुत ही मिल जुल गयी है। मराठी जनता यदि इस बोली को मराठी की एक बोली समझें तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

गोवा के हिन्दुओं की बोली रत्नगिरि–सावन्तवाडी के लोगों की बोली से भिन्न है। मराठी से कम प्रभावित होने के कारण,

इस बोली में कोंकणी के मूल शब्द व उच्चारण साधारणत: पाये जाते हैं। कोंकणी का खास साहित्य भी आज तक इस बोली में पनप आया है।

* गोवा व कारवार–मंगलूर के ईसाइयों की बोली गोवा के हिन्दुओं की बोली के समान है; परन्तु इस बोली में पुर्तगाली भाषा के शब्द प्राय: पाये जाते हैं और ध्वनि उच्चावचन भी पुर्तगाली भाषा से प्रभावित हुआ है।

कारवार–मंगलूर व केरल के सारस्वतों की बोली कन्नड व मलयालम भाषाओं से काफ़ी प्रभावित हैं। इसलिए इस बोली में इन दोनों भाषाओं के शब्द, ध्वनि व उच्चारण काफ़ी मात्रा में पाये जाते हैं।

भाषा साहित्य की दृष्टि से कोंकणी की भिन्न भिन्न बोलियों में भेद पाना सहज है। परन्तु दक्षिण में मंगलूर–कोचीन कोंकणी बोलनेवाले मध्य की गोवा–कारवार कोंकणी या उत्तर की सावन्तवाडी कोंकणी समझने में कोई कठिनाई महसूस नहीं करते।

भारतीय आर्य परिवार की भाषायें ब्राह्मी से निकली हुई किसी न किसी लिपि में लिखी जाती हैं जो बहुत: नागरी है। कोंकणी भाषा की स्थिति तो अब तक इस से भिन्न रही है। एक प्रमाणिक लिपि के अभाव के कारण कोंकणी की ये प्रमुख बोलियाँ प्रादेशिक भाषाओं की लिपियों में अब तक लिखी जाती रहीं; जैसे कि गोवा के हिन्दुओं की कोंकणी नागरी, ईसाइयों की कोंकणी रोमन, कारवारी-मंगलूरी कोंकणी कन्नड व केरल (कोचीन) कोंकणी मलयालम लिपि में। इस भाषा में एक शब्द के भिन्न भिन्न ध्वनि-समूह पाना इसी के कारण है।

भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार भारतीय षाओं के विकास की ओर विशेष ध्यान दे रही है। सरकार के क्षा-विभाग की ओर से कोंकणी के विकास पर भी ध्यान दिया रहा है। सरकार ने देवनागरी लिपि को कोंकणी की सर्वमान्य पि भी मान ली है।

अब इस लिपि के द्वारा प्रामाणिक कोंकणी का प्रचार होगा— समें कोई सन्देह नहीं।

इस 'स्वयं शिक्षक' का उद्देश्य कोंकणी से अपरिचित भाषा- मियों को कोंकणी भाषा का सामान्य ज्ञान प्रदान करना है। ठकगण जितनी सुविधा से इस भाषा में ज्ञान प्राप्त करें, उसीमें तक की सफलता है। इस दृष्टिकोण से पाठकों से किसी भी झाव का स्वागत होगा।

—लेखक

कौंकणी वर्णमाला

स्वर

अ अ॑ आ इ ई उ ऊ ऋ

ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	ळ
श	ष	स	ह	

ii) उच्चारण की विशेषतायें

कोंकणी वर्णमाला के अक्षरों का उच्चारण नागरी वर्णमाला अक्षरों के समान होता है । तो भी ऐसी कुछ ध्वनियाँ हैं ो नागरी में नहीं हैं। कोंकणी सीखनेवालों को इन ध्वनियों पर ान देने की ज़रूरत है। इनका शुद्ध उच्चारण किसी कोंकणी ाननेवाले से ठीक ठीक सीखा जा सकता है। तो भी स्वप्रयत्न से ीखनेवालों केलिये कुछ सूचनायें यहाँ दी जाती हैं ।

1. कोंकणी ह्रस्व 'अ' का उच्चारण 'संवृत' है । इस ' का दीर्घ उच्चारण कोंकणी की अपनी विशेषता है । यह च्चारण दीर्घ 'आ' के उच्चारण से भिन्न है। यह 'संवृत दीर्घ' हता है। जैसे अंग्रेज़ी 'her' (हर) शब्द के 'e' का उच्चारण ाता है। जहाँ यह उच्चारण आता है वहाँ सुविधा केलिये अक्षर ऊपर '1' चिह्न देकर उसकी सूचना दी जायगी।

दा :- मणु —
चणो —
स —
नज —

मूल शब्दों के उपान्त्य 'अ' भी संवृत दीर्घ होता है ।

चड — व्हड

शेष सूचना :- कुछ बोलियों में इसका उच्चारण दीर्घ 'ओ' के समान हो जाता है। जैसे :- मोणु, चोणो

2. हिन्दी में 'ए' और 'ओ' का दीर्घ उच्चारण ही है। किन कोंकणी में इनका ह्रस्व उच्चारण भी रहता है। जब इन

स्वरों के बाद शब्द में संयुक्त अक्षर आता है तब इनका उच्चारण ह्रस्व हो जाता है।

जैसे :- गेल्लो — गेलो — गया
एत्ता — एता — आता है

3. स्वरों की अनुनासिकता इस भाषा की एक प्रमुख विशेषता है।

4. साधारण 'ल' के अलावा मराठी और अन्य दक्षिणी भाषाओं में एक और 'ल' का प्रयोग होता है। इसके लिये मराठी में 'ळ' चिह्न का प्रयोग होता है। कोंकणी में भी यह वर्तमान है।

जैसे :- काळो — काला
फळ — फल
कळता — मालूम
बाळ — बालक

उच्चारण के नियम :

1. अकारान्त शब्द के अन्त्य 'अ' का प्राय: उच्चारण नहीं होता, जैसे हिन्दी में।

उदा :- 'घर' का उच्चारण 'घर्' के समान होता है

सूचना :- लेकिन कोचीन कोंकणी में इस अन्त्य 'अ' का उच्चारण संवृत 'अ' के समान होता है।

2. तीन वर्णों के शब्दों में, अगर वे अकारान्त न हो, तो बीच के वर्ण के 'अ' का उच्चारण नहीं होता।

उदा :- दिवली — दिव्ली — दीपक
बावली — बाव्ली — गुडिया
मानगें — मान्गें — मगर (crocodile)

लेकिन निम्न-लिखित शब्द अपवाद है :-

दुदळि - इस शब्द में 'द' के 'अ' का उच्चारण संवृत दीर्घ होता है। जैसे :- दुदळि

3. तीनवर्णों के अकारान्त शब्दों के उपान्त्य वर्ण के 'अ' का उच्चारण होता है।

उदा :- माजर — बिल्ली
काप‍ड — कपडा

4. चार वर्णों के शब्दों में दूसरे अक्षर के 'अ' का उच्चारण नहीं होता।

उदा :- मणकट — मण्कट — कलई
समजता — सम्जता — समझता
पिकतलो — पिक्तलो — पकेगा
अंगवालें — अंग्वालें — कपडा

लेकिन निम्न लिखित शब्द इस नियम के अपवाद हैं।

धुंवरता — धुंवर्ता — धुंवा आता है
विसरता — विसर्ता — भूलता है

5. पांच अक्षरों के शब्द में दूसरे अक्षर में 'अ' हो तो उसका उच्चारण नहीं होता। तीसरे अक्षरमें 'अ' हो तो उसका उच्चारण होता है। शब्द 'अ' कारान्त हो तो उपान्त्य अक्षर के 'अ' का उच्चारण होता है। लेकिन, अगर शब्द आ, ई, ऊ, ए, या ओकारान्त हो तो उपान्त्य अक्षर के 'अ' स्वर का उच्चारण नहीं होता।

उदा:— लकलकप — लक्लकप — हिलना, चमकना
लिकलिकता — लिक्लिकता — चमकता है

iii अभ्यास

घर; तण; फळ; मन; ताक; ताका; माका; नाका; कीरु; मोरु; हांगा; थांगा; हस्ती; फूल; फूलां; गायि; दूद; लाडू; केळि, आवै; आवयि; आपै; आपयि; शिकैता; सिकैता; घोडो; गोरो; काळो; चेडो; चेलो; चेडूं; आँबो; भैणी; भयणि, भावु; सांजे; अन्न; अनवास; अपुरबाइ; इंगाळो

बरप, मळब, सकल, मानगें, कळता, कळना, पातळि, साळरि, सरपु, सरोपु, उलौप, उलवप, रडौप, रडवप, हसौप, हसवप, वाचवप, वाचौप, कौरव, बायल, कायलि, पावसु, कळसो, कोळसो, सकाळीं, दैत्याक, केळयांचो, घराच्या, तागेल्या, माथ्याक, फक्कत ।

घणघण, मणकट, घपघपु, आसवेल, उल्लौंचाक, बरौंचाक, आमगेलो, तागेलो, तांगेलो, भुरग्याक, म्हणटात,

घडघडप, बडबडप, लकलकप, नज, तं, णव्व, स, पणसु, जाणं, नेणं, व्हयि, न्हयि,

---

पाठ 1

आज्ञार्थ

उल्लौंक	– बोलना	सांगुंक	– कहना
वुंक	– आना	वचुंक	– जाना
ाडुंक	– लाना	व्हरुंक	– ले जाना
ैसुंक	– बैठना	उठुंक	– उठना
रुंक	– करना	धुउंक	– धोना
ीउंक	– पीना	खाउंक	– खाना
ाजि	– आज	परतून	– वापस
ालि	– कल (yesterday)	फायि, फाल्या	– कल (to-morrow)
रां	– परसों (day after to-morrow)	पयरि	– परसों (day before yesterday)
ायर	– बाहर	भित्तरि	– अन्दर
ोळू, ल्होवू, सन्त	– आहिस्ते	घारारि	– जल्दी
हडान	– ज़ोर से	नाका (एकवचन), नाकात (बहुवचन)	– मत, न
ांगा	– यहाँ	थयं, थांगा	– वहाँ
ाम	– काम	पुस्तक, बूकु	– पुस्तक
उदाक	– पानी	आनी	– और
ू (एक वचन)	– तू, तुम	तुमी	– आप
ो (पु.), ी (स्त्री.), ं (नपुं.)	– यह	हे (पु.), ह्यो (स्त्री.), हीं (नपुं.)	– ये

तो (पु.)	वह	ते (पु.)	वे
ती (स्त्री.)		त्यो (स्त्री.)	
तें (नपुं.)		तीं (नपुं.)	

क्रिया का साधारण रूप

धातु के साथ 'उंक' 'चाक' या 'पाक' जोड कर कोंकणी में क्रियाओं का साधारण रूप बनाया जाता है। जैसे :—

उल्लै	+	उंक	=	उल्लौंक	बोलना
उल्लै	+	चाक	=	उल्लैचाक	
उलै	+	पाक	=	उल्लैपाक	
हाड	+	उंक	=	हाडुंक	लाना
हाड	+	चाक	=	हाडचाक	
हाड	+	पाक	=	हाडपाक	
कर	+	उंक	=	करुंक	करना
कर	+	चाक	=	करचाक	
कर	+	पाक	=	करपाक	

उल्लै, हाड, कर — ये क्रिया के धातु रूप हैं।

आज्ञार्थ

एकवचन में आज्ञार्थ को प्रकट करने केलिये कोंकणी में क्रिया का धातुरूप ही प्रयुक्त होता है। लेकिन अगर धातु अकारन्त सकर्मक हो तो 'इ' जोड दिया जाता है।

सूचना: कोंकणी में इकारान्त का 'इ' कार इतना ह्रस्व होता है, कि उसका उच्चारण नहीं के बराबर होता है। इसलिये ये शब्द 'इ' कार छोड कर भी लिखे जाते हैं—जैसे आज, काल, धारार भित्तर।

जैसे :— उल्लै — बोलो बैस — बैठो

हाडि — लाओ करि — करो

• लेकिन निम्नलिखित क्रियाएँ अपवाद हैं ।

यो — आओ व्हर — ले जाओ

उट्टा — उठो सांग — कहो

बहुवचन में आज्ञार्थ को सूचित करने केलिये धातु के साथ 'आ', 'आत' या 'आति' जोड दिया जाता है, जो आ, ई, ऊ, ए और ऐ कारान्त धातुओं के साथ जोड देने से क्रम से 'या', 'यात' 'या' 'याति' हो जाता है ।

जैसे :— बैसा, बैसात, बैसाति* — बैठिये

करा, करात, कराति — कीजिये

खाया, खायात, खायाति — खाइये

पीया, पीयात, पीयाति — पीजिये

घूया, घूयात, घूयाति — घोइये

येया, येयात, येयाति — आइये

उल्लैया, उल्लैयात, उल्लैयाति — बोलिये

आज्ञार्थ में निषेध लाने केलिये धातु के साथ 'उं' लगाकर एकवचन में 'नाका' और बहुवचन में 'नाकात' का प्रयोग किया जाता है ।

जैसे :— करुंनाका — मत करो करुंनाकात — मत कीजिये

उल्लौंनाका — मत बोलो उल्लौंनाकात — मत बोलिये

पीउंनाका — मत पीओ पीउंनाकात — मत पीजिये

---

* कोचीन कोंकणी में यह प्रत्यय 'आयि' (आय) हो जाता है ।
जैसे :—'बैसायि', 'करायि', 'खायायि' आदि ।

वाक्य

आजि थांगा वच.	आज वहाँ जाओ।
परां हांगा यो.	परसों यहाँ आओ।
हें पुस्तक व्हर.	यह पुस्तक ले जाओ।
तें काम करुंनाका.	वह काम मत करो।
हें काम करि. (कर)	यह काम करो।
भायर बैस. (बयस)	बाहर बैठो।
भित्तरि यो.	अन्दर आओ।
हें काम धरारि करि.	यह काम जल्दी करो।
ल्हवू उल्लै.	आहिस्ते बोलो।
तें उदाक हांगा हाडुंनाका.	वह पानी यहाँ मत लाओ।
थांगा बैसात.	वहाँ बैठिये।
फायि परतून येयात.	कल वापस आइये।
हें उदाक पीउंनाकात.	यह पानी न पीजिये।
यो आनी बैस.	आओ और बैठो।
वच आनी तो बूकु हांगा हाडि.	जाओ और वह किताब यहाँ लाओ।

कोंकणी में अनुवाद क्रिजिये :—

कल आओ। आज मत जाइये। परसों जाइये। जल्दी वापस आइये। यह काम आहिस्ते करो। जल्दी मत बोलो। आज पानी मत लाओ। अन्दर आओ और बैठो। बाहर मत बैठो। वह पुस्तक यहाँ लाइये। यह काम आहिस्ते मत कीजिये।

ल्दी उठो। यह पुस्तक वहाँ ले जाओ और वह पुस्तक यहाँ
ाओ। वह पानी न पीजिये। यह पानी पीजिये।

पाठ 2

वर्तमानकाल

ांव	मैं	आमी	हम
ू	तू, तुम	तुमी	आप
ो, ती, तें	वह	ते, त्यो, तीं	वे
ेवुंक, काडुंक	लेना	चलुंक	चलना
बरौंक	लिखना	वाचुंक	पढना
शिकुंक	सीखना	जावुंक, आसुंक	होना
ीसु (दीस)	दिन	राति (रात)	रात
सकाळ	सुबह	सांज	शाम
सकाळिं	सुबह को	सांजे	शाम को
फान्त्यारि	सुबह, सबेरे	दनपार	दोपहर
आतां	अब	तेन्ना, तेदना	तब
केन्ना, केद्दाणा	कब	पण	लेकिन
कि, अथवा	या	खंय[1], खन्थंय[1]	कहाँ
कितें; इतें	क्या	कोण	कौन
न	कलम	तींत	स्याही
ागत	कागज़	चीटि	चिट्ठी

चेल्लो, चेडो	- लडका	चेल्ली, चेडुं	- लडकी
दूद	- दूध	मनीषु	- मनुष्य

वर्तमानकाल

क्रिया के धातु के साथ एकवचन में 'ता' और बहुवचन में 'तात' जोड कर कोंकणी में वर्तमानकाल रूप बनाया जाता है। उत्तमपुरुष एकवचन में 'तां' जोड दिया जाता है। लिंग के कारण क्रिया का रूपान्तर नहीं होता।

कोचीन कोंकणी में 'तात' के स्थान पर 'ताय' पाया जाता है। जैसे :—

उल्लैतात — उल्लैताय

1. उल्लौंक — बोलना

एकवचन		बहुवचन	
उ० हांव उल्लैतां	- मैं बोलता हूँ	आमी उल्लैतात	- हम बोलते हैं
म० तूं उल्लैता	- तू बोलता है / तुम बोलते हो	तुमी उल्लैतात	- आप बोलते हैं
अ० तो / ती / तें उल्लैता	वह बोलता है / वह बोलती है / वह बोलता है	ते / त्यो / तीं उल्लैतात	वे बोलते हैं / वे बोलती हैं / वे बोलते हैं

2. वचुंक — जाना

एकवचन		बहुवचन	
उ० हांव वतां	- मैं जाता हूँ	आमी वतात	- हम जाते हैं
म० तूं वता	- तू जाता हैं / तुम जाते हो	तुमी वतात	- आप जाते हैं

तो	वता	वह जाता है	ते	वतात	वे जाते हैं
।० ती		वह जाती है	त्यो		वे जाती हैं
तें		वह जाता है	तीं		वे जाते हैं

अगर धातु 'ई' या 'ऊ' कारान्त हो तो उसको ह्रस्व कर के ा प्रत्यय जोडे जाते हैं जैसे :— पो—पिता; घू — घुता

वर्तमान काल में निषेधार्थ सूचित करने के लिये प्रत्यय 'ता' ь स्थान पर 'ना' का प्रयोग होता है। जैसे :—

एकवचन		बहुवचन	
ांव उल्लैनां	- मैं नहीं बोलता	आमी उल्लैनात	- हम नहीं बोलते
ू उल्लैना	तू नहीं बोलता / तुम नहीं बोलते	तुमी उल्लैनात	- आप नहीं बोलते

तो	उल्लैना	बह नहीं बोलता	ते	उल्लैनात	वे नहीं बोलते
ती		वह नहीं बोलती	त्यो		वे नहीं बोलती
तें		वह नहीं बोलता	तीं		वे नहीं बोलते

लेकिन 'वच' धातु के निषेधार्थ रूप क्रम से 'बचनां'. 'वचना', ौर 'वचनात' हैं। और 'जा' धातु के निषेधार्थ रूप क्रम से जायनां', 'जायना', और 'जायनात' हैं।

आसुंक — होना

एकवचन		बहुवचन	
०० हांव आसा	- मैं हूँ	आमी आसात	- हम हैं
०० तूं आसा	- तू है, तुम हो	तुमी आसात	- आप हैं
०० तो, ती, तें आसा	- वह है	ते, त्यो, तीं आसात	- वे हैं

इस क्रिया का निषेधार्थ रूप निषेध सूचक शब्द 'ना' ही है ो बहुवचन में 'नात' हो जाता है। जैसे :—

एकवचन	बहुवचन
उ० हांव नां - मैं नहीं (हूँ)	आमी नात - हम नहीं (हैं)
म० तूं ना { तू नहीं (है) तुम नहीं (हो) }	तुमी नात - आप नहीं (हैं)
अ० तो / ती / तें } ना - वह नहीं (है)	ते / त्यो / तीं } नात - वे नहीं (हैं)

वाक्य

तूं कितें करता ?	तुम क्या करते हो ?
हांव पुस्तक वाचतां.	मैं किताब पढता हूँ ।
तो खंयंय आसा.	वह कहाँ है ?
तू आजि थांगा वता कि ना ?	तुम आज वहाँ जाते हो कि नहीं
गोपाळु उदक पिता.	गोपाल पानी पीता है ।
ते उदक पिनात.	वे पानी नहीं पीते ।
शारदा खंय आसा ?	शारदा कहाँ है ?
ती हांगा आसा.	वह यहाँ है ।
तो पेन घेता.	वह कलम लेता है ।
त्यो पुस्तक व्हरतात.	वे पुस्तक ले जाती हैं ।
सीता चीटि बरेयता.	सीता चिट्टी लिखती है ।
त्यो आजि हांगा येनात.	वे आज यहाँ नहीं आतीं ।
तुमी कितें खातात ?	आप क्या खाते हैं ?
ती कोंकणी शिकता.	वह कोंकणी सीखती है ।
आमी बिस्कुत खातात.	हम बिस्कट खाते हैं ।
चेली इतें करता ?	लडकी क्या करती है ?

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

तुम क्या करते हो? मैं किताब पढता हूँ। हम चिट्ठी लिखते हैं। वे कोंकणी सीखती हैं। वह काम नहीं करती। लडका दूध पीता है। लडकी पानी नहीं पीती। वह चाय पीती है। तुम अब कहाँ जाते हो? वे क्या लाते हैं? वे क्या करती हैं? तुम क्या बोलते हो? हम रोटी खाती हैं और चाय पीती हैं। तुम चाय पीओ और रोटी खाओ। आप यह पाठ न सीखिये। हम किताब पढते हैं, लेकिन वे नहीं पढते।

पाठ 3

वाक्य-रचना

तं[1]	- हूँ, हो, है, हैं	दवरुंक	- रखना
म्हय[1], होय	- हाँ	न्हंय, ना	- नहीं
कांय	- कुछ	कांय ना	- कुछ नहीं
दादलो	- पुरुष, आदमी	बायल	- स्त्री, औरत
जिनस	- चीज़	दामु, दुड्डु	- रुपया, पैसा
खाण	- खाना (संज्ञा)	जेवण	- भोजन
मेज	- मेज़	कदेल	- कुरसी
बांकु	- बेंच	आरमालि	- अलमारी

वाक्य-रचना

कोंकणी की वाक्य-रचना दूसरी भारतीय भाषावों की वाक्य-रचना के समान है। कोंकणी में अपूर्ण अकर्मक क्रिया 'तं'[1] (है) का प्रयोग नहीं होता।

जैसे :— तें उद्रक (तं). – वह पानी है ।

ती बायल (तं). – वह औरत है ।

लेकिन अस्तित्व बोधक "है" के स्थान पर कोंकणी में 'आसा' का प्रयोग होता है ।

जैसे :— उदक थांगा आसा. – पानी वहाँ है ।

चेलो खंयंय आसा ? – लडका कहाँ है ?

आमी हांगा आसात. – हम यहाँ हैं ।

निषेधार्थ 'न्हंय' और 'ना' का प्रयोग

क्रिया के निषेधार्थ में 'ना' और वस्तु या व्यक्ति के निषेधार्थ में 'न्हंय' का प्रयोग होता है ।

जैसे :— रामु हांगा ना – राम यहाँ नहीं है ।

तो रामु न्हंय – वह राम नहीं है ।

प्रश्नार्थक वाक्य

जिस वाक्य में प्रश्नवाचक शब्द नहीं है, उसमें वाक्य के अन्त में 'वे'* जोड कर प्रश्नार्थ सूचित किया जाता है । जैसे:—

रामु हांगा येतावे ?	क्या, राम यहाँ आता है ?
तो रामु वे ? (तो रामु?)	क्या, वह राम है ?
तूं हें काम करतावे कि ना ?	क्या, तुम यह काम करते हो कि नहीं ?
तूं वतावे ? (तूं वता?)	क्या तुम जाते हो ?

---

*गोवा की कोंकणी में यह रूप नहीं मिलता । शायद यह कोंकणी पर कन्नडी भाषा की वाक्य-रचना का प्रभाव होगा ।

वाक्य

हें कितें ?	यह क्या है ।
हें एक मेज.	यह एक मेज़ है ।
मेज खंय आसा ?	मेज़ कहाँ है ।
मेज हांगा ना.	मेज़ यहाँ नहीं है ।
मेज थांगा आसा.	मेज़ वहाँ है ।
तूं कोण ?	तुम कौन हो ।
हांव एक दादलो.	मैं एक आदमी हूँ ।
ती बायल खंय वता ?	वह औरत कहाँ जाती है ?
ती भायर वता.	बह बाहर जाती है ।
हें कदेल थांगा व्हर आनी तें मेज्ज हांगा हाडि.	यह कुरसी वहाँ ले जाओ और वह मेज़ यहाँ लाओ ।
आतां दीसु कि राति ?	क्या, अब दिन है या रात ?
तूं हें काम करता वे ?	क्या, तुम यह काम करते हो ?
ना, आजि हांव हें काम करना.	नहीं, आज मैं यह काम नहीं करता ।
तो बूकुवे ?	क्या, वह किताब है ?
न्हंय, तो बूकु न्हंय.	नहीं, वह किताब नहीं ।
व्हय, तो बूकु (तं)	हाँ, वह किताब है ।

कोंकणी में अनुवाद किजिये :—

वह क्या है ? वह कलम है । वह कौन है । वह आदमी है । वह औरत है । औरत कहाँ है ? औरत अन्दर है । वह अन्दर नहीं है । क्या वह कलम है ? नहीं वह पेन्सिल है ।

कागज़ और कलम यहाँ लाओ और एक खत लिखो। तुम कौन हो? मैं लडकी हूँ। लडकी कहाँ है? वह यहाँ नहीं हैं। वह किताब नहीं पढती। वह चिट्‌ठी पढती है। क्या आप कोंकणी सीखते हैं? हाँ, हम कोंकणी सीखते हैं। कागज लो और एक खत लिखो।

पाठ 4

भविष्यत काल और उस के भेद

राबुंक	- रहना, खडा होना, ठहरना	पावुंक	- पहुँचना
पेटोंक, धाडुंक	- भेजना	निदेवुंक	- सोना
लावुंक	- खिलाना	जेवुंक	-भोजन करना
वाट	- रास्ता	स्थायु	- जगह
खब्बर	- खबर	दिसानदीसु	- हर रोज़
सगट	- सब	सगळो	- सारा
बुधवन्तु	- समझदार	पिश्शो	- बे-समझ
फकत	- सिर्फ़	तुरन्त	- एक दम
वूणे, ऊणे	- कम	चड	- ज्यादा
कांय एक	- जो कुछ	आनी कांय	- और कुछ
सगटंय	- सब कोई	सग	- सब कुछ

भविष्यत काल

कोंकणी में भविष्यत काल के दो रूप हैं – निश्चित भविष्यत काल और अनिश्चित भविष्यत काल। इन दोनों के प्रयोग में वही फरक है जो अंग्रेजी के 'shall' और 'will' के प्रयोग में है।

...श्चित भविष्यत काल

धातु के साथ 'त' प्रत्यय जोडकर क्रिया का वर्तमान कालिक ...दन्त बनाया जाता है। इस कृदन्त के साथ उत्तम पुरुष पुल्लिग ...क वचन में 'लों', बहुवचन में 'ले', मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष ...कवचन में 'लो' और बहुवचन में 'ले' जोडकर कोंकणी में निश्चित ...विष्यत काल रूप बनाया जाता है। उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग ...कवचन में 'लीं', बहुवचन में 'ल्यो' और मध्यम पुरुष और अन्य ...रुष एकवचन में 'लीं' और बहुवचन में 'ल्यो'; और नपुंसकलिंग ...नों पुरुष, एकवचन में 'लें' और बहुवचन में 'लीं' जोड दिया ...ाता है।

पुल्लिग

एकवचन — 'ली' बहुवचन — 'ले'

उत्तम पुरुष एकवचन — 'लों'

स्त्रीलिंग

एकवचन — 'लो' बहुवचन — 'ल्यो'

उत्तमपुरुष एकवचन — 'लीं'

नपुंसकलिंग

एकवचन — 'लें' बहुवचन — 'लीं'

पुल्लिग

करुंक — करना

एकवचन	बहुवचन
हांव करतलों - मैं करूँगा	अमी करतले - हम करेंगे
तूं करतलो - { तू करेगा / तुम करोगे }	तुमी करतले - आप करेंगे
तो करतलो - वह करेगा	ते करतले - वे करेंगे

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
उ० हांव करतलीं - मैं करूँगी	अमी करतल्यो - हम करेंगी
म० तू करतली - { तू करेगी तुम करोगी	तुमी करतल्यो - आप करेंगी
अ० ती करतली - वह करेगी	त्यो करतल्यो - वे करेंगी

नपुंसकलिंग

एकवचन	बहुवचन
उ० हांव करतलें - मैं करूँगा	आमी करतलीं - हम करेंगे
म० तू करतलें - { तू करेगा तुम करोगे	तुमी करतलीं - आप करेंगे
अ० तें करतलें - वह करेगा	तीं करतलीं - वे करेंगे

'लों', 'लीं', 'लें' के स्थान पर 'नों', 'नीं', 'नें' प्रत्यय भी लगाये जाते हैं। जैसे :—

करतनों	—	करूँगा
करतनीं	—	करूँगी
करतनें	—	करूँगा (नपुं.)
करतनीं	—	करेंगे (नपुं.)

अनिश्चित भविष्यत काल

धातु के साथ उत्तम पुरुष एकवचन में 'ईन', बहुवचन में 'ऊं' मध्यमपुरुष एकवचन में 'शी', बहुवचन में 'शात' और अन्य पुरुष एकवचन में 'ईत' और बहुवचन में 'तीत' प्रत्यय लगाकर कोंकणी में अनिश्चित भविष्यत काल बनाया जाता है। क्रिया के रूप में लिंग भेद नहीं होता।

एकवचन		बहुवचन	
० हांव	- 'ईन'	आमी	- 'ऊं'
० तूं	- 'शी'	तुमी	- 'शात'
० तो, ती, तें	- ईत	ते, त्यो, तीं	- 'तीत'

1. करुंक — करना

एकवचन		बहुवचन	
० हांव करीन	- मैं करूँगा	आमी करूँ	- हम करेंगे
० तूं करशी	तू करेगा तुम करोगे	तुमी करशात	- आप करेंगे
० तो / ती / तें करीत	वह करेगा वह करेगी वह करेगा	ते / त्यो / तीं करतीत	वे करेंगे वे करेंगी वे करेंगे

2. वचुंक – जाना

एकवचन	बहुवचन
० वचन	वचूं
० वशी	वशात
० वचत	वतीत

3. उल्लौंक – बोलना

एकवचन	बहुवचन
० उल्लैन	उल्लोवूं
० उल्लैशी	उल्लैशात
० उल्लैत	उल्लैतीत

4. धूवुंक — धोना

	एकवचन	बहुवचन
उ०	धूयन, धूवीन	धूशात
म०	धूशी	धूशात
अ०	धूयत	धूतीत

5. लावुक — खिलाना

	एकवचन	बहुवचन
उ०	लायन	लावूं
म०	लायशी	लायशात
अ०	लायत	लायतीत

6. आसुंक — होना

	एकवचन	बहुवचन
उ०	आसन	आसूं
म०	आश्शी	आश्शात
अ०	आसत	आसतीत

7. जावुंक — होना

	एकवचन	बहुवचन
उ०	जायन	जावूं
म०	जाशी	जाशात
अ०	जायत	जातीत

8. दीवुंक — देना

	एकवचन	बहुवचन
उ०	दीन, दीयीन	दीवूं
म०	दीशी	दीशात
अ०	दीत, दीयन	दीतीत

9. घेवुंक — लेना

	एकवचन	बहुवचन
उ०	घेन, घेयीन	घेवूं
म०	घेशी	घेशात
अ०	घेत, घेयीत	घेतीत

निषेधार्थ रूप

दोनों प्रकार के भविष्यत कालों का निषेधार्थ रूप एक ही समान बनता है। धातु के साथ 'ना' जोडकर यह रूप बनाया जाता है; लेकिन 'ना' जोड देने के पहले, धातु आकारान्त हो तो 'ची' और धातु आकारान्त न हो तो 'वंची' जोड दिया जाता है। क्रिया का यह निषेधार्थ रूप हमेशा अन्य पुरुष एकवचन में रहता है।

उदा :— करचीना — न करेगा
हाडचीना — न लायेगा
जावंचीना — न होगा
दिवंचीना — न देगा
धुवंचीना — न धोयेगा
घेवंचीना — न लेगा
येवंचीना — न आयेगा
उल्लौंचीना — न बोलेगा

जिस निषेधार्थ रूप में 'वंचीना' रहता हैं, उस में से 'ची' छोडकर बाकी का प्रयोग करके भी यह निषेधार्थ रूप बनाया जा सकता है। जैसे :—

जावंना, दिवंना, धुवंना, घेवंना
उल्लौंना, लावंना, येवंना

इस क्रिया के कर्ता के साथ हमेशा एकवचन में 'न' और बहुवचन में 'नी' प्रत्यय जोड दिये जाते हैं। जैसे :—

रामान आजि थांगा वचीना – राम आज वहां नहीं जायगा।

चेल्यानी (चेले+नी) आज खाण खावंचीना	लडके आज खाना नहीं खायेंगे।

लेकिन 'आमी' और 'तुमी' को छोडकर हांव, तूं, आपुण (आपुण-निजवाचक) और कोण के साथ 'एं' प्रत्यय जोड दिया जाता है और तो, ती, तें; हो, ही, हें; जो, जी, जें (जो) – इन के साथ 'णें' प्रत्यय जोड दिया जाता है।

जैसे :– हांवें, तूवें (तुवें), आपणें, कोणें और
ताणें, तिणें, हाणें, हिणें, जाणें, जिणें—जिनका रूप बहुवचन में क्रमशः तांणी, हांणी और जांणी हो जाता है।

वाक्य

तूं फल्या थांगा आसतलोवे ?	क्या, तुम कल वहाँ होगे ?
तो हांगा केन्ना येतलो ?	वह यहाँ कब आयेगा ?
ती आतां वतली.	वह अब जायगी।
हांव भित्तरि येवूंवे ?	क्या, मैं अन्दर आऊँ ?
तूं चीटि केन्ना बरेयतलो ?	तुम चिट्ठी कब लिखोगे ?
आमी फायी सकाळि वचीना.	हम कल सबेरे नहीं जायेंगे।
ती कितें करतली ?	वह क्या करेगी ?
उदक कोण हडतले ?	पानी कौन लायेगा ?
तुमी कितें पितले ?	आप क्या पीयेंगे ?
रामान आज कांय उल्लौंचीना.	राम आज कुछ नहीं बोलेगा।
तांणी भायर बैसचीना	वे बाहर नहीं बैठेंगे ?
आमी वचूंवे ?	क्या, हम जायें ?
हांव तें काम करुंवे ?	क्या, मैं वह काम करूँ ?

हांगा खंय राबतले ?	वे यहाँ कहाँ ठहरेंगे ?
आजि राति केन्ना निदतलो ?	तुम आज रात कब सोओगे ?
वें आजि सांजे थांगा पावंचीना.	मैं आज शाम वहाँ नहीं पहुँचूँगा।
गी चाय पिवंचीना.	ये चाय नहीं पीयेंगे।
गें खाण खावंचीना.	वह खाना नहीं खायेगा।
गें कोंकणी शिकचीना.	वह कोंकणी नहीं सीखेगी।
गें आजि दनपारां थांगा वचीना.	यह आज दोपहर वहाँ नहीं जायेगी।

कणी में अनुवाद कीजिये :—

मैं अब जाऊँगा। तुम कब आओगे। वह कब किताब गी ? तुम क्या लाओगे ? क्या तुम पानी पीओगे ? वह चाय ों पीयेगी। वह दूध पीयेगी। वे कल किताब नहीं लायेंगे। आज शामको वहां नहीं जाऊँगी। मैं अन्दर नहीं बैठूँगा। हम दर आयें ? तुम अब क्या करोगे ? वे कल पानी लायेंगे। वह चिट्ठी नहीं भेजेगा। वह आदमी कल शाम को यहाँ पहुँचेगा। चिट्ठी कब लिखोगे ? मैं शाम को नहीं सोवूँगा। हम कहाँ रेंगे ? तुम कब भोजन करोगे ? वे आज रात यहाँ नहीं पहुँचेंगे।

पाठ 5

भूतकाल और उसके भेद

गेंय	- कोई	तण	- घास
डी	- लकडी, छडी	राकूड	- लकडी (fuel)
. खोंपी	- घर, झोंपडी	बोब	- शोर
	- घी	लोणी	- मक्खन

ताक	- छाछ	धयं, मेणांय	- दही
तोपी	- टोपी	खुशालि, तमाशा	- तमाशा
मारुंक	- मारना	वीकुंक	- बेचना
कित्याक, इत्याक	- क्यों	कित्याक म्हळयारि	- क्योंकि
देकून	- इसलिये	म्हळयार	- याने, अर्थात
		म्हणु	- कि that (conj.)
आम्बो	- आम	चींच	- इमली

भूतकाल

क्रिया के भूतकालिक कृदन्त से कर्ता के पुरुष-लिंग-वचन के प्रत्यय जोडकर कोंकणी में भूतकाल बनाया जाता है। धातु से 'ल' जोडने से भूतकालिक कृदन्त रूप मिलता है। जैसे :—

धातु	प्रत्यय	भूतकालिक कृदन्त
आस	ल	आसल
उल्लै	ल	उल्लैल
वाच	ल	वाचल

लेकिन निम्न लिखित धातु इस नियम का पालन नहीं करते।

धातु	भूतकालिक कृदन्त
कर	केल
मर	मेल
वच	गेल
यो	आयल
घे	घेतल
म्हण	म्हळ

तकाल के चार भेद हैं:— सामान्य भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, ासन्न भूतकाल और पूर्ण भूतकाल—इनके रूप और अर्थ नीचे दये जाते हैं।

1. सामान्य भूतकाल

आसुंक – होना

पुल्लिग

एकवचन	बहुवचन
० हांव आसलों - मैं था	आमी आसले - हम थे
० तूं आसलो - तू था, तुम थे	तुमी आसले - आप थे
० तो आसलो - वह था	ते आसले - वे थे

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
० हांव आसलीं - मैं थी	आमी आसल्यो - हम थीं
० तूं आसली - तू थी, तुम थी	तुमी आसल्यो - आप थीं
० ती आसली - वह थी	त्यो आसल्यो - वे थीं

नपुंसकलिंग

एकवचन	बहुवचन
० हांव आसलें - मै था	आमी आसलीं - हम थे
० तूं आसलें - तू था, तुम थे	तुमी आसलीं - आप थे
० तें आसलें - वह था	तीं आसलीं - वे थे

उल्लौंक - बोलना

पुल्लिग

एकवचन	बहुवचन
० हांव उल्लैलों - मैं बोला	आमी उल्लैले - हम बोले
० तूं उल्लैलो - तू बोला, तुम बोले	तुमी उल्लैले - आप बोले
० तो उल्लैलो - वह बोला	ते उल्लैले - वे बोले

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
उ० हांव उल्लैलीं - मैं बोली	आमी उल्लैल्यो - हम बोलीं
म० तूं उल्लैलीं - तू बोली, तुम बोली	तुमी उल्लैल्यो - आप बोलीं
अ० ती उल्लैली - वह बोली	त्यो उल्लैल्यो - वे बोलीं

नपुंसकलिंग

एकवचन	बहुवचन
उ० हांव उल्लैलें - मैं बोला	आमी उल्लैलीं - हम बोले
म० तूं उल्लैलें - तू बोला, तुम बोले	तुमी उल्लैलीं - आप बोले
अ० तें उल्लैलें - वह बोला	तीं उल्लैलीं - वे बोले

निषेधार्थ रूप

इस काल में निषेधार्थ सूचित करने केलिये क्रिया के साथ एक वचन में 'ना' और बहुवचन में 'नात' जोड दिया जाता है। लेकिन 'आस' धातु का निषेधार्थ रूप बनाने के लिये ये प्रत्यय क्रिया के आदि में ही प्रयुक्त होते हैं। उदा :—

उल्लौंक – बोलना

एकवचन	बहुवचन
उ० हांव उल्लैलोंना-मैं नहीं बोला	आमी उल्लैलेनात - हम नहीं बोले
म० तूं उल्लैलोना { तू नहीं बोला / तुम नहीं बोले	तुमी उल्लैलेनात - आप नहीं बोले
तो उल्लैलोना - वह नहीं बोला	ते उल्लैलेनात - वे नहीं बोले
अ० ती उल्लैलीना - वह नहीं बोली	त्यो उल्लैलीनात - वे नहीं बोले
तें उल्लैलेंना - वह नहीं बोला	तीं उल्लैलींनात - वे नहीं बोले

इसी तरह स्त्रीलिंग और नपुंसलिंग के उत्तम व मध्यम पुरुष के क्रियारूपों के साथ एकवचन में 'ना' और बहुवचन मैं 'नात' जोडकर इस काल के निषेधार्थ रूप बनाये जा सकते हैं।

आसुंक – होना

	एकवचन		बहुवचन
उ०	हांव नासलों - मैं नहीं था.		आमी नातासले - हम नहीं थे।
म०	तूं नासलो - { तू नहीं था, तुम नहीं थे		तुमी नातासले - आप नहीं थे
	तो नासलो - वह नहीं था		ते नातासले - वे नहीं थे
अ०	ती नासली - वह नहीं थी		त्यो नातासल्यो - वे नहीं थीं
	तें नासलें - वह नहीं था		तीं नातासलीं - वे नहीं थे
	(ना+आसलो=नासलो);		(नात+आसले=नातासले)

एक और प्रकार से भी भूतकाल का निषेधार्थ रूप बनाया जाता है। वर्तमानकालिक कृदन्त के 'त' के स्थान पर 'नि' या 'ने' (एकवचन में) और 'नेति' (नेत) (बहुवचन में) का प्रयोग करके भी यह निषेधार्थ रूप बनाया जाता है। लेकिन इसका प्रयोग बहुत कम है। इस में लिंग या पुरुष भेद नहीं है। उदा:

एकवचन	बहुवचन
उल्लैनि या उल्लैने - { नहीं बोला, नहीं बोली	उल्लैनेति - { नहीं बोले, नहीं बोलीं

2. अपूर्ण भूतकाल

धातु के वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ 'आ' लगाकर उसके परे भूतकालिक कृदन्त का प्रत्यय 'ल' जोडकर कोंकणी में क्रिया का अपूर्ण भूतकाल रूप बनाया जाता हैं जो पुरुष, लिंग, वचन में कर्ता से अन्वित होता है।

धावुंक — दौडना

पुल्लिग

एकवचन	बहुवचन
उ० हांव धांवतालों - मैं दौडता था	आमी धांवताले - हम दौडते थे
म० तूं धांवतालो - {तू दौडता था / तुम दौडते थे}	तुमी धांवताले - आप दौडते थे
अ० तो धांवतालो - वह दौडता था	ते धांवताले - वे दौडते थे

स्त्रीलिग

एकवचन	बहुबचन
उ० हांव धांवतालीं - मैं दौडती थी	आमी धांवताल्यो-हम दौडती थीं
म० तूं धांवताली - {तू दौडती थी / तुम दौडती थीं}	तुमी धांवताल्यो-आप दौडती थीं
अ० ती धांवताली - वह दौडती थी	त्यो धांवताल्यो -वे दौडती थीं

नपुंसकलिग

एकवचन	बहुवचन
उ० हांव धांवतालें - मैं दौडता था	आमी धांवतालीं - हम दौडते थे
म० तूं धांवतालें - {तू दौडता था / तुम दौडते थे}	तुमी धांवतालीं - आप दौडते थे
अ० तें धांवतलें - वह दौडता था	तीं धांवतालीं - वे दौडते थे

ऊपर बनाये गये उदाहरणों के 'ता' के स्थान पर 'नास' लगाकर अपूर्ण भूतकाल का निषेधार्थ रूप बनाया जाता है।

निषेधार्थ रूप

धांवुक — दौडना

एकवचन		बहुवचन	
उ० हांव धांवनासलों	- मैं नहीं दौडता था	आमी धांबनासले	- हम नहीं दौडते थे
म० तूं धांवनासलो -	तू नहीं दौडता था / तुम नहीं दौडते थे	तुमी धांवनासले	- आप नहीं दौडते थे
तो धांवनासलो	- वह नहीं दौडता था	ते धांवनासले	- वे नहीं दौडते थे
अ० ती धांवनासली	- वह नहीं दौडती थी	त्यो धांवनासल्यो	- वे नहीं दौडती थीं
तें धांवनासलें	- वह नहीं दौडता था	तीं धांवनासलीं	- वे नहीं दौडते थे

3. आसन्न भूतकाल

भूतकालिक कृदन्त के साथ निम्नलिखित पुरुष, लिंग और वचन के प्रत्यय जोडकर आसन्न भूतकाल रूप बनाया जाता है।

	एकवचन			बहुवचन		
	पु.	स्त्री.	नपुं.	पु.	स्त्री.	नपुं
उ०	आं	यां	आं	आंत (आंव)	यांत (यांव)	यांत (यांव)
म०	आ	या	आं	आत	यात	यांत
अ०	आ	या	आं	आत	यात	यांत

उल्लौंक - बोलना

पुंल्लिग

एकवचन		बहुवचन	
उ० हांव उल्लैलां	मैं बोला हूँ	आमी उल्लैल्यांत	हम बोले हैं
म० तूं उल्लैला	तू बोला है तुम बोले हो	तुमी उल्लैल्यात	आप बोले हैं
अ० तो उल्लैला	वह बोला है	ते उल्लैल्यात	वे बोले हैं

स्त्रीलिंग

एकवचन		बहुवचन	
उ० हांव उल्लैल्यां	मैं बोली हूँ	आमी उल्लैल्यांत	हम बोली हैं
म० तूं उल्लैल्या	तू बोली है तुम बोली हो	तुमी उल्लैल्यात	आप बोली हैं
अ० ती उल्लैल्या	वह बोली है	त्यो उल्लैल्यात	वे बोली हैं

नपुंसकलिंग

एकवचन		बहुवचन	
उ० हांव उल्लैलां	मैं बोला हूँ	आमी उल्लैल्यांत	हम बोले हैं
म० तूं उल्लैलां	तू बोला है तुम बोले हो	तुमी उल्लैल्यांत	आप बोले हैं
अ० तें उल्लैलां	वह बोला है	तीं उल्लैल्यांत	वे बोले हैं

4. पूर्ण भूतकाल

भूतकालिक कृदन्त से और एक 'ल' जोडकर उससे परे कर्ता के पुरुष, लिंग और वचन के प्रत्यय लगाकर क्रिया का पूर्ण भूतकाल रूप बनाया जाता है। ये दोनों 'ल' संयुक्ताक्षर के रूप में भी लिखे जाते हैं।

ा :– यपुरुष वचन	तो उल्लैललो	(उल्लैल्लो)	वह बोला था	(पु.)
	ती उल्लैलली	(उल्लैल्ली)	वह बोली थी	(स्त्री.)
	तें उल्लैललें	(उल्लैल्लें)	वह बोला था	(नपुं.)
यपुरुष वचन	ते उल्लैलले	(उल्लैल्ले)	वे बोले थे	(पु.)
	त्यो उल्लैलल्यो	(उल्लैल्ल्यो)	वे बोली थीं	(स्त्री.)
	तीं उल्लैललीं	(उल्लैल्लीं)	वे बोले थे	(नपुं.)

ल्लौंक – बोलना

पुल्लिंग

एकवचन	बहुवचन
हांव उल्लैललों - मैं बोला था	आमी उल्लैलले - हम बोले थे
तूं उल्लैललो - तू बोला था / तुम बोले थे	तुमी उल्लैलले - आप बोले थे
तो उल्लैललो - वह बोला था	ते उल्लैलले - वे बोले थे

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
हांव उल्लैललीं - मैं बोली थी	आमी उल्लैलल्यो - हम बोली थीं
तूं उल्लैलली - तू बोली थी / तुम बोली थी	तुमी उल्लैलल्यो - आप बोली थीं
ती उल्लैलली - वह बोली थी	त्यो उल्लैलल्यो - वे बोली थीं

नपुंसकलिंग

एकवचन	बहुवचन
हांव उल्लैललें - मै बोला था	आमी उल्लैललीं - हम बोले थे
तूं उल्लैललें - तू बोला था, / तुम बोले थे	तुमी उल्लैललीं - आप बोले थे
तें उल्लैललें - वह बोला था	तीं उल्लैललीं - वे बोले थे

निषेधार्थ रूप

जैसे सामान्य भूतकाल क्रिया के निषेधार्थ रूप बनाये जाते हैं, वैसे क्रिया के साथ एकवचन में 'ना' और बहुवचन में 'नात' जोडकर पूर्ण भूतकाल के निषेधार्थ रूप बनाये जाते हैं। जैसे :—

तो उल्लैललोना — वह नहीं बोला था
ते उल्लैललेनात — वे नहीं बोले थे
ती उल्लैललीना — वह नहीं बोली थी
त्यो उल्लैलल्योनात— वे नहीं बोली थीं
तें उल्लैललेंना — वह नहीं बोला था (नपुं.)
तीं उल्लैललींनात — वे नहीं बोले थे (नपुं.)

लेकिन 'आस' धातु का पूर्ण भूतकाल-निषेधार्थ रूप बनाने के लिये 'ना' और 'नात' क्रिया के पूर्व जोड दिये जाते हैं। जैसे :—

ना +आसललो > नासललो
नात+आसलले > नातासलले

पूर्ण भूतकालिक क्रिया का रूप अन्यपुरुष में विशेषण के समान प्रयुक्त होता है।

जैसे :— पिकल्लो आम्बो	—	पका आम	(पु. एकवचन)
पिकल्ले आम्बे	—	पके आम	(पु. बहुवचन)
पिकल्ली चींच	—	पकी इमली	(स्त्री. एकवचन)
पिकल्ल्यो चींचो	—	पकी इमलियां	(स्त्री. बहुवचन)
पिकल्लें पेर	—	पका अमरूद	(नपुं. एकवचन)
पिकल्लीं पेरां	—	पके अमरूद	(नपुं. बहुवचन)

वाक्य

तूं थांगा कितें करता?	तुम वहां क्या करते हो?
हांव पुस्तक वाचितां,	मैं पुस्तक पढता हूँ।

इतें खाता ?	वह क्या खाता है ?
लाडू खाता.	वह लड्डू खाता है ।
कितें करतात ?	वे क्या करती हैं ?
कांय क़रनात.	वे कुछ नहीं करतीं ।
फाल्या सांजे खंय वतली ?	वह कल शाम को कहाँ जायगी ?
आज कांय पिवंचीना.	मैं आज कुछ नहीं पीऊँगा ।
शरबत पितलो.	वह शरबत पीयेगा ।
हांगा केन्ना पावलो ?	तुम यहाँ कब पहुँचे ?
पयरि साकाळि हांगा आयलो.	वह परसों सबेरे यहाँ आया ।
आज खंय गेल्या ?	वह आज कहाँ गयी है ?
शिकुंक आयलां.	मैं सीखने आया हूँ ।
आतां जेवला.	राम ने अब भोजन किया है ।
कोंकणी पुस्तक वाचतालें.	वह कोंकणी पुस्तक पढता था ।
हिन्दी बरेयतालो.	वह हिन्दी लिखता था ।
कालि सांजे कितें करतालो ?	तुम कल शाम क्या करते थे ?
हांगा केदनां आयललो ?	वह यहाँ कब आया था ?
कालि राति आयललो.	वह कल रात आया था ?
पिकल्लो आम्बो गोडु आसा.	वह पका आम मीठा है ।
पिकल्ली चींच गोडि न्हंय.	वह पकी इमली मीठी नहीं ।
ान उल्लैनाकात, ल्होवू उल्लैयात.	ज़ोर से मत बोलिये, आहिस्ते बोलिये ।
ल हांगा आयललो दादलो आज मेल्लो.	कल यहाँ आया आदमी आज मर गया ।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

परसों एक आदमी यहाँ आया था। वह एक पत्र लाया था क्या, आप अब आये हैं? कल तुम वहाँ क्यों नहीं गये? क्योंकि वह वहाँ नहीं था। वह आदमी बेसमझ है। कल रात तुम यह क्यों नहीं सोये? आज वह आदमी कहाँ चला गया? क्या, तु कल वहाँ गये थे? तुम कहाँ रहते थे? हम यहाँ नहीं रहते थे आज वहाँ कुछ तमाशा होगा। कल वहाँ कुछ नहीं था। वह लडकी कोंकणी सीखती थी। वह लडका चिट्ठी लिखता था वह आदमी हिन्दी पढ़ता था। कल यहाँ आया आदमी आज कहाँ चला गया? वह लडका यहाँ क्यों आता था? वह औरत कल वहाँ क्यों आयी थी? वह लडकी कहाँ गयी थी?

पाठ 6

संभाव्य भविष्यत काल

पडुंक	- गिरना, लेटना	खेलुंक	- खेलना
धरुंक	- पकडना	आयकुंक	- सुनना
आपौंक, उलदुंक	- बुलाना	मरुंक	- मरना
अशशी	- ऐसे	कशशी	- कैसे
तशशी	- वैसे	जशशी	- जैसे
तय्यार	- तय्यार	साफ	- साफ़
मांस	- मांस	मासळि, नुश्तें	- मछली
भाज्जी	- भाजी	कायरें, उत्तर	- बात

दनांय	- हमेशा	एद्दोळु	- अब तक
त्रु, दोस्त	- दोस्त	शत्रु	- शत्रु
ांनु	- भाई (बडा)	भाउ	- भाई (छोटा)
ाका	- बहन (बडी)	भयणि	- बहन (छोटी)
ावय, मांय, आमा	माँ	बापा, बाप	- बाप
ावय–बाप ांय–बाप	माँ-बाप	चेरडूं, भुरगें	- बच्चा (नपुं.)
ोवु. बामूणु	- पति	धूव	- पुत्री
तु	- पुत्र	आयि, आज्जी	- दादी
ाबु, आज्जो	- दादा	नाति	- पौत्री
ातु	- पौत्र	मांयि	- सास
ांवुं	- ससुर	भाच्चि	- भांजी
ाचो	- भांजा	पोणति	- प्रपौत्री
ोणतु	- प्रपौत्र	प्रश्नु	- सवाल
ाप	- जवाब	गोडु	- मीठा

भाव्य भविष्यत काल

क्रिया के द्वारा अनुमति, इच्छा और सन्देह के भावों को प्रकट रने के लिये संभाव्य भविष्यत काल का प्रयोग होता है। धातु साथ 'एत' प्रत्यय जोडकर कोंकणी में संभाव्य भविष्यत काल नाया जाता है। लिंग वचन के अनुसार इसके रूपों में अन्तर हीं पडता। जैसे :—

कर + एत = करयेत — करे
वच + एत = वचेत — जाये
खा + एत = खावयेत — खाये

इस काल की क्रिया के कर्ता के साथ 'न', 'नी' जोड दिया जाता है। जैसे :—

रामान हें काम करयेत. – राम यह काम करे।
ताणें आजि येवयेत. – वह आज़ आये।

क्रिया के साधारण रूप के साथ 'पूरो' (काफी, बस) शब्द जोडकर भी इस काल का भाव निकाला जाता है। जैसे :—

तो हें पुस्तक आजि वाचुंक पूरो. – वह पुस्तक आज पढे।
ते आजि सांजे थांगा वचाक पूरोत – वे आज शाम वहाँ जायें।

निम्नलिखित प्रकार से भी संभाव्य भविष्यत काल बनाया जाता है। इससे अधिकतया अनुमति देने या लेने का और इच्छा प्रकट करने का भाव निकलता है।

करुंक – करना

	एकवचन	बहुवचन
उ.	हांव करूं (कर+ऊं)- मैं करूं	आमी करूं (कर+ऊं) -हम करें
म.	तूं करि (कर+इ) -तू कर, तुम करो	तुमी करात (कर+आत) - आप करें
अ.	तो / ती / तें करो (कर+ओ)-वह करे	ते / त्यो / तीं करोत (कर+ओत) वे करें

आज्ञार्थ का निषेधार्थ रूप ही इसका भी निषेधार्थ रूप है

वाक्य

आमी हें पुस्तक वाचूंवे ?	क्या, हम यह पुस्तक पढें ?
आमी तें काम करूंवे ?	क्या, हम वह काम करें ?
हांव भित्तरि येवूंवे ?	क्या, मैं भीतर आऊँ ?

थांगा वचूं कि हांगा राबूं ?	मैं वहाँ जाऊँ या यहाँ रहूँ ?
फाल्या थांगा वचेत. फाल्या थांगा वचो.	वह कल वहाँ जाये ।
ान हें उदक पिवयेत.	कृष्ण यह पानी पीये ।
ीं परां हांगा येवयेत.	वे परसों यहाँ आयें ।
कितें करयेत ?	मैं क्या करूँ ?
बरें कोरो. (करो)	ईश्वर भला करे ।
ातां थंय बैस.	तुम अब वहाँ बैठो ।
ीं कोंकणी शिकयेत.	वे कोंकणी सीखें ।
आज भायर वचाक पूरो. (वचापूरो)	वह आज बाहर जाये ।
भित्तरि येवोत आनी हांगा बैसोत.	वे अन्दर आयें और यहाँ बैठें ।
हें काम करो.	वह यह काम करे । (अनुमति)
हें उदक पीवूंवे ?	क्या, मैं यह पानी पीऊँ ? (अनुमति)
हांगा राबोवे ?	क्या, वह यहाँ रहे ?
काडूंवे ?	किताब लूं ?
आजि हांगा येंवचाक पूरो (येंवचा पूरो)	वह आज यहाँ आये ।
फायि मरुंक पूरो.	वह कल मरे ।

णी में अनुवाद कीजिये :—

मैं अन्दर आऊँ ? हम बोलें ? अब राम बाहर जाये । वह काम कैसे करेगा ? मैं पत्र कैसे लिखूं ? सब लोग कोंकणी ें । आज वे वहाँ न जायें । बे पानी न पीयें । हम कल जायें । लडका वहाँ खडा रहे । वह क्या करे ? तुम अब

वहाँ बैठो। ईश्वर भला करे? आप किताब वहाँ रखें। वे आज शाम को खेलें। हम कल वहाँ चलें? मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? हम यह काम कैसे करें? वह अन्दर आये और वह किताब पढे।

पाठ 7

पूर्वकालिक कृदन्त

वाजूंक	- बजना, बजाना	आतांय	- अब तक
एक वर	- एक बजा	दोनि वरां	- दो बजे
वरारि	- बजे (O' clock)	दोनि वरांरि	- दो बजे
गीन्तु	- गीत	म्हणुंक	- कहना, गाना
म्हण्णि	- गायन, कहावत	वासूरं, पाड्डूक	- बछडा
गायि	- गाय	पाड्डो	- बैल
कोल्लो	- सियार	कीरु	- तोता
मोरु	- मोर	मूयि	- चींटी
कोंबो	- मुर्गा	कुंकडि	- मुर्गी
कुंकड (नपुं.)	- मुर्गा या मुर्गी	पील	- जानवर या चिडिया का बच्चा
सूणें	- कुत्ता	बुक्को	- बिलाब
कायलो	- कौआ	बोक्कडि	- बकरी
भीक	- भीख	भूक	- भूख
बाबु	- बच्चा	बायि	- बच्ची
मातें	- सिर	केसु	- बाल

	- कान	दोळो	- आँख
	- नाक	जीब	- जीभ
	- हाथ	पायु	- पैर
	- उँगली	उंगोटो	- अंगूठा
ल	- पाँव	नंकूट	- नाखून

ालिक कृदन्त

धातु के अन्त में 'ऊनु' (ऊन) प्रत्यय लगाकर क्रिया का
ालिक कृदन्त बनाया जाता है।

वच+ऊनु=वचूनु—जाकर; कर+ऊनु=करूनु—करके

आ, ई, ऊ, ए और ऐ कारान्त धातु के अन्त में 'ऊनु' लगने
'वनु' बन जाता है। जैसे :—

खा + ऊनु = खावनु		खाकर
पी + ऊनु = पीवनु		पीकर
धू + ऊनु = धूवनु		धोकर
घे + ऊनु = घेवनु		लेकर
उल्लै + ऊनु = उल्लोवनु (उल्लौनु)		बोलकर

अगर धातु के अन्त में 'व' आये, तो यह 'ऊनु' 'नु' बन
ा हैं। जैसे :—

जेव + ऊनु = जेवनु	—	भोजन कर के
धांव + ऊनु = धांवनु	—	दौडकर

अगर धातु के अन्त में 'य' हो तो 'ऊनु' बदलकर 'वनु'
से पहले 'य' लुप्त हो जाता है। जैसे :–

लाय + ऊनु = लावनु	—	खिलाकर

जब दो क्रियाओं का एक ही सामान्य कर्ता रहता है, और दूसरी क्रिया पहली क्रिया के बाद ही होती है और उस पर निर्भर रहती है, तब पहली क्रिया के पूर्वकालिक कृदन्त रूप का प्रयोग होता है।

येवनु बैस. — आकर बैठो।
खावनु वच. — खाकर जाओ।
पुस्तक काडूनु (काणु) वाचि. — पुस्तक लेकर पढो।

धातु के साथ 'नातिल्लें' जोडकर इस क्रिया का निषेधार्थ रूप बनाया जाता है। जैसे :-

खा + नातिल्लें = खानातिल्ले (खावनातिल्लें, खायनातिल्लें) } न खाकर (खाये बिना)
कर + नातिल्लें = करनातिल्लें न करके, (किये बिना)
तो चाय पीनातिल्लें गेल्लो — वह चाय पिये बिना चला गया।

वाक्य

थांगा वचून बैस.	वहाँ जाकर बैठो।
पुस्तक काडून (काणु) वाचि.	पुस्तक लेकर पढो।
हांव खाण खावनु चाय पितलों.	मैं खाना खाकर चाय पीवूँगा।
तूं थांगा वचून कितें करतलो ?	तुम वहाँ जाकर क्या करोगे ?
आमी पुस्तक हाडूनु (हाणु) वाचतले.	हम किताब लाकर पढेंगे।
पेन काडूनु (काणु) एक चीटि बरेयात.	कलम लेकर एक चिट्ठी लिखिये।
तो येवनु थांगा बैसलो.	वह आकर वहां बैठा।
शब्दु आयकूनु ते धावले.	आवाज़ सुनकर वे दौडे।
कोंकणी शीकूनु तुमी कितें करतले?	कोकणी पढकर आप क्या करेंगे।
तुमी थांगा कालि गेलेलेवे ?	क्या, आप कल वहाँ गये थे ?

गा कोण आशिलें ?	वहाँ कौन था ?
ट कितें करतात ?	सब क्या करते हैं ?
कांय सांगना.	वह कुछ नहीं बोलता ।
ज थांगा खुशालि आसतली.	आज वहाँ तमाशा होगा ।
गा कालि कितें जालें ?	वहाँ कल क्या हुआ ?
य जालेना.	कुछ नहीं हुआ ।
लि थांगा कोणेय नासिलेले.	कल वहाँ कोई नहीं था ।
हांगा खंय राबता ?	वह यहाँ कहाँ रहता है ?
नि वरां वाजूनु पांच मिनट जालीं.	दो बजकर पाँच मिनट हुए ।
हांगा येवुनु गेलो.	वह यहाँ आकर गया ।

ंकणी में अनुवाद कीजिये :—

क्या तुम वहाँ गये थे ? नहीं मैं नहीं गया था । क्या सब कर चले गये ? वह पुस्तक ले गया । तुम कब यहाँ आये ? म कल वहाँ नहीं गये, इसलिये वह आज सबेरे यहाँ आया । वह ताब लेकर चला गया । वह जाकर वहाँ बैठ गया । तुम यह ट्ठी लेकर पढो । वहाँ जाकर तुम क्या करोगे ? वह खाना कर चला गया । तुम रोटी बनाकर खाओ । अंग्रेज़ी पढकर म क्या करोगे ? बात सुनकर जाओ । जवाब दिये बिना वह ला गया । चिट्ठी लेकर यहाँ आओ । हाथ मुँह धोकर खाना ओ । मैं चाय पीकर वहाँ जाऊँगा । काम करके वह यहाँ या । यह रुपया लेकर तुम किताब खरीदो ।

पाठ 8

लिंग व वचन

कूड	- कमरा	कवड	- दरवाज़ा
पेस्काति	- चाकू	खाण्डें	- तलवार
विन्दूरु, उन्दोरु	- चूहा	कीडो, कीडि	- कीडा
मान्चो	- खाट	चोग्गो. चोगो	- कुरता
मुंगूशि	- नेवला	पाकी	- तितली
फुल्ली	- नाक का आभूषण (Nose-ring)	चान्नी	- गिलहरी
मुद्दी	- अंगूठी	दुद्दी	- कद्दु (Pumpkin)
बी	- बी (Nut)	बीं, बियाळ	- बीज (Seed)
मोग्गें	- खीरा	चित्तळ	- हिरण (Deer)
आयदन	- बरतन	मांकड	- बन्दर
सातें	- छाता	सातूलि	- छतरी
कोयलूव	- खपरैल	खूळ	- एडी
ताळूव	- मस्तक	ताळवो	- हथेली, तलवा
जोळूव	- जोंक	मूसु	- मक्खी
मेरूँ	- बारहसिंगा (Stag)	सुंगट	- झींग-मछली (Prawn)
माण्टोवु	- मण्टप	कासोवु	- कछुआ
सारणि	- झाडू	सोकनि	- चिपकली
जग्गलि	- बरामदा	चावि	- चावी
म्हशि	- भैंसा, भैंस	मतीं	- मोती

ारूं	- जहाज़	तोण्ड	- चेहरा, मुँह
ाड	- पौधा	रोम्पो, रोम्पी	- (छोटा) पौधा (Seedling)
ोडोवु	- देर (Delay)	उगडें	- खुला
गडुंक,	- खोलना	धांपुंक	- बन्द करना

लिंग

हिन्दी में दो लिंग हैं, लेकिन कोंकणी में तीन लिंग हैं— ुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग।

पुरुषबोधक संज्ञाएं पुल्लिग हैं, स्त्री बोधक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग और बाकी संज्ञाओं का लिंग उनके रूप पर आधारित है।

1) 'उ' और 'ओ' कारान्त संज्ञाएँ पुल्लिग होती है। जैसे :— हातु, पायु, चोरु, बिन्दूरु, घोडो, कोम्बो, मान्चो, चोगो, कीडो।

2) 'इ' और 'ई' कारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे :— मुगूंशि, कीडि, मूयि, पेस्काति, तोपी, फुल्ली, पाकी, चान्नी, मुद्दी, बड्डी, बी — लेकिन 'दुद्दी' (कद्दु) पुल्लिग है।

3) अ, ईं, ऊँ और एँ में अन्त होनेवाली संज्ञाएँ नपुंसकलिंग होती हैं। कदेल, आयदन, चित्तळ, माजर, मांकड, बीं, चेरडूं, सातें, मातें, सूणें — लेकिन कोयलूव (खपरैल), खूळ (एडी), ताळूव (मस्तक), जोळूव (जोंक) स्त्रीलिंग हैं। बाकी शब्दों का लिंग निर्णय अधिकतर व्यवहार के अधीन है।

ऐसे कुछ शब्द हैं, जिन के द्वारा तीनों लिंगों का बोध होता है। मगर शब्द या तो पुल्लिग, या स्त्रीलिंग या नपुंसकलिंग में रहते हैं।

पुल्लिग :— कीरु, मूसु

स्त्रीलिंग :— मूथि, जोळूत्र, साळोरि, मुंगूशि
नपुंसकलिंग :— सूणें, मेरूं (बारहसिंगा), चित्तळ, सुंगट, चेरडूं ।

वचन

कोंकणि में दो वचन हैं । एकवचन और बहुवचन । बहुवचन बनाने के लिये संज्ञा का लिंग जानना आवश्यक है, क्योंकि लिंग के आधार पर बहुवचन में शब्दों का रूपान्तर होता है ।

पुल्लिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम

1) 'उ' कारान्त पुल्लिंग शब्दों के बहुवचन में अन्तिम 'उ' का लोप होता है ।

देवु – देव; हातु – हात
चोरु – चोर, कीरु – कीर

(फात्तरु) फात्तोरु – फात्तर
(माण्टवु) माण्टोवु – माण्टव
(कासवु) कासोवु – कासव
(गायण्डळु) गायण्डोळु – गायण्डळ

2) 'ओ' कारान्त पुल्लिंग शब्दों में, बहुवचन बनाने केलिये 'ओ' के स्थान पर 'ए' कर देते हैं ।

घोडो – घोडे
माडो – माडे
कोम्बो – कोम्बे
चोग्गो – चोग्गे

बाकी पुल्लिंग शब्द एकवचन और बहुवचन-दोनों में एक से रहते हैं । दुद्दी – दुद्दी

स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम

1) 'अ' कारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के लिये 'अ' के स्थान पर 'ओ' कर देते हैं।

बायल	–	बायलो
कोयलॣव	–	कोयलॣवो
खॣळ	–	खॣळो

लेकिन शब्द के उपान्तिक स्वर 'ऊ', 'ए' या 'ई' रहे तो बहुवचन में वह ह्रस्व हो जाता है और बाद के व्यंजन का द्वित्व होता है।

धूव	–	धुव्वो
जीब	–	जिब्बो
पेट	–	पेट्टो

2) 'इ' कारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के लिये 'इ' के स्थान पर 'यो' कर देते हैं।

पेस्काति	–	पेस्कात्यो
बोक्कोडि	–	बोक्को ड्यो
सारणि	–	सारण्यो
सोकनि	–	सोकन्यो
जग्गलि	–	जग्गल्यो
चावि	–	चाव्यो
गाय	–	गाय्यो
नाति	–	नात्यो
म्हशि	–	म्हश्यो

3) 'ई' कारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के लिये शब्द के अन्त में 'यो' जोड देते हैं।

तोपी	–	तोपीयो
फुल्ली	–	फुल्लीयो

चान्नी – चान्नीयो
राणी – राणीयो
मुद्दी – मुद्दीयो

बाकी स्त्रीलिंग शब्दों के एकवचन और बहुवचन में एक ही रूप हैं। पीडा – पीडा (रोग)

नपुंसकलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के नियम

1) 'अ' कारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने केलिये 'अ' के स्थान पर 'अं' या 'आं' कर देते हैं।

घर – घरं, घरां
झाड – झाडं, झाडां
तोंड – तोंडं, तोंडां
कदेल – कदेलं, कदेलां
आयदन – आयदनं, आयदनां

2) 'ईं' कारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के लिये 'ईं' के स्थान पर 'अयां' या 'इयां' कर देते हैं।

मतीं – मतियां
बीं – बियां

लेकिन इनके बहुवचन में एक वचन रूप का भी प्रयोग होता है।

3) 'ऊं' कारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने केलिये 'ऊं' के स्थान पर 'अवं', 'अवां' या 'उवां' कर देते हैं।

तारूं – तारवं, तारवां
चेरडूं – चेरडूवं, चेरडूवां

4) 'एं' कारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने के लिये 'एं' के स्थान पर 'ईं' कर देते हैं।

सूणें	–	सूणीं
सातें	–	सातीं
मोग्गें	–	मोग्गीं

वाक्य

पुस्तकां वाचितले.	लडके पुस्तकें पढेंगे ।
करां आज हांगा येतले.	नौकर आज यहाँ आयेंगे ।
ीयो थांगा कितें करतात ?	लडकियाँ वहाँ क्या करती हैं ?
थांगा खेळतात.	वे वहाँ खेलती हैं ।
डां उगडून (काडून, काणु) वच.	दरवाज़े खोलकर जाओ ।
ोगंय हांगा आयलात.	वे दोनों यहाँ आये हैं ।
पेस्कात्यो काणाका. (काडूनाका)	वे चाकू मत लो ।
खंय राबतात ?	आप कहाँ रहते हैं ?
ी फायि येंवचीना.	हम कल न आयेंगे ।
रां येतलेवे ?	क्या, वे परसों आयेंगे ?
रि त्यो बायलो खंय गेलेल्यो ?	परसों वे औरतें कहाँ गयी थीं ?
ालि हांगा नासिलोवे ?	क्या, तुम कल यहाँ नहीं थे ?
यि आमी थांगा वचूं.	हम कल वहाँ जायें ।
ूवां थांगा कितें करतात ?	बच्चे वहाँ क्या करते हैं ?
कोंकणी शिकतात.	वे कोंकणी सीखते हैं ।
चिट्यो बरैतात.	लडके चिट्ठियाँ लिखते हैं ।
भोंकतात.	कुत्ते भूँकते हैं ।
नाचतात.	मोर नाचते हैं ।
उल्लैतात.	तोते बोलते हैं ।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

लडके वे किताबें पढेंगे। वे औरतें आज शाम यहाँ न आयेंगी। लडकियाँ क्या करती हैं? बच्चे खेलते हैं। ये कुरसियाँ वहाँ ले जाओ और वे मेजें यहाँ लाओ। हिन्दू लोग माँस नहीं खाते। परसों वे लडकियाँ यहाँ क्यों आयीं? नौकर रोज कमरा साफ़ नहीं करते। तुम टोपियाँ कहाँ रखते हो? तुम जाकर चावियाँ लाओ। पुस्तक लेकर पाठ पढो। बिल्लियाँ दूध पीती हैं। घोडे दौडते हैं। ये छतरियाँ वहाँ रखो।

पाठ ९

संज्ञा–कारक रचना

माडो	- नारियल (पेड)	माडी	- सुपारी (पेड)
नारलु	- नारियल (फल)	फप्पळ	- सुपारी (फल)
नांव	- नाम	रावळार	- राजमहल
न्हंयि	- नदी	दीवो	- दीपक
पोणोसु (पणसु)	- कटहल	डोंगोरु	- पहाड
मडवोळु	- धोबी	समुद्रु	- समुन्दर
वागु	- बाघ	सिंहु	- सिंह, शेर
आंगडि	- दूकान	यजमानु	- मालिक
शहर	- शहर	गांवु	- गाँव
बाज़ार	- बाज़ार	फूल	- फूल

ंक, देकुंक, ़ंक	देखना	दाकौंक	- दिखाना
		लीपुंक, नीपुंक	- छिपना
़ौंक	- सिखाना	एकेक, एकेक्लो	- एक एक
टाय	- एक साथ	एकादा	- शायद
ं	- ज़रा	चाकरी	- नौकरी

क

कोंकणी में कारकों के आठ भेद हैं। उनके नाम और ह्न (प्रत्यय) नीचे दिये जाते हैं।

ारक	प्रत्यय	
	कोंकणी	हिन्दी
ा	०, न (एकवचन) नी (बहुवचन)	०, ने
	का	को
ण	न (एकवचन) नी (बहुवचन)	से
दान	क	को
ादान	सून	से
न्ध	चो, लो, गेलो	का
ाकरण	रि, चेरि, न्तु	पर, में
ाधन	नु, न्दो (बहुवचन)	ए, ओं

ऊपर दिये गये संबोधन कारक प्रत्ययों के अलावा निम्न-खित 'शब्द' बुलाने के लिये प्रयुक्त होते हैं। इनका खास अर्थ होता। आगे, गे, आगो, गो (स्त्रीलिंग).*

कारक प्रत्यय जोड देने के पहले संज्ञाओं के एकवचन और ाचन के रूपों में विकार होते हैं जो नीचे दिये जाते हैं।

*आहो, हो, आगा, आरे (पुल्लिंग और नपुंसकलिंगी प्राणिवाचक शब्दों के लिये)

संज्ञा		विकार			
		एकवचन		बहुवचन	
पु०	देवु	देवा	(आ)	देवां	(ं)
	आम्बो	आम्ब्या	(या)	आम्ब्यां	(ं)
स्त्री०	बायल	बायले	(ए)	बायलां	(आं)
	सारणि	सारणी	(ई)	सारण्यां	(याँ)
	चेल्ली	चेल्ले	(ए)	चेल्लियां	(याँ)
नपुं०	मेज	मेजा	(आ)	मेजां	(ं)
	सूणें	सूण्या	(या)	सूण्यां	(ं)
	चेरडूँ	चेरडा	(आ)	चेरडां, चेरडूवां	(ं)

कारक–रचना

उकारान्त पुंल्लिग शब्द : देवु - देव

कारक	एकवचन		बहुवचन	
कर्ता	देवु	- देव	देव	- देव
	देवान	- देवने	देवांनी	- देवों ने
कर्म	देवाक	- देवको	देवांक	- देवों को
करण	देवान	- देव से	देवांनी	- देवों से
संप्रदान	देवाक	- देव को	देवांक	- देवों को
अपादान	देवासूनु	- देव से	देवांसूनु	- देवों से
संबन्ध	देवाचो	देव का	देवांचो	देवों का
	देवालो		देवांलो	
	देवागेलो		देवांगेलो	
अधिकरण	देवारि	देव पर	देवांरि	देवों पर
	देवाचेरि		देवांचेरि	
	देवान्तु	- देव में	देवान्तु	- देवों में
संबोधन	देवा	- देव	देवानु, देवांन्दो	- देवों

ारान्त पुल्लिंग शब्द : घोडो - घोडा

क	एकवचन		बहुवचन	
	घोडो घोडयान	- घोडा - घोडेने	घोडे घोडयांनी	- घोडे - घोडों ने
	घोडयाक	- घोडे को	घोडयांक	- घोडों को
ग	घोडयान	- घोडे से	घोडयांनी	- घोडों से
दान	घोडयाक	- घोडे को	घोडयांक	- घोडों को
दान	घोडयासूनु	- घोडे से	घोडयांसूनु	- घोडों से
ध	घोडयाचो घोडयालो घोडयागेलो	घोडेका	घोडयांचों घोडयांलो घोडयांगेलो	घोडों का
करण	घोडयारि घोडयाचेरि	घोडे पर	घोडयांरि घोडयांचेरि	घोडों पर
	घोडयान्तु	- घोडे में	घोडयांन्तु	घोडों में
धन	घोडया	- घोडे	घोडयानु घोडयान्दो	घोडों

ारान्त स्त्रीलिंग शब्द : बायल - औरत

क	एकवचन		बहुवचन	
	बायल बायलेन	- औरत - औरतने	बायलो बायलांनी	- औरतें - औरतों ने
	बायलेक	- औरत को	बायलांक	- औरतों को
	बायलेन	- औरत से	बायलांनी	- औरतों से

कारक	एकवचन		बहुवचन	
संप्रदान	बायलेक	- औरत को	बायलांक	- औरतों को
अपादान	बायलेसूनु	- औरत से	बायलांसूनु	- औरतों से
संबन्ध	बायले चो बायलेलो बायलेगेलो	औरत का	बायलांचो बायलांलो बायलांगेलो	औरतों का
अधिकरण	बायलेरि बायलेच्चेरि	औरत पर	बायलांरि बायलांचेरि	औरतों पर
	बायलेन्तु	औरत में	बायलांतु	- औरतों में
संबोधन	बायले	- औरत	बायलांनु बायलांन्दो	औरतों

इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द : सारणि - झाड़ू

कारक	एकवचन		बहुवचन	
कर्ता	सारणि सारणीन	- झाड़ू - झाड़ूने	सारण्यो सारण्यांनी	- झाड़ू - झाड़ुओं ने
कर्म	सारणीक	- झाड़ूको	सारण्यांक	- झाड़ुओं को
करण	सारणीन	- झाड़ू से	सारण्यांनी	- झाड़ुओं से
संप्रदान	सारणीक	- झाड़ूको	सारण्यांक	- झाड़ुओं को
अपादान	सारणीसूनु	- झाड़ू से	सारण्यांसूनु	- झाड़ुओं से
संबन्ध	सारणीचो सारणीलो सारणीगेलो	झाड़ूका	सारण्यांचो सारण्यांलो सारण्यांगेलो	झाड़ुओं का

ान्त स्त्रीलिंग शब्द : सारणि - झाड़

क	एकवचन		बहुवचन	
करण	सारणीरि सारणीचेरि	झाड़ू पर	सारण्यांरि सारण्यांचेरि	झाडुओं पर
	सारणीन्तु	झाड़ू में	सारण्यांन्तु	- झाडुओं में
धन	सारणी	- झाड़ू	सारण्यांनु सारण्यान्दो	झाड़ूओं

ान्त स्त्रीलिंग शब्द : चेल्ली (चेली) - लडकी

क	एकवचन		बहुवचन	
ा	चेल्ली	- लडकी	चेल्लियो	- लडकियां
	चेल्लेन	- लडकी ने	चेल्लियांनी	- लडकियों ने
	- चेल्लेक	- लडकी को	चेल्लियांक	- लडकियों को
ण	- चेल्लेन	- लडकी से	चेल्लियांनी	- लडकियों से
दान	- चेल्लेक	- लडकी को	चेल्लियांक	- लडकियों को
ादान	- चेल्लेसूनु	- लडकी से	चेल्लियांसूनु	- लडकियों से
न्ध	चेल्लेचो चल्लेलो चेल्लेगेलो	लडकी का	चल्लियांचो चल्लियांलो चेल्लियांगेलो	लडकियों का
करण	चेल्लेरि चेल्लेचेरि	लडकी पर	चेल्लियांरि चेल्लियांचेरि	लडकियों पर
	चेल्लेन्तु	- लडकी में	चेल्लियांन्तु	- लडकियों में
धन	चेल्ले	- लडकी	चेल्लियांनु चेल्लियांन्दो	लडकियों

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द : मेज - मेज़

कारक	एकवचन		बहुवचन	
कर्ता	मेज	- मेज़	मेजां	- मेज़ें
	मेजान	- मेज़ने	मेजांनी	- मेज़ों ने
कर्म	- मेजाक	- मेज़को	मेजांक	- मेज़ों को
करण	- मेजान	- मेज़से	मेजांनी	- मेज़ों से
संप्रदान	- मेजाक	- मेज़को	मेजांक	- मेज़ों को
अपादान	- मेजासूनु	- मेज़ से	मेजांसूनु	- मेज़ों से
संबन्ध	मेजाचो मेजालो मेजागेलो	मेज़का	मेजांचो मेजांलो मेजांगेलो	मेज़ों का
अधिकरण	मेजारि मेजाचेरि	मेज पर	मेजांरि मेजांचेरि	मेज़ों पर
	मेजान्तु	- मेज़ में	मेजांन्तु	- मेजों में
संबोधन	मेजा	- मेज़	मेजांनु मेजान्दों	मेज़ों

ऍंकारान्त नपुंसकलिंग शब्द:सूणें - कुत्ता

कारक	एकवचन		बहुवचन	
कर्ता	सूणें	- कुत्ता	सूणिं	- कुत्ते
	सूण्यान	- कुत्तेने	सूण्यांनी	- कुत्तों ने
कर्म	सूण्याक	- कुते को	सूण्यांक	- कुत्तों को
करण	सूण्यान	- कुत्ते से	सूण्यांनी	- कुत्तों से
संप्रदान	सूण्याक	- कुत्ते को	सूण्यांक	- कुत्तों को
अपदान	सूण्यासूनु	- कुत्ते से	सूण्यांसूनु	- कुत्तों से

रक	एकवचन		बहुवचन	
न्ध	सूण्याचो सूण्यालो सूण्यागेलो	कुत्ते का	सूण्यांचो सूण्यांलो सूण्यांगेलो	कुत्तों का
धकरण	सूण्यारि सूण्याचेरि	कुत्ते पर	सूण्यांरि सूण्यांचेरि	कुत्तों पर
	सूण्यान्तु	- कुत्ते में	सूण्यान्तु	- कुत्तों में
ाधन	सूण्या	- कुत्ते	सूण्यांनु सूण्यान्दो	कुत्तों

ारान्त नपुंसकलिंग शब्द : चेरडू - बच्चा

रक	एकवचन		बहुवचन	
ा	चेरडू	- बच्चा	चेरडूवां	- बच्चे
	चेरडान	- बच्चे ने	चेरडूवांनी चेरडांनी	बच्चों ने
	चेरडाक	- बच्चे को	चेरडूवांक चेरडांक	बच्चों को
ण	चेरडान	- बच्चे से	चेरडूवांनी चेरडांनी	बच्चों से
ान	चेरडाक	- बच्चे को	चेरडूवांक चेरडांक	बच्चों को

	एकवचन		बहुवचन	
अपादान	चेरडासूनु	बच्चे से	चेरडूवांसूनु, चेरडांसूनु	बच्चों से
सबन्ध	चेरडाचो, चेरडालो, चेरडागेलो	बच्चे का	चेरडूवांचो, चेरडांचो, चेरडूवालो, चेरडांलो, चेरडूवांगेलो, चेरडांगेलो	बच्चों का
अधिकरण	चेरडारि, चेरडाचेरि	बच्चे पर	चेरडूवारि, चेरडांरि, चेरडूवांचेरि, चेरडांचेरि	बच्चों पर
	चेरडान्तु	बच्चे में	चेरडूवान्तु, चेरडांन्तु	बच्चों में
संबोधन	चेरडा	बच्चे	चेरडूवानु, चेरडांनु, चेरडूवांन्दो, चेरडांन्दो	बच्चों

निम्न लिखित संज्ञाओं के विकृतरूपों पर ध्यान दीजिये :—

संज्ञा	अर्थ	विकृतरूप
नातु	पौत्र	नातवा
नित्तु	राल	नित्तुवा
बिच्चु	बिछू	विच्चवा

संज्ञा	अर्थ	विकृतरूप
पू	पीव	पूव्वा
बापा	बाप	बापा
आबु	पितामह	आबो
ऊ, वू	जूँ	उव्वे, वुव्वे
दायि	चमचा (laddle)	दाय
गायि	गाय	गाय
मांयि	सांस	मांय
आमा	माँ	आमा
भूयिं	भूमि	भूयं

कर्म और संप्रदान कारक 'क'—यह प्रत्यय सर्वनामों के साथ ाते समय एकवचन में 'का' और बहुवचन में 'कां' हो जाता है। ो :— हांव + क = मा + का = माका – मुझको
आमी + क = आम + कां = आमकां – हमको
र्वनाम–कारक रचना' प्रकरण में इसपर विशद रूप से विचार या जायगा।

कर्ता और करण कारक चिह्न 'न' और 'नी'— 'न' प्रत्यय ा के एकवचन रूप में और 'नी' बहुवचन रूप में लगता है। । कर्ता के साथ ये प्रत्यय लगते हैं, तब ये निरर्थक होते हैं।

अपादानकारक प्रत्यय — 'सूनु' (सून) के अलावा थावन, न, आन, व्यान, साकून, थाकून, पासून, पास्ट, कूय (चेकूय, ाय)—ये अव्यय भी प्रयुक्त होते हैं।

संबन्ध कारक प्रत्यय 'चो', 'लो' और 'गेलो'—इन प्रत्ययों प्रयोग हिन्दी के संबन्ध कारक चिह्न 'का' के समान होता है। न्धी शब्द के लिंग वचन के अनुसार इनका रूपान्तर होता है।

'चो' — यह प्रत्यय सभी प्रकार की संज्ञाओं के साथ और सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होता है। जैसे :—

घोडयाचो पायु	- घोडे का पैर	घोडयाचे पाय	- घोडे के पैर
घोडयाची जीब	- घोडे की जीभ	घोडयाच्यो जीबो	- घोडे की जीभें
घोडयाचें मातें	- घोडे का सिर	घोडयाचीं मातीं	- घोडे के सिर

'लो' — यह प्रत्यय सिर्फ मनुष्यजाति के शब्दों के साथ लगता है। जैसे :—

रामालो पायु	- राम का पैर	रामाले पाय	- राम के पैर
रामाली चेल्लो	- रामकी लडकी	रामाल्यो चेल्लीयो	- रामकी लडकियाँ
रामालें कदेल	- राम की कुरसी	रामालीं कदेलां	- राम की कुरसियाँ

'गेलो' यह प्रत्यय भी सिर्फ मनुष्य जाति सूचक शब्दों और उनके सर्वनामों के साथ लगता है।

रामागेलो घोडो	- राम का घोडा	रामगेले घोडे	- रामके घोडे
रामगेली घोडी	- रामकी घोडी	रामागेल्यो घोडीयो	- राम की घोडियाँ
रामागेलें पान	- रामका पर्ण	रामगेलीं पानां	- राम के पर्ण
आमगेलो चेल्लो	- हमारा लडका	आमगेली चेल्लो	- हमारी लडकी
आमगेले चेल्ले	- हमारे लडके	आमगेल्यो चेल्लीयो	- हमारी लडकियाँ
आमगेलें मेज	- हमारी मेज़	आमगेलीं मेजां	- हमारी मेजें

यद्यपि वाक्य में शब्दों का प्रयोग विभक्ति सहित होता है, तो भी कभी कभी विभक्तियों का (प्रत्ययोंका) लोप करके सज्ञाओं के विकृत रूपों का ही प्रयोग होता है।

:- माजर विन्दुरा (क) धरता - बिल्ली चूहेको पकडती है।
माजर विन्दुरां (क) धरता - बिल्ली चूहोंको पकडती है।
नर्मदा (लो)घोवु हांगा आयला - नर्मदा का पति यहाँ आया है।
तो आम्ब्या (चें) पान हाडता - वह आम का पर्ण लाता है।
ते धरां (न्तु) वतात - वे घर (में) जातें हैं।

वाक्य

ुस्तकां दुकानान्तु व्हर.	ये पुस्तकें दूकान में ले जाओ।
मैदानारि रोज फुटबाल खेलतात वे ?	आप मैदान में रोज़ फुटबाल खेलते हैं ?
न्तु कितें आसा ?	संदूक में क्या है ?
रान्तु नात.	वे धर में नहीं।
ाडयारि कितें चोयता ?	तुम नारियल के पेड पर क्या देखते हो ?
ल मद्रास सून रामालो भाउ आयलो	कल मद्रास से राम का भाई आया।
कां मेजारि दवरि.	किताबें मेज़पर रखो।
ाली भयणि खंयं शिकता ?	जाण की बहन कहाँ सीखती है ?
ालो बापा आजि सकाळि एरणाकुळान्तु गेलो.	लडकी का बाप आज सबेरे एरणाकुलम गया है।
दफतरान्तु काम करना.	वह दफ़तर में काम नहीं करता।
रकाराची चाकरी करतात.	वे सरकारकी नौकरी करतें हैं।
ारि बैस, मेजारि बैसनाका.	कुरसीपर बैठो, मेज़पर मत बैठो।
ोटरारि बैसून सिनमा चौंचाक गेले	वे मोटर पर बैठकर सिनिमा देखने गये।

चेरडाक हाँगा उलदी.
चेल्लो सूण्याक मारता.
तो पेनान बरेयता.
आमी दोळयानी चोयतात.
आमी कानांनी अयकतात आनी पायांनि चंवकतात.
जीब्बेन उल्लैतात.
तो आवयलें उत्तर अ।यकना.
पुलीस चोरांक धरता.

बच्चे को यहाँ बुलाओ।
लडका कुत्ते को मारता है।
वह कलम से लिखता है।
हम आखों से देखते हैं।
हम कानों से सुनते हैं और पौरों से चलते हैं।
जीब से बोलतें हैं।
वह माँका वचन नहीं सुनता।
पुलीस चोरों को पकडती है।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

वे घरों में रहता है। कुरसियों पर चार औरतें बैठी थीं। झाडों पर फूल नहीं है। कुत्तों को खाना दो। कल घर से चार आदमी जायेंगे। नदी में पानी नहीं है। शहर में कौन रहता है? हम गाँव से आते हैं। तुम दफ़तर से कब आओगे? वृक्ष पर फल हैं। सीता का घोडा यहाँ नहीं है। रहीम की बेटी गाती है। रहीम की बेटियाँ स्कूल में पढती हैं। घरों में कोई नहीं हें। घटी की आवाज़ सुनकर लडके क्लास में आये। हमारे बाप-दादा सत्य बोलते थे। कुरसियों पर चार आदमी बैठे हैं। एक एक कमरे में दो दो लडके रहेंगे। बाज़ार शहर से कितनी दूर है? दफ़तर में ज़ोर से मत बोलो।

पाठ 10

सर्वनाम--कारक रचना

	हांव = मैं		आमी = हम	
क				
	हांव	– मैं	आमी	हम,
	हांवें	– मैंने		हमने
	म्हाका, माका	– मुझको	आमकां	– हमको
ग	माजान, मिज्जान	– मुझसे	आमचान	– हमसे
दान	माका	– मुझको	आमकां	– हम को
दान	माजेसूनु, मिज्जेसूनु	– मुझसे	आमचेसूनु	– हम से
ध	मागेलो, मिग्गेलो	– मेरा	आमचो, आमगेलो	– हमारा
करण	माजेरि, मिज्जेरि	– मुझपर	आमचेरि	– हम पर
	माजान्तु, मिज्जान्तु	– मुझमें	आमचान्तु	– हम में

तूं – तू या तुम		तुमी – आप	
तूं	- तू, तुम	तुमी	- आप, आपने
तूवें, तुवें	- तूने, तुमने		
तुका	- तुझको, तुमको	तुमकां	- आपको

करण	तुजान	- तुझसे, तुमसे	तुमचान	- आप से
संप्रदान	तुका	- तुझको, तुमको	तुमकां	- आपको
अपादान	तुजेसूनु	- तुझसे, तुम से	तुमचेसूनु	- आपसे
संबन्ध	तुजो, तुगेलो	- तेरा, - तुम्हारा	तुमगेलो	- आपका
अधिकरण	तुजेरि	- तुझपर, तुम पर	तुमचेरि	- आप पर
	तुजान्तु	- तुझ में, तुम में	तुमचान्तु	- आप में

तो – वह (पु.)   ते – वे (पु.)

कर्ता	तो	- वह	ते	- वे
	ताणें	- उसने	तांणी	- उन्होंने
कर्म	ताका	- उसको	तांकां	- उनको
करण	ताजान	- उससे	तांचांन	- उनसे
संप्रदान	ताका	- उसको	तांकां	- उनको
अपादान	ताजेसूनु, ताचेसूनु	- उससे	तांचेसूनु	- उनसे
संवन्ध	ताचो, ताजो, तागेलो	- उसका	तांचो, तांगेलो	- उनका
अधिकरण	ताचेरि, ताजेरि	- उसपर	तांचेरि	- उनपर
	ताचान्तु, ताजान्तु	- उस में	तांचान्तु	- उनमें

ती – वह (स्त्री)   त्यो – वे (स्त्री)

कर्ता	ती	- वह	त्यो	- वे
	तीणें, तिणें	- उसने	तांणी	- उन्होंने

	तिका	- उसको	तांकां	- उनको
ा	तिजान	- उससे	तांचांन	- उनसे
ान	तिका	- उसको	तांका	- उनको
दान	तिजेसूनु	- उससे	तांचेसूनु	- उनसे
ध	तिजो, तिगेलो	- उसका	तांचो, तांगेलो	- उनका
करण	तिजेरि तिजान्तु	- उसपर - उसमें	तांचेरि तांचांन्तु	- उनपर - उन में

तें-वह (नपुं); तीं-वे (नपुं,) – इनके कारक रूप ा: 'तो' और 'ते' के रूपों के समान हैं।

हो, ही, हें; जो, जी, जें, (जो) – इन सर्वनामों के कर्ता कारक एकवचन में 'णें' प्रत्यय लगकर हाणें, हिणें; जाणें, - ये रूप बनते हैं; बहुवचन में हांणी, जांणी-ये रूप बनते हैं।

	कोण –	कौन	कितें, इतें –	क्या
	कोण कोणें	- कौन - किसने	कितें, इतें	- क्या
	कोणाक	- किसको	कित्याक, इत्याक	- किसको
ा	कोणान, कोणाचान	- किससे	कित्यान, इत्यान, कित्याचान, इत्याचान	- किससे
ान	कोणाक	- किसको	कित्याक, इत्याक	- किसको, किसके लिये

अपादन	कोणासूनु	- किससे	कित्यासूनु, इत्यासूनु	- किससे
संबन्ध	कोणाचो कोणालो कोणागेलो	- किसका	कित्याचो इत्याचो	- किसका
अधिकरण	कोणारि कोणाचेरि	- किसपर	कित्यारि, इत्यारि कित्याचेरि, इत्याचेरि	- किसपर
	कोणान्तु	- किसमें	कित्यान्तु, इत्यान्तु	- किसमें

वाक्य

मिग्गेलो (मागेलो) घोडो आजि खंय आसा ?	मेरा घोडा आज कहाँ है ?
तुगेलो भाऊ हांगा ना.	तुम्हारा भाई यहाँ नहीं।
हो बूकु कोणालो ?	यह किताब किसकी (है) ?
तो बूकु मागेलो.	वह किताब मेरी (है) ।
तुगेलें पेन मेजारि ना.	तुम्हारी कलम मेज़ पर नहीं।
नौकराक आपै.	नौकरको बुलाओ ।
हो तुगेलो पूतुवे ?	क्या, यह तुम्हारा बेटा है ?
ती कोणाली धूव ?	वह किसकी बेटी है।
बायलेक कितें जालें ?	पत्नी को क्या हुआ ?
तुमगेली धूव कालि खंय गेलेली ?	आपकी पुत्री कल कहाँ गयी थी ?

गेल्या भावालो चेलो खंय
शिकुंक वत्ता ?

ा तिग्गेली चेल्ली मेल्ली (मेली)

गेल्या घरान्तु चारि जनां
राबतात.

लो बापा कालि हांगा
आयललोवे ?

लो दोस्तु प्रतिदिन शिकचाक
वचना.

ा सकाळीं मागेलें (मिग्गेलें)
सूणें मेलें.

लो नौकरू गांवान्तु गेला.

तुमगेली बायल कोचो
वतली वे ?

ले चेडे परां हांगा येतले.

हांगा आयललो दादलो
मिग्गेलो बापा.

आपके भाई का लडका कहाँ
सीखने जाता है ?

कल उसकी लडकी मर गयी।

हमारे घर में चार जन रहते हैं।

क्या, आपका बाप कल यहाँ
आया था ?

उसका दोस्त रोज़ सीखने न
जाता।

आज सबेरे मेरा कुत्ता मर गया।

मेरा नौकर गाँव गया है।

आज आपकी पत्नी कोचीन
जायगी ?

उसके पुत्र परसों यहाँ आयेंगे।

अब यहाँ आया आदमी मेरा
बाप है।

---

*अगर संबन्धी शब्द के साथ प्रत्यय लगे, तो संबन्ध कारक चिह्न चो–ची–चें; चे, च्यो, चीं; लो–ली–लें; ले–ल्यो–लीं; गेलो, गेली, गेलें; गेले–गेल्यो–गेलीं के बदले क्रमशः च्या, ल्या और गेल्या का प्रयोग होता है। लिंग या वचन का भेद नहीं।

जैसे तुमगेल्या चेल्लेक – आपकी लडकी को; तांगेल्या घरान्तु–उनके घरमें।

तुमगेलो + भावु + क — तुमगेल्या भावाक

आमगेली + चेल्ली + न — आमगेल्या चेल्लेन

*ह्या पेटान्तु कितें आसा?	इस पेटी में क्या है?
हें कदेल हाका दीवनाका, तिका दी.	यह कुरसी इसको मत दो, उसको दो।
माजर विन्दुराक धरता.	बिल्ली चूहेको पकडती है।
आवै पूताक आपैता.	माँ पुत्र को बुलाती है।
पूतु आवैक पांय पडता.	पुत्र माँ को प्रणाम करता है।
हांव भूकेन मरतां.	मैं भूखों मर रहा हूँ (मरता हूँ)।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

तुम्हारा नौकर आज कहाँ गया है? उसको यहाँ बुलाओ। वह तुम्हारे भाई के घर में रहता है। मैं उसकी किताब तुमको दूँगा। क्या वह मेरा घर नहीं है? क्या वह तुम्हारे भाई की किताब है? मेरी बहन का पति कहाँ है? तुम उसके भाई के घर जाओगे? वह अपने कमरे में नहीं है। सब कुछ उसकी दूकान से लाओ। उनको हमारे घर में बुलाओ। यह तुम्हारे दोस्त का घर है? इस लडके का बाप कहाँ गया? उस कमरे में कौन बैठा है? जो आदमी कल यहाँ आया था, वह आज कहाँ चला गया? जो किताब मेज पर है, वह मेरी नहीं है। इस बच्चे की माँ क्या करती है? यह किसकी बेटी है? इस औरत का पति कहाँ रहता है? तुम्हारी बेटी का नाम क्या है? तुम्हारा दोस्त कल यहाँ आया था। तुम्हारी बहन का बेटा कल कहाँ जाता था?

---

*अगर विशेष्य के साथ विभक्ति प्रत्यय आये तो उसके सार्वनामिक विशेषणों का रूपान्तर यों होता है।

तो–ती–तें; ते–त्यो–तीं — त्या

हो–ही–हें; हे–ह्यो–हीं — ह्या

पाठ 11

विशेषण

ो (धोवो)	- सफ़ेद	काळो	- काला
वडो	- लाल	पाचवो	- हरा
दूवो	- पीला	गोरो	- गोरा
डकूळो	- गोल	चौकण्डु	- चौकोर
डु	- मीठा	कोडु (कडु)	- कडुआ
कु	- तीखा	आम्बूसु	- खट्टा
ट्टूसु	- खारा	दिग्गूसो	- तिकोना
गु, बरो	- अच्छा	वायटु, बालावु	- बुरा
रु	- मोटा	सोपूरु	- पतला (lean)
डु	- घना (thick)	पातळु	- पतला (thin)
च्छ, स्पष्ट	- साफ़	लानु	- चिकना
खरु	- खुरखुरा (rough)	रंगु	- रंग
नु, लानु	- छोटा	व्होडु, व्हडु	- बडा
स्त, भो	- बहुत	नीटु	- सीधा
डु	- चौडा	दीगु	- लंम्बा
ो	- नाटा (short)	वांकडो	- टेढा
डु (चडु)	- ज़्यादा	वूणें, ऊणें	- कम
बोरु, (निब्बरु)	- कडा (hard)	घट्टि	- टिकाऊ
ळु (सडुळु)	- शिथिल (loose)	स्वल्प	- कुछ, थोडा
डु (जडु)	- भारी	ल्होवु (ल्हवु)	- हलका

पोक्कोळु (पोक्कळु)	- खोखला	धोड़ु	- घना
शेळु	- ठंडा	व्हूनु, हूनु	- गरम
नवो (नोवो)	- नया	परणो	- पुराना
बुरशो	- मैला, कुचैला	आळसो	- सुस्त
ससारु, सवायु	- सस्ता	म्हारोगु (म्हारगु)	- महंगा
जीवो	- ताजा, जिन्दा	हरवो	- कच्चा, हरा
सरल, सोंपें	- आसान	कठिन	- मुश्किल
वेगळो	- अलग, भिन्न	रित्तो	- खाली
सुक्को	- सूखा	वागतो	- खुला
बोल्लो	- गीला	पूरो	- काफी (is enough)
फकत	- बिलकुल	काळूकु	- अंधेरा
मळब	- आसमान	वारें	- हवा
जात्रा	- यात्रा	पेर	- अमरूद

कोंकणी की ओकारान्त संज्ञाएँ साधारणतया पुल्लिग होती हैं। ये एकारान्त करने से बहुवचन और 'ई' कारान्त करने से स्त्रीलिंग बनती है। जैसे :— चेल्लो — चेल्ले — चेल्ली
घोडो — घोडे — घोडी

यह नियम विशेषणों के लिये भी लागू है। विशेषण विशेष्य के लिंग वचन के अनुसार बदलता है। ओकारान्त और उकारान्त विशेषण पुल्लिग हैं।

पाचवो आम्बो	- हरा आम	पाचवे आम्वे	- हरे आम
पाचवी चींच	- हरी इमली	पाचव्यो चींचो	- हरी इमलियाँ

चवें केळें	- हरा केला	पाचवीं केळीं	- हरे केले
ोडु आम्बो	- बडा आम	व्होड आम्बे	- बडे आम
ोडि चींच	- बडी इमली	व्होडयो चींचो	- बडी इमलियां
ोड केळें	- बडा केला	व्होड केळीं	- बडे केले

लेकिन निम्नलिखित विशेषणों का रूपान्तर नहीं होता :—
कोडु, म्हस्त, घट्टि, ऊणें, मोवु और ल्होवु.

कभी कभी विशेषण संज्ञा के समान प्रयुक्त होता है। तब
के साथ कारक प्रत्यय जोडे जाते हैं।

गोरयांलें राज्य — गोरों का राज्य

शेषणों की तुलना

जिस वस्तु के साथ तुलना की जाती है, उसके साथ, परस,
सि, पास्ट, कूय (की अपेक्षा) जोडकर तुलना प्रकट की जाती है।
शेषण के पूर्व 'चंड' (ज़्यादा) लगाकर तुलना की परम अवस्था
कट की जाती है।

मालो बूकु तुगेल्या बूका परस थोरु.	- राम की किताब तुम्हारी किताब से मोटी है।
मालो बूकु चंडु थोरु.	- राम की किताब सबसे मोटी है।
चे पासि हो वायटु.	- उनकी अपेक्षा यह खराब है।
ळ्या पासि अम्बो गोडु.	- केलेकी अपेक्षा आम मीठा है।
घरा कूय (चेकंय) तें घर बरें (चांग).	- इस घर से वह घर अच्छा।
वे पास्ट हो.	- उससे खराब यह।
वे वरिष्ट हो.	- उससे बुरा यह।

वाक्य

(अ)

तें लान कदेल हांगा हाडि.	वह छोटी कुरसी यहाँ लाओ।
ह्या घराक चारि कूडां आसात.	इस घर में चार कमरे हैं।
मळब आजि स्वच्छ आसा.	आसमान आज साफ़ है।
तो व्हडु मनीषु कोण?	वह बडा आदमी कौन है।
आजि वारें हून न्हय.	आज हवा गरम नहीं।
हें कूड भो सान आसा.	यह कमरा बहुत छोटा है।
हांव शेळि चाय पीना.	मैं ठंडी चाय नहीं पीता।
तो दीगु दादलो मिग्गेलो बापा.	वह लंबा आदमी मेरा बाप है।
ती गुड्डि बायल तागेली मांय.	वह नाटी औरत उसकी मां है।
हो बूकु म्हारोगु न्हंय.	यह किताब महंगी नहीं।
तें कापड भो म्हारग.	वह कपडा बहुत महंगा है।
तें पेन वायट, एक चांग पेन हाडि.	वह कलम खराब है, एक अच्छी कलम लाओ।
चांग धवें कागत हाडि.	अच्छा सफ़ेद काग़ज़ लाओ।
ह्या गावान्तु म्हम्त घरां आसात.	इस गाव में बहुत घर हैं।

(आ)

चेडो चेडुवा परस व्होडु (व्हडु).	लडका लडकी से बडा है।
चेडूं चेडया परस सान.	लडकी लडके की अपेक्षा छोटी है।
हो घोडो त्या घोडी परस चांगु.	यह घोडा उस घोडी से अच्छा है।
तो मनीषु हांगा चड्डु धनवन्तु.	वह आदमी यहाँ सबसे धनवान है।
हें फळ सग्ग फळां परस गोड.	यह फल सब फलों से मीठा है।
हें पुस्तक पतल आसा.	यह पुस्तक पतली है।

ंकणी में अनुवाद कीजिये :—

) राम अच्छा लडका है। देवकी एक छोटी लडकी है। वह दमी मोटा है। वे मीठे फल खाते हैं। वह केला खट्टा है, उसे त खाओ। वह औरत लंबी है, मोटी नहीं। एरणाकुलम बडा हर है। कारनकोडम एक छोटा गाँव है। वह कागज़ चौडा हीं। वे ये मीठे फल कहाँ से लाते हैं? वह मोटी लडकी मेरी हन है। सीता अच्छी कोंकणी सीखती है। यह घर बडा नहीं । वे बहुत खराब लडके हैं। यह महल छोटा है। वह यह ला कपडा कहाँ से लाता है? यह मेज़ छोटी है। थोडा पानी ओ। दूकान से अच्छी किताब लाओ। यह कमरा लंबा नहीं, डा है। यह भाषा कठिन नहीं, आसान है। कागज़ का रंग फ़ेद है।

) यह जगह कोचीन की अपेक्षा गरम है। यहाँ सबसे पुराना कर कौन है। यह मेरे दोस्त का सब से छोटा लडका है। ह लडकी उस लडके से बडी है। वह बच्चा इस से लंबा है। ह बच्चा इससे लंबा है। लक्ष्मण राम का छोटा भाई है। राम क्ष्मी की छोटी बहन है। कोंकणी हिन्दी से आसान है। मेरी ताब सबसे छोटी है। वह लडका इस लडकी से बडा है। यह ता उस घोडे से तेज़ दौडता है। हिन्दी सबसे आसान भाषा है। क ज़्यादा छोटा बरतन लाओ।

पाठ 12

सकर्मक क्रिया—भूतकाल में प्रयोग

धनी	- मालिक	परकिश्टु	- अपरिचित
दामेलो	- अमीर	दरिद्री, दुबळो	- गरीब
होची	- यही	तोची	- वही
हांगाचि	- यहीं	थांगाचि	- वहीं
खंयोची	- कहीं	हांगाचो	- यहाँ का
खंचो, खंयचो	- कहाँ का	थांगाचो	- वहाँ का
तसलो, तस्सलो	- वैसा, उस प्रकार का	अशलो	- ऐसा, इस प्रकार का
कसलो, कस्सलो	- कैसा, किस प्रकार का	इनाम	- इनाम
व्रिन्दुंक	- फेंकना	फारुंक	- चुराना
विचारुंक, निमगुंक, नींगुंक	- पूछना	मार्गुंक	- माँगना
विकुंक	- बेचना	मोल्लाक घेवुंक	- खरीदना
आपडुंक, हाथ लावुंक	- छूना, हाथ लगाना	ओंकुंक	- कै करना
जीकुंक	- जीतना	हारवुंक	- हारना
चडुंक	- चढना	देवुंक	- उतरना
झुजुंक	- लडना	झूज	- लडाई
न्हेसुंक	- पहनना	पांगरुंक	- ओढना
विसरुंक	- भूलना	उगडासु, उडगासु	- याद

क, भेत्तुंक, ोडुंक	- टूटना	तुण्टौंक, भेत्तुंक, मोडुंक	- तोडना
जावुंक	- जागना	जागौंक	- जगाना
क, रवकौंक (Pour)	- डालना	उटकरावुंक	- खडा करना
ी, कापु, कडि	- टुकडा	नेवरी	- गुलगुला
चो	- नाई	खोल्लो	- प्याला
	- जेब	रजा	- छुट्टी
द	- दवा	डाक	- डाक
	- जूता	लेक	- हिसाब
यु	- आफ़त	आपण	- आप (oneself)
ापीं; आप्याप	- स्वयं, खुद	लुगट	- कपडा
	- सारी		

क क्रिया भूतकाल में

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं – सकर्मक और अकर्मक

जब सकर्मक क्रियायें भूतकाल में प्रयुक्त होती हैं, तब कर्ता थ एकवचन में 'न' और बहुवचन में 'नी' प्रत्यय का प्रयोग है। लेकिन हांव, तूं, आपण और कोण-इन सर्वनामों के एं' और तो, ती, तें; हो, ही, हें; जो, जी, जें (जो)—इन मों के एकवचन रूप के साथ 'णें' और बबुवचन रूप के साथ का प्रयोग होता है। इन प्रत्ययों के लगने पर सर्वनामों का ान्तर होता है, उनपर पहले ही विचार हो चुका है।

सकर्मक भूतकाल की क्रिया, लिंग, वचन में कर्म से अन्वि
होती है। जैसे :—

सीतेन केळें खालें (खेल्लें). – सीता ने केला खाया।
रामान रोटी खाली (खेल्ली). – राम ने रोटी खायी।
ताणें आम्बे खाले (खेल्ले). – उसने आम खाये।
ताणीं एकु आम्बो खालो (खेल्लो). – उन्होंने एक आम खाया।

लेकिन कर्म लुप्त हो तो क्रिया अन्य पुरुष नपुंसकलिंग ए
वचन में रहती है। जैसे :—

ताणीं खालें (खेल्लें). – उन्होंने खाया।
सीतेन खालें (खेल्लें). – सीता ने खाया।
तुमी कितें खालें? (खेल्लें) – आपने क्या खाया?
आमी वाचलें. – हम ने पढा।

सकर्मक क्रिया का यह प्रयोग हिन्दी को सकर्मक क्रिया (भूत
काल) के प्रयोग के समान है।

लेकिन निम्न लिखित क्रियायें अपवाद हैं। इनका प्रयो
किसी दूसरी अकर्मक क्रिया के समान होता है। ये लिंग-वचन
में कर्ता से अन्वित होती हैं और कर्ता के साथ कोई प्रत्यय लगाय
नहीं जाता।

जेवुंक	जेवलो
उल्लौंक	उल्लैलो
ओंकुंक	ओंकलो
खेळुंक	खेळ्ळो
पीऊंक	पिल्लो (पीलो)
विसरुंक	विसरलो

चडुंक	चडलो (चळ्ळो)
झूजुंक	झूजलो
न्हेसुंक	न्हेसलो (न्हेसीलो)
शीकुंक	शीकलो (शिक्कलो)
चोउंक	चोयलो

वाक्य

न केळीं खालीं (खेल्लीं).	कृष्ण ने केले खाये।
शीत जेवलो.	राम ने भात खाया।
कालि हांगा आसलों.	मैं कल इधर था।
लाडु खालो (खेल्लो).	मैं ने लड्डू खाया।
न नेवरी केली (केल्ली).	मांने गुलगुला बनाया।
काप केले.	उसने टुकडे बनाये।
चोराक धरलो.	हमने चोरको पकडा।
चोरांक धरले.	मैं ने चोरोंको पकडा।
न सीतेक धाडली.	रामने सीताको भेजा।
ाका दुड्डु दिलोना.	तुमने मुझको पैसा नहीं दिया।
केळसंचाक आपैलो.	उन्होंने नाई को बुलाया।
तिक्का आपैली.	मैं ने उसको बुलाया।
तिणें आयकलेना.	लेकिन उसने नहीं सुना।
ाय तय्यार केलीवे?	तुमने चाय तय्यार की?
ा चेरडाक कित्याक मारलें?	तुमने इस बच्चे को क्यों मारा?
ताका विचारलें.	मैंने उससे पूछा।
आजि एक पुस्तक घतलें.	हमने आज एक पुस्तक खरीदी।
चीटि बरयली.	उसने चिट्ठी लिखी।
माका कांय सांगलेना.	उसने मुझसे कुछ नहीं कहा।

तुवें गोंय देकलें वे ?	क्या तुमने गोवा देखा ?
ताणें माका हो बूकु दिल्ला.	उसने मुझे यह किताब दी है।
तुमी कवड कल्लेंवे ?	क्या तुमने दरवाज़ा खोला है।
ते शेळ उदक पिल्ले.	उन्होंने ठंडा पानी पिया।
ताणें मिग्गेलें पेन फारलें.	उसने मेरी कलम चुरायी।
मिग्गेलो खोल्लो कोणे भेत्तीलो ?	मेरा प्याला किसने तोडा ?
तुवें तागलें जेवण हाळ्ळेंवें ?	तुम उसका खाना लाये ?
तागेल्या चेल्लेक तुवें देकलीवे ?	उसकी लडकी को तुमने देखी है
आमी देकलीना.	हमने न देखा है।
तुवें मिग्गेलें मुण्ड खंय दवरलें !	तुमने मेरा कपडा कहाँ रखा ?
ताणें ओक्कद घेतलें.	उसने दवा लिया।
ताणें तीन रुपये मागले, जलयारि हांवे ताका एकु रुपया दिलो.	उसने तीन रुपये माँगे, लेकिन मैंने उसको एक रुपया दिया।
ताणें आमगेलें पेन्सिल मोळ्ळें (मोडलें)	उसने हमारा पेन्सिल तोड लिया

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

उसने हमारी किताब नहीं देखी। आप वहाँ गये हैं ? यह पत्थर किसने फेंका ? हम ने कल आपको बुलाया था ? आप क्यों नहीं आये ? तुमने अबतक यह चिट्ठी क्यों नहीं पढी उन्होंने चोरों को पकड लिया। यह चिट्ठी किसने लिखी ? हमने तुम्हारी चिट्ठी नहीं देखी। हमने खत देकर चपरासी को दफत भेजा था। उसने वह चिट्ठी रामको नहीं दी। उसने मेरी कलम चुरायी। उस आदमी ने हमको बहुत तक्लीफ़ दी है आज तुमने पानी नहीं दिया है। उसने अब तक दवा क्यों नहीं

? उसने वह किताब मेरे मित्रको दी थी। उसने हम को बुलाया। यह पुस्तक तुमने कहाँ से खरीदी? हमने बहुत ाबें पढी हैं। उसने मुझे आज सुबह-सवेरे जगाया।

पाठ 13

संबन्ध सूचक और क्रिया विशेषण

र, ऊंच	- ऊपर	मुक्कारि, फूडे	- आगे, सामने
शश, मागल्यान, फाटीं	- पीछे	सकळ, खाल, पोन्दाक	- नीचे
, आदिं, पैलें, ुरथम, प्रथम	- पहले	मागीरि, अनन्तर, उपरान्ते	- बाद
ी, फूडान्तु, ्हार्यान्तु	- पास, साथ	धूरा	- दूर
ाकडेन	- दायीं तरफ़	दावेकडेन	- बायीं तरफ़
भारि, मूळि, सुर्वेक	- शुरू में	आखीर	- अन्त में
दम	- एकदम	पर्यन्त	- तक
ीं	- हाल ही में	उज्जो	- दायाँ, आग
काळि, ाांय	- हमेशा	गदी, भाशेन, वरी, सरी	- रीति से
कडेन	- तरफ़	विणें	- बिना
न	- से, ज़रिये (via)	गूणि, खातीर, बगेक	- केलिये

उपराटें, परतें	- उलटे	थाकूनु, साकूनु	- से (from)
पसावत, पासून	- बारे में	आड	- आड
मुद्दाम	- जानबूझकर	शिवाय	- सिवा
मोहें	- बीच में	आतांचि	- अभी
भोंवतणी	- चारों तरफ़	दावो	- बायाँ

संबन्ध सूचक अव्यय साधारणतया संज्ञा या सर्वनाम के संबन्ध कारक बहुवचन रूप के साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे :—

रामाचे लागी – राम के पास
मेजाचे पोन्दाक – मेज़ के नीचे
ताजे मागल्यान – उसके पीछे
आमचे मुक्कारि – हमारे सामने
कूडाचे भित्तरि – कमरे के अन्दर
तागेले बगेक – उसके लिये
तुमचे गूणि – आप केलिये
तुजे फूडे – तुम्हारे पहले

संबन्ध कारक चिह्न का लोप करके केवल संज्ञा के विकृत रूप के साथ भी इनका प्रयोग होता है। जैसे :—

घरा (चे) मागल्यान – घर के पीछे
रामा (चे) लागी – राम के पास
मेजां (चे) खाल – मेज़ों के नीचे

संबन्ध सूचक अव्यय 'कडे' (तरफ़=towards) सीधा संज्ञा के साथ भी प्रयुक्त होता है। जैसे :—

घरकडे – घर की तरफ़ (घर को)

संबन्ध सूचक अव्यय 'थाकूनु' (थाकून) (from) संज्ञा के
धिकरण कारक रूप के साथ प्रयुक्त होता है। जैसे :—

मेजारि थाकूनु	– मेज़ पर से
मेजान्तु थाकूनु	– मेज़ में से
घरान्तु थाकूनु	– घर में से

ऊपर बताये गये सभी संबन्ध सूचक अव्यय संज्ञा के समान
ुक्त होते हैं। जैसे :—

मोद्देंची वाट	– बीच का रास्ता
लागींचो गांवु	– पास का गाँव
मागल्यांचो मनीषु	– पीछे का आदमी

ये सभी संबन्ध सूचक क्रिया विशेषण भी बनते हैं। जैसे :–

उंच चोयि	– ऊपर देखो
भित्तरि यो	– अन्दर आओ
भायर बैसुनाका	– बाहर मत बैठो
खाल चोवुनाका	– नीचे मत देखो

वाक्य

ग्गेल्या बायलेक पत्र आसावे ?	मेरी पत्नी केलिये कोई पत्र है ?
, तिका कांय पत्र ना.	नहीं, उसके लिये कोई पत्र नहीं।
ग्गेल्या भावाक एक पत्र आसा.	उसके भाई को एक पत्र है।
ह्या घरालागी राबता.	वह इस घर के पास रहता है।
ां भित्तरि कोण आसात ?	घरों के अन्दर कौन हैं ?
ा भायर तागेलो भावु राबला.	कमरे के बाहर उसका भाई खडा है।

माजेलागी तूं दूकानान्तु एतावे ?	क्या, तुम मेरे साथ दूकान को आते हो ?
आमचे मागल्यान चमक.	हमारे पीछे चलो ।
मुक्कारि चमकुनाका.	सामने मत चलो ।
दोनि वरां फूडे आमी थांगा पांवतले.	दो बजे से पहले हम वहाँ पहुँचेंगे
त्या मेजाचे ऊंच कितें आसा ?	उस मेज़ के ऊपर क्या है ?
खंचेंय घर ह्या घरा बराबर न्हय.	कोई घर इस घर के बराबर नहीं ।
ह्या कूडा भित्तरि कोण आसा.	इस कमरे के अन्दर कौन है ?
पुस्तका वयरि कांय ना.	पुस्तक के ऊपर कुछ नहीं ।
तूं आजि तागेल्या घरकडे वतलोवे ?	क्या, तुम आज उसके घर जाओगे ?
वाटे मोट्टें एक रूकु पडला (पळ्ळा).	रास्ते के मध्य में एक पेड गिरा है ।
ताजे पासावत हांव तुका सांगन.	उसके बारे में मैं तुमको बताऊँगा।
तूं भायर वच.	तुम बाहर जाओ ।
ते मागल्यान एतात.	वे पीछे आते हैं ।
तो खंय ना.	वह कहीं नहीं ।
तो भायर थाकूनु आयला.	वह बाहर से आया है ।
तो वयरि थाकूनु येतालो.	वह ऊपर से आता था ।
हें माका बरें लागता.	यह मुझे अच्छा लगता है ।
सकल चोवुनाका.	नीचे मत देखो ।
लागी यो.	पास आओ ।
धूरा बैस.	दूर बैठो ।
उज्जे कडेन चमक.	दायीं तरफ़ चलो ।

णी में अनुवाद कीजिये :—

आज वह तुम्हारे लिये एक किताब लाया है। मेरा घर ज के पास है। कुछ लोग कमरे के अन्दर हैं, कुछ लोग बाहर उनके साथ कौन जायगा? राम के घर के सामने एक पेड यह किताब मेज़ पर रखो। कल तुम सात बजे के बाद मेरे आओ। मैं इस के बारे में कुछ नहीं जानता। वह तुम्हारे ा यहाँ नहीं आयेगा। मेरा भाई उसके बराबर होशियार नहीं मेरी किताब मेज़ के नीचे है। वह मेरे पास दौड कर ा। वह तुम्हारे साथ कहाँ जायेगा? हम अगले साल मद्रास ंगे। पिछले साल आप कहाँ थे? हम तुम्हारी भाषा अच्छी ं समझते। वह कुरसी अन्दर लाओ और यह मेज़ बाहर ले ओ। वह हमेशा दफ़्तर में ज़ोर से बोलता है। तुम कहाँ से ते हो?

पाठ 14

संख्यावाचक विशेषण

पाव	- पाव	सवाय	- सवा
सावाय दोनि	- सवा दो	सवाय तीन	- सवा तीन
अर्दु	- आधा	देडु	- डेढ
अड्डेच	- ढाई	औंट (ओवूट)	- साढे तीन
चव्वड	- साढे चार	पंचड	- साढे पाँच
साडि से	- साढे छे	सत्तड	- साढे सात

	अठड	- साढे आठ	णव्वाड	- साढे नौ
	दस्साड	- साढे दस		
2.	इकरा साडद	- साढे ग्यारह	बारा साडद	- साढे बारह
	तेरा साडद	- साढे तेरह	पाऊण, पौन	- पौन
3.	पाउणि एक	- पौने एक	पाउणि दोनि	- पौने दो
	पाउणि तीन	- पौने तीन	एक	- 1
	दोनि	- 2	तीन	- 3
	चारि	- 4	पांच	- 5
	स	- 6	सात	- 7
	आठ	- 8	णव्व	- 9
	धा	- 10	इकरा	- 11
	बारा	- 12		
4.	पैलो, प्रथमलो	- पहला	दूसरो	- दूसरा
	तिस्सरो	- तीसरा	चौतो	- चौथा
	पांचवो	- पाँचवाँ	सट्टो	- छट्टा
	सातवो	- सातवाँ	आठवो	- आठवाँ
	णव्वावो	- नव्वाँ	धावो	- दसवाँ
5.	दोगंय, दोगींय, दोनींय	- दोनों	तेगंय, तेगींय, तीनींय	- तीनों
	चौगंय, चौगींय, चारीय	- चारों	पांचय	- पाँचों
	सयीय (सईय)	- छहों	सातय	- सातों
6.	फान्तां, पावटी	- गुना	दोनिफान्ता, दोनिपावटी	- दुगुना

1, 2, 3, 4, 5 और 6 का विवरण नीचे दिया जाता है :-

जैसे हिन्दी में गणनावाचक विशेषण के पूर्व 'सवा' जोड दिया जाता है, वैसे कोंकणी में गणनावाचक विशेषण के पूर्व 'सवाय' लगाया जाता है।

जैसे हिन्दी में तीन से लेकर गणनावाचक विशेषण के पूर्व 'साढे' जोड दिया जाता है, वैसे कोंकणी में ग्यारह से लेकर गणनावाचक विशेषणों के साथ 'साडद' जोड दिया जाता है।

जैसे हिन्दी में गणनावाचक विशेषण के पूर्व 'पौने' लगाया जाता है, वैसे कोंकणी में 'पाउणि' (पौणि) लगाया जाता है।

जैसे हिन्दी में गणनावाचक विशेषणों के अन्त में 'वाँ' जोडने से क्रम वाचक विशेषण बनता है, वैसे कोंकणी में 'वो' जोडने से बनता है।

जैसे हिन्दी में गणनावाचक विशेषणों के अन्त में 'ओं' लगाने से समुदायवाचक विशेषण बनता है, वैसे कोंकणी में 'अंय' लगाने से बनता है।

जैसे हिन्दी में गणनावाचक विशेषणों के अन्त में 'गुना' लगाकर आवृत्ति वाचक विशेषण बनाते हैं, वैसे कोंकणी में 'फान्तां' या 'पावटी' लगाकर बनाते हैं।

गणनावाचक शब्द दुहराये जाने पर प्रत्येक बोधक विशेषण का अर्थ देते हैं। जैसे :— एकएक (एकेक) – एक एक; स स – छे छे; आठाठ – आठ आठ

लेकिन निम्न लिखित इसके अपवाद हैं।

दोंदोनि – दो दो; तींतीनि – तीन तीन;

चाचारि – चार चार; पांपांच – पाँच पाँच
सातात – सात सात

दोग, तेग, चौग—ये संख्या वाचक विशेषण केवल पुरुष-वाचक हैं।

दोग दादले	– दो आदमी
दोगीं बायलो	– दो औरतें
दोगां, चेडुवां	– दो लडकियाँ

वाक्य

हीं स कदेलां थांगा व्हर.	ये छे कुरसियाँ वहाँ ले जाओ।
तीं पांच केळि हांगा हाडि.	वे पाँच केले यहाँ लाओ।
तो हांगा केन्ना येतलो?	वह यहाँ कब आयेगा?
तो हांगा चारि वरांरि येतलो.	वह यहाँ चार बजे आयेगा।
तूं थांगा केन्ना वतली?	तुम वहाँ कब जाओगी?
हांव फायि सांजे साडि स वरांरि वतलीं.	मैं कल शाम साढे छे बदे जाऊँगी।
आतां वेळु किते जाला?	अब वक्त क्या हुआ?
आतां चव्वड वरां जाल्यांत.	अब साढे चार बजे हुए हैं।
हांव रोज राति सवाय आठ वरांरि चीटि बरेयतां.	मैं रोज़ रात को सवा आठ बजे चिट्ठी लिखता हूँ।
ते दोगंय हांगा थाकूनु कालि गेले.	वे दोनों यहाँ से कल गये।
तांकां एकएकु आम्बो दी.	उनको एक एक आम दे दो।
एकएक बांकारि पांच पांच जनां बैसात.	एक एक बेंच पर पाँच पाँच लोग बैठिये।

य दोनि वरांरि तूं येवनु माका देक.	कल दो बजे तुम आकर मुझे देखो। (मुझसे मिलो)
ंगा उत्तूले फान्तां आयलो ?	तुम यहाँ कितनी बार आये ?
पांच फान्तां आयलों.	मैं पाँच बार आया।

णी में अनुवाद कीजिये :—

तुम अपने कपडे साफ़ क्यों नहीं करते? तुम वह पुस्तक वो। तुम मुझसे क्यों पाँच रुपये माँगते हो? हम पौने पाँच तुम्हारे घर पहुँचेंगे। कल शाम को सवा चार बजे तुम मेरे आओ। पिछले हफ्ते तुम कहाँ गये थे? अगले महीने हम स जायेंगे। तुम अपनी किताबें आधे घटे में लाओ। उनको -चार आने दो। वे दोनों कल कहाँ गये थे? वे तीनों हिन्दी ते हैं। हम चारों कल सिनिमा देखने जायेंगे। मैं तुमको किताब के लिये दुगुना दाम दूँगा। उसने मुझे पन्द्रह आम । मैंने आज उसको चार पुस्तकें दीं। उन्होंने आज चार देकर एक कुरसी खरीदी।

पाठ 15

धातु अव्यय, धातु विशेषण, भाववाचक कृदन्त और कर्तृवाचक कृदन्त

च	- पहले ही	सुट्टी	- छुट्टी
, ऊणावु	- गलती	खरें, सत, सत्य	- सच
	- झगडा	भोवंडी	- सैर, भ्रमण

सरपळि	- हार	दम्ब्यारि	- मुफ़त
झूझ	- लडाई	पूर्वीक	- पूर्वज
भोवुंक	- सैर करना	भौंडावुंक	- सैर करान
सोडुंक, मेकळुंक	- छोडना	मेळुंक	- मिलना
सोंपुंक	- खतम होना	थारावुंक	- तय करना
झगडुंक	- झगडना	झुझुंक	- लडना
खें, खंय	- कहतें है कि	जाल्यारि (जाल्यार)	- तो (if)
नाजाल्यारि	- नहीं तो	जेन्ना-तेन्ना	- जब-तब
हेंचि न्हंय-त्या भायर	- ही नहीं–बलिक	अनुमति	- इजाज़त

1. क्रिया का साधारण रूप (धातु अव्यय)

धातु के साथ 'उंक', 'चाक' या 'पाक' प्रत्यय लगाकर कोंकणी में क्रिया का साधारण रूप बनाया जाता है जो वाक्य में कर्ता या कर्म बनता है। क्रिया में उद्देश्य को सूचित करने केलिये भी इसी रूप का प्रयोग वाक्य में होता है। जैसे: —

हांव तें हाडुंक विसरलों. – मैं वह लाना भूल गया।
तो हांगा येवंचाक विसरलो. – वह यहाँ आना भूल गया।
ताचे लागि हें काम करुंक सांग. – उससे यह काम करने को कहो। (उससे कहो कि वह यह काम करे)
तो जेवंचाक वत्ता. – वह खाने जाता है।

अकारान्त धातुओं को छोडकर बाकी धातुओं के साथ 'उंक' प्रत्यय लगने पर 'उं' के स्थान पर 'वुं' आता है। जैसे :—

जे + उंक = जेवुंक

खा+उंक = खावुंक
उल्लै+उंक = उल्लोवुंक (उल्लौंक)

अकारान्त धातुओं को छोडकर बाकी धातुओं के साथ 'चाक'
य लगने से पहले 'वं' आता है। जैसे :—

जे + चाक = जेवंचाक
खा + चाक = खावंचाक

*धातुविशेषण

धातु के साथ चो–ची–चें; चे–च्यो–चीं प्रत्यय लगाकर
णो में धातु विशेषण बनाया जाता है। इसका नपुंसकलिंग रूप
ार्थक संज्ञा का काम देता है। जैसे :—

खेळचो – खेलनेवाला, खेलता हुआ
खेळची – खेलनेवाली, खेलती हुई
खेळचें – खेलनेवाला, खेलता हुआ (नपुं.)
खेळचे – खेलनेवाले, खेलते हुए
खेळच्यो – खेलनेवालियाँ, खेलती हुईं
खेळचीं – खेलनेवाले, खेलते हुए (नपुं.)

ा आजि थांगा वचें आसा. (क्रियार्थक संज्ञा) – उसको आज वहाँ जाना है।
रचें आनी कौण करतलें ? (क्रियार्थक संज्ञा) – जो तुम करते हो वह और कौण करेगा ?

---

*क्रिया के इस रूप से विशेषण वाक्य का बोध होता है।
खेळचो (खेळतलो) चेलो = जो लडका खेलता है वह
खेळची (खेळतिली) चेली = जो लड़की खेलती है वह
मेलेल्यो बायलो = जो औरतें मरी हैं वे

वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ ल्लो–ल्ली–ल्लें; ल्ले–ल्यो–ल्ली जोडकर भी धातु विशेषण बनाया जाता है। जैसे :—

	एकवचन	बहुबचन
पु.	वत्तल्लो – जाता हुआ	वत्तल्ले – जाते हुए
स्त्री.	वत्तल्ली – जाती हुई	वत्तल्यो – जाती हुईं
नपुं.	वत्तल्लें – जाता हुआ	वत्तल्लीं – जाते हुए

भूतकालिक कृदन्त के साथ लो–ली–लें; ले–ल्यो–लीं–जोड कर भी धातु विशेषण बनाया जाता है। जैसे :—

(आयलोलो) आयलेलो मनीषु	– आया आदमी
(गेलोलो) गेलेलो मनीषु	– गया आदमी
(मेलली) मेलेली बायल	– मरी औरत
(मेलल्यो) मेलेल्यो बायलो	– मरी औरतें

इन धातुविशेषणों का निषेधार्थ रूप धातु के साथ नातिल्लो–नातिल्ली–नातिल्लें; नातिल्ले–नातिल्यो–नातिल्लीं–जोडकर बनाया जाता है। जैसे :—

करनातिल्लो	– ना करनेवाला (जो नहीं करता है वह)
खेळनातिल्लो	– ना खेलनेवाला (जो नहीं खेलता है वह)

3. भाववाचक कृदन्त

धातु के साथ 'प' लगाकर कोंकणी में भाववाचक कृदन्त बनाया ज़ाता है। जैसे :—

करुंक	करप	करनी
उल्लौंक	उल्लौप	बोल-बोली

खाउंक	खावप	खाना
भरुंक	भरप	भरनी
हासुंक	हासप	हँसी

कर्तृवाचक कृदन्त

धातु के साथ 'पी' जोडकर कोंकणी में कर्तृवाचक कृदन्त ा जाता है। इस के द्वारा धातुज शब्द से कर्तृत्व का बोध है। जैसे :—

करुंक	करपी	करनेवाला
वाजुंक	वाजपी	बजानेवाला
रान्दुक	रान्दपी	पकानेवाला (बावर्ची)
बरौंक	बरौपी (बरपी)	लिखनेवाला (लेखक)

वाक्य

ो विकचो कालि हांगा आयलोलो.	आम बेचने वाला कल यहाँ आया था।
ली बायल त्या चेरडाची आवय.	जानेवाली औरत उस बच्चे की माँ (है)।
लो दादलो तुगेलो कोण?	आनेवाला आदमी तुम्हारा कौन (है)?
वाचुंक कळचो कोण आसा?	यहाँ पढना जाननेवाला कौन है?
तो हांगा आयला तेन्ना तूं खंय गेल्लेली?	जब वह यहाँ आया था तब तुम कहाँ गयी थी?
वचें तुका चांग.	वहाँ जाना तुम्हारे लिये अच्छा (है)।
आमी वत्ताले तेन्ना ते येत्ताले.	जब हम जा रहे थे (जाते थे) तब वे आ रहे थे (आते थे)।

तूं फायि शाळेन्तु यो; नाजाल्यारि हांव थांगा येतां.	तुम कल शाला में आओ; नहं तो मैं वहाँ आता हूँ
ताणें सांगचें फूडेचि रामु हांगा पावलो.	उसके कहने से पहले ही रा यहाँ पहुँचा
तो हांगा आयलो हेंचि न्हंय त्या भायर मागेलो बुकु घेवनु गेलो.	वह यहाँ आया ही नहीं बल्वि मेरी पुस्तक भी ले गया।
तो वत्ता जाल्यारि माका सांग.	अगर वह जाये तो मुझसे कहो
तूं थांगा बैसतोलो जाल्यारि हांव वतां.	अगर तुम वहाँ बैठो तो मैं जाता हूँ।
तो येना जाल्यारि तूं वच.	अगर वह न आये तो तुम जाओ
वाक्य म्हळयार कितें ?	वाक्य कहें तो क्या ?
वाक्य म्हळयार पुरतो अर्थु आसिल्या उतरांचें गाठलें (उतरांचो समूह)	वाक्य कहें तो पूर्ण अर्थ बोधक शब्दों का समूह
*ताणें येवना म्हणु तुका कोणें सांगलें ?	किसने तुम से कहा कि वह न आयेगा ?
तो हांगा वाचुंक आयला.	वह यहाँ पढने आया है।
तुका बरौंचाक कळतावे ?	तुमको लिखना मालूम है ?
ताणें बरौंचें चांग आसा.	जो वह लिखता है, वह सुन्दर है
तागेलें बरौप चांग आसा.	उसकी लिखावट अच्छी है।
तो हांगा केदनांयि खेळुंक येता.	वह यहाँ रोज खेलने आता है।
तो चोरु खंय.	कहते हैं कि वह चोर है।
ताणें येवना खंय.	कहतें हैं कि वह नहीं आयेगा।

---

* पहले संज्ञा वाक्य का प्रयोग करके पीछे 'म्हणु' के साथ प्रधान वाक्य लिखना चाहिये।

ायि हांगा येतात खंय.	कहते हैं कि वे कल यहाँ आते हैं।
येवंचे फूडे तो चेल्लो लो वायटु न्हंय आसिलो	यहाँ आने से पहले वह लडका इतना बुरा नहीं था।
भारी वायटु जाला.	अब बहुत बुरा हुआ है।
पी फ़िडिल वाजता.	वजानेवाला फ़िडिल बजाता है।
पी रान्दीता. (रान्दता)	बावर्ची खाना पकाता है।

णी में अनुवाद कीजिये :—

वह आज तुमसे मिलेगा। तुमको महीने में कितना रुपया ता है? तुम क्यों झगडते हो? तुम ने उसके बारे में क्या य किया? जब मैं कल तुम्हारे घर आया था तब तुम कहाँ थे? वह एक बेवकूफ़ ही नहीं बल्कि एक चोर भी है। अगर कल रात नौ बजे मेरे घर न आओगे तो ज़रूर मैं बाहर चला गा। उसको छोड दो, बान्धकर मत रखो। वह सैर केलिये से निकला। 1940 में जर्मनी और इंगलेंड में लडाई हुई थी। से देखें तो पहाड छोटा देख पडता है। कहते हैं कि कल यहाँ तजी आयेंगे। कहते हैं कि हमारे पूर्वज बन्दर थे। उनके काम करना तुम्हारेलिये अच्छा है। राम ने कहा कि मैं कल गा। तुम्हारे लिये उस घर में रहना अच्छा है। अगर तुम ी तरह पढोगे तो परीक्षा में पास हो जाओगे। अगर वह तो मुझसे कहो। वह जानेवाला आदमी तुम्हारा कौन है? मरा हुआ लडका मेरा भाई है। गवैया गाना गाता है। ी करनी देखो। कहना छोडकर करनी करो। उसकी चाल र मैं ने निश्चय किया कि वह मेरे दोस्त का बडा भाई है। ने कहा कि मैं उससे झगडा?

पाठ 16

आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रिया–'चाहिये', 'होना' और पडना

ताकली, मातें	- सिर	फाटि	- पीठ
पोट	- पेट	कूरटु	- कमर
पिट्टी, पीट	- आटा	कायलोळी	- एक पकवान
[1]सांकवु, सांकोवु	- पुल	[1]वर्ष	- साल
थोण्टो, पांगळो	- लंगडा	कुरडो	- अन्धा
काणसो	- तिरछी दृष्टिवाला	केप्पो	- बहरा
मोन्नो	- गूंगा	पोंग	- कूबड
हाफ्तो, सप्ताह	- सप्ताह	मासु, म्हयनो, मैनो	- महीना
औंदू	- इस साल	पोरूं	- गत साल
[1]परारूं	- परगतसाल	एकलोचि	- अकेला
आयकुंक	- सुनना	आयकौंक	- सुनाना
धावंडावुंक	- दौडाना, चलाना	खरशेवुंक	- थक जाना, हांपना
खरशावुंक	- थका देना	जाय	- चाहिये

नाका (एक.); नाकात (बहु.) – नहीं चाहिये।

जाय - चाहिये

ज़रूरत इच्छा और आग्रह प्रकट करने के लिये जैसे हिन्दी में मुख्य क्रिया 'चाहिये' का प्रयोग होता है, वैसे कोंकणी में 'जाय' का प्रयोग होता है। 'नाका' (नहीं चाहिये) इसका निषेधार्थ रूप है। कर्ता हमेशा संप्रदान कारक में आता है। जैसे :–

माका जाय. - मुझको चाहिये।
माकां नाकां. - मुझको नहीं चाहिये।
आमकां दूद जाय. - हमको दूध चाहिये।
तुमकां इतें जाय ? - आपको क्या चाहिये ?
आमका कांय नाका. - हमको कुछ नहीं चाहिये।
तुमकां चाय जायवे ? - क्या, आप को चाय चाहिये।
नाका, आमकां काफ़ी पूरो. - नहीं, हमको काफ़ी बस (है)।
आमगेली भास आमकां जाय. - हमारी भाषा हमको चाहिये।

कोंकणीमें 'जाय' (चाहिये) का प्रयोग प्रायः सहायक क्रिया* रूप में नहीं होता। लेकिन क्रिया के साधारण रूप के अन्तिम का 'का' करके चाहिये का अर्थ निकाला जाता है। जैसे :-

धावुंक - धावंका दौडना चाहिये।
उल्लौंक - उल्लौंका बोलना चाहिये।

कर्ता के साथ एकवचन में 'न' और बहुवचन में 'नी' जोड ा जाता है। जैसे :-

ड्डुवांनी कोंकणी शिकुका (शिकुंक जाय) - बच्चों को कोंकणी सीखनी चाहिये।
ान फायि थांगा वचुका (वचुंक जाय) - रामको कल वहां जाना चाहिये।

क्रिया हमेशा अन्य पुरुष एकवचन में रहती है। इसका

* जब सहायक क्रिया के रूप में 'जाय' का प्रयोग होता है, तब मुख्य क्रिया के धातु अव्यय रूप के साथ इसका प्रयोग होता है। जैसे :—

धावुंक जाय - दौडना चाहिये।
उल्लौंक जाय - बोलना चाहिये।

निषेधार्थ रूप धातु के साधारण रूप के साथ 'नज[1]' जोडकर बनाया जाता है। जैसे :-

करुंक[1] नज. - करना नहीं चाहिये।

येवंचाक नज[1]. - आना नहीं चाहिये।

पीवंचाक नज[1]. - पीना नहीं चाहिये।

धावंचाक नज[1]. - दौडना नहीं चाहिये।

तुवें मेजारि बैसुंक नज. - तुम को मेज़पर बैठना नहीं चाहिये।

ताणें हें फळ खावंचाक नज[1]. - उसको यह फल खाना नहीं चाहिये।

चेरडुवांनी थांगा वचाक नज[1]. - बच्चों को वहाँ जाना नहीं चाहिये।

तुवें उल्लौंचाक नज[1]. - तुम को बोलना नहीं चाहिये।

आमी घरान्तु मलबारी उल्लौंचाक नज[1]. - हम को घर में मलयालम बोलनी नहीं चाहिये।

लेकिन धातु के साथ 'का' लगाकर उसके परे 'नाका' जोडकर जो निषेधार्थ रूप बनाया जाता है, उसका अर्थ कुछ और ही निकलता है।

तुवें वचका नाका - तुमको जाने की ज़रूरत नहीं।

तांणी येवंका नाका - उनको आने की ज़रूरत नहीं।

कोंकणी में मुख्य क्रिया के साधारण रूप के अन्तिम 'क' का 'का' करके उसके साथ 'जावुंक' क्रिया के विभिन्न रूप जोडकर आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रिया बनायी जाती है। जैसे :-

माका थांगा वचुका जाता - मुझे वहाँ जाना पडता है।

मकां थांगा वचुका जालें. - हमको वहाँ जाना पडा।
का हांगा येवंका जातलें. - उसको यहाँ आना पडेगा।

सहायक क्रिया के लिंग वचन कर्म के अनुसार बदलते हैं।
:—

। रोंटी खावंका जातली. - तुमको रोटी खानी पडेगी।
। आम्बो खावंका जातलो. - तुमको आम खाना पडेगा।

इसका निषेधार्थ रूप 'जावुंक' क्रिया के विभिन्न काल के
धार्थ रूप जोडकर बनाये जाते हैं। जैसे :—

का थांगा वचुका जायना. - मुझे वहाँ जाना नहीं पडता।
मकां थांगा वचुका जालेंना. - हमको वहाँ जाना नहीं पडा।
का हांगा येवंका जावंचीना. - उसको यहाँ आना नहीं पडेगा।

कोंकणी में मुख्या क्रिया के साधारण रूप के साथ 'आसुंक'
ता) क्रिया के विभिन्न काल के रूप जोड कर भी आवश्यकता
क संयुक्त क्रिया बनायी जाती है। जैसे :—

का थांगा वचाक आसा (वचा आसा) - मुझे वहाँ जाना है।

का थांगा वचाक आसतलें (वचा आसतलें) - मुझे वहाँ जाना होगा।

का थांगा वचक आसलें (वचा आसलें) - मुझे वहाँ जाना था।

'आसुंक' क्रिया के विभिन्न निषेधार्थ रूप जोड कर इस क्रिया
निषेधार्थ रूप बनाया जाता है। जैसे :—

का थांगा वचाक ना (वचाना) - मुझे वहाँ जाना नहीं है।

का थांगा वचाक आसना (वचा आसना) - मुझे वहाँ जाना न होगा।

माका थांगा वचाक नासलें (वचा ना आसलें) } - मुझे वहाँ जाना नहीं था ।

'होना' और 'पडना' के प्रयोग में हिन्दी में जो अर्थ-भेद है वही कोंकणी में भी है ।

वाक्य

तांकां कितें जाय म्हणु निम्मंगि.	पूछो कि उनको क्या चाहिये ।
आमकां कांय नाका म्हणु सांग.	कहो कि हमको कुछ नहीं चाहिये।
तांकां दोनि आम्बे जाय.	उनको दो आम चाहिये ।
रामाक पिवंचाक दूद जाय.	रामको पीने दूध चाहिये ।
तुमी हिन्दी वाचका.	तुम को हिन्दी पढनी चाहिये ।
तांणी फायि हांगा येवंका.	उनको कल यहाँ आना चाहिये।
ताणें हें काम करका नाका.	उसको यह काम करना नहीं चाहिये। (करने की ज़रूरत नहीं)
तुवें फायि थांगा वचाक नज.	तुमको कल वहाँ जाना नहीं चाहिये ।
*माका फायि (फाय) काळेजान्तु वचका.	मुझको कल कालेज जाना चाहिये ।
तुवें बरप बरोंका.	तुम को पत्र लिखना चाहिये ।
तुका उतूले मनीष जाय ?	तुमको कितने आदमी चाहिये ?
तुवें कूडान्तु वचका आसिलें.	तुमको कमरे में जाना चाहिये था ।
आमी फट्टि साँगुक नज.	हम को झूठ नहीं बोलना चाहिये ।

* जब कर्ता का प्रयोग संप्रदान कारक में होता है, तब केवल इच्छा ही प्रकट की जाती है। 'अनिवार्यता' का बोध नहीं होता ।

काागतारि तुगेले नांव बरवंका.	तुम को इस कागज़ पर अपना नाम लिखना चाहिये।
खब्बर एकदम पेटौंका.	तुम को यह खबर एकदम भेजना चाहिये।
ीं पुस्तकां नाकात.	उनको ये किताबें नहीं चाहिये।
थम माजेलागि निमगुका आसलें.	उसको पहले मुझसे पूछना चाहिये था।
चेरडुवांनी सकाळीं पांच वरांरि उट्टावंका.	सब बच्चों को सबेरे पाँच बजे उठना चाहिये।

ी में अनुवाद कीजिये :—

तुम को क्या चाहिये ? तुम को कोंकणी सीखनी चाहिये। कल सबेरे यहाँ आना चाहिये था। यह काम बहुत ज़रूरी को फौरन करना चाहिये। हमको यहाँ दस बजे आना था। कल आपको यह चिट्ठी लिखनी चाहिये थी। आप साल छुट्टी पर जाना नहीं चाहिये। हमको रोज़ छे बजे चाहिये। मुझको पंडितजी को देखना चाहिये। हमको में प्रथम श्रेणी में पास होना चाहिये। तुमको कितने फल ? हमको हमेशा सच बोलना चाहिये। हम को आपस में ा नहीं चाहिये। हमको अपनी माँ को प्यार करना चाहिये। आज घर नहीं जाना चाहिये। आपको ठंडा पानी पीना ाहिये।

पाठ 17

शक्ति बोधक संयुक्त क्रिया–'सकना'

जायत जाल्यारि (जाल्यार)	- हो सके तो	हांवें उल्लैलेलें (सांगिल्लें)	- मेरी बात
ताणें उल्लैलेलें (सांगिल्लें)	- उसकी बात	तुवें उल्लैलेलें (सांगिल्लें)	- तुम्हारी बा
जायना जाल्यारि	- हो न सके तो	सीत	- भात
पेज	- कांजी (gruel)	वोरवु (वोरोवु)	- चावल
खेळु	- खिलौना	भात	- धान
मान्दुरी, मान्दूरि	- चटाई	रूकु	- पेड
मोल	- मूल्य, दाम	भांडि	- गाडी
तळें	- तालाब	बांयि (बांयं)	- कुआं
तळयि	- बडा तालाब	सान्त	- बाज़ार
आंगडि	- दूकान	वाडो	- गली
काचेरि	- कचहरी	भायर सरुंक	- रवाना होन

कोंकणी में मुख्य क्रिया के साधारण रूप के साथ 'जावुंक' क्रिय के विभिन्न रूप ज़ोडकर शक्ति-बोधक संयुक्त क्रिया बनाई जाती है

जैसे :— खावंचाक (खावुंक) जाता – खा सकता है ।
पीवंचाक (पीवुंक) जाता – पी सकता है ।
पीवंचाक (पीवुंक) जालें – पी सका ।

वाक्य में कर्ता हमेशा संप्रदान या अपादान कारक में रहत है और क्रिया अन्य पुरुष एकवचन में रहती है । जैसे :—

ाका (माजान) धावंचाक जाता – मैं दौड सकता हूँ।
ामकां (आमचान) उल्लौंचाक जाता – हम बोल सकते हैं।
ामान (रामाचान) शीकुंक जातलें – राम सीख सकेगा।
ामकां (आमचान) कोंकणी शीकुंक जालें – हम कोंकणी सीख सके।

इसका निषेधार्थ रूप 'जावुंक' क्रिया के निषेधार्थ रूप जोड
ाया जाता है। इसके स्थान पर 'नज' जोडकर भी इसका
र्थ रूप बनाया जाता है। जैसे :—

ांगा येवंचाक जालेना – वह यहां आ नहीं सका।
धावंचाक जायना – मैं दौड नहीं सकता।
उल्लौंचाक जावंचीना – वह बोल नहीं सकेगा।
नज – मुझसे न हो सकता।
जायत – मुझसे हो सकता है।
धावंचाक नज – मैं दौड नहीं सकता।

वाक्य

इतें करका ?	तुमको क्या करना चाहिये ?
कोंकणी शिकका.	हमको कोंकणी सीखनी चाहिये।
ोटी खांवका (खावुंक जाय).	उसको रोटी खानी चाहिये।
औंदू माद्रासाक वचाक जावना.	राम इस साल मद्रास जा नहीं सकेगा।
का जाप सांगका. (सांगुंक जाय)	तुमको उसे जवाब देना चाहिये।

रामान उल्लौंका नाका.	राम को बोलना नहीं चाहिये ।
ताणें हांगा येवंका जालें.	उसको यहाँ आना पडा ।
माका हिन्दी शिकुका जातली.	मुझे हिन्दी सीखनी पडेगी ।
तुमकां आमकां सांकोवु दाकौंका जावना.	आपको हमें पुल न दिखाना पडेगा
सीतेचान आज थांगा बैसुक नज[1].	सीता आज वहाँ बैठ नहीं सकती
तुजान फाय हांगा येवंचाक जातलेंवे ?	क्या, तुम कल यहाँ आ सकोगे
माजान आज हो बूक[1] व्हरुक जावना.	मैं आज यह किताब ले जा नहीं सकूँगा
हें माजान जायना.	यह मुझसे न हो सकता ।
माका ताका देकुका.	मुझे उसे देखना चाहिये ।
माका जाप दिवंचाक जायना.	मैं जवाब नहीं दे सकता ।
तुजान हो आम्बो खावंचाक जातलेंवे ?	क्या, तुम यह आम खा सकोगे
ना, माजान खावंचाक जावना.	नहीं- मैं खा नहीं सकूँगा ।
तुमचान तांकां रामालें घर दाकौंचाक जातलेंवे ?	क्या, आप उनको राम का घर दिखा सकेंगे
माजान जातलें, हांव दाकैन.	मुझसे हो सकेगा, मैं दिखाऊँगा
आमी तांकां घर दाकौन दीवूं.	हम उनको घर दिखा देंगे ।
आमचान धारार धावंचाक नज[1].	हम जल्दी दौड नहीं सकते ।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

तुम को क्या चाहिये ? हम को हिन्दी सीखनी चाहिये उनको यह काम जल्दी करना चाहिये । राम को आज वहाँ जान

ाहिये। लडकियों को दस रोटियाँ खानी चाहिये। उनको देर करके सोना नहीं चाहिये। मुझको वहाँ जाकर उससे ा पडेगा। हम को कल सबेरे सवा चार बजे रवाना होकर जे कालेज पहुँचना पडेगा। आज शाम मुझे वहाँ जाना पडा। ांकणी बोल नहीं सकता। वह हिन्दी समझ सकता है। मैं लिख और पढ सकता हूँ। हो सके तो, समय पर आओ। या हो सकता है? कुछ नहीं हो सकता। मैं आप के साथ ल खेल नहीं सकता। क्या, आप मुझे एक कहानी सुना हैं? हो सके तो, मेरेलिये एक खिलौना लाना। तुम यहाँ पुल देख सकते हो? वह मेरी बात समझ नहीं सका। हम बा नहीं सके। हम उस सवाल का जवाब दे नहीं सके।

पाठ 18

ता बोधक संयुक्त क्रिया - 'चुकना' और आरंभ बोधक संयुक्त क्रिया - 'लगना'

	- सजा	येवंचें वर्ष	- अगला साल
देवळ	- मन्दिर	देवळी	- छोटा मन्दिर
	- टोकरा	खोट्टूळ	- टोकरी
डु	- उजाला	एकेकलो	- हर एक, एक एक
	- कारण	खोडो	- सजा
	- आरभ	जळुंक	- जलना
	- जलाना	लासुंक	- दागना, जलाना

उडौंक	- फेंकना	हासुंक	- हंसना
आरंभु जावुंक	- आरंभ होना	आरंभु करुंक	- आरंभ करना
खावनु जावुंक	- खा चुकना	पीवनु जावुंक	- पी चुकना
खावुंक लागुंक	- खाने लगना	पीवुंक लागुंक	- पीने लगना
गादो	- खेत, कहावत	सोवो	- गाली
तान	- प्यास		

कोंकणी में मुख्य क्रिया के पूर्वकालिक कृदन्त के साथ 'जावुंक' क्रिया के विभिन्न रूप लगाने से समाप्ति बोधक या पूर्णताबोधक क्रिया बनती है । जैसे :–

तागेलें खावनु (खावून) जाता. - वह खा चुकता है ।
आमगेलें पीवनु (पीवून) जालें. - हम पी चुके ।
तुमगेलें शिक्कूनु जालेंवे ? - तुम सीख चुके ?

यहाँ खावनु, पीवनु, शिक्कूनु–इनका प्रयोग संज्ञा के समान हुआ है । कर्ता हमेशा नपुंसकलिंग, संबन्ध कारक में रहता है । 'जावुंक' क्रिया का रूप कर्म के लिंग वचन के अनुसार बदलता है । जैसे :–

*तागेली काप्पि पीवनु जाली. - वह काफ़ी पी चुका ।
आमगेलो बूकु वाचूनु जालो. - हम किताब पढ चुके ।

'जावुंक' क्रिया का निषेधार्थ रूप जोडकर इस क्रिया का निषेधार्थ रूप बनाया जाता है । जैसे :–

तागेलें खावनु जालेना. - वह खा नहीं चुका ।
तागेली काप्पि पीवनु जालीना. - वह काफ़ी पी नहीं चुका ।

* यहाँ कर्ता का संबन्ध कारक रूप विशेषण के समान प्रयुक्त होता है ।

कोंकणी में मुख्य क्रिया के साधारण रूप के साथ 'लागुंक'
ा के विभिन्न रूप जोड देने से आरंभ बोधक संयुक्त क्रिया
ी है। जैसे :–

ेळुंक लागता. - वह खेलने लगता है।

थाकून रामु हिन्दी शीकुंक लागतलो. - कल से राम हिन्दी सीखने लगेगा।

मास फूडे थाकून सीता कोंकणी वाचुंक लागली. - तीन महीने पहले से ही सीता कोंकणी पढने लगी।

ातांचि खावंचाक लागतलो. - वह अभी खाने लगेगा।

'लागुंक' क्रिया के निषेधार्थ रूप जोडकर इस संयुक्त क्रिया
निषेधार्थ रूप बनाया जाता है। जैसे :–

ाचुंक लागना. - वह पढने नहीं लगता।

ाचुंक लागलेनाति. - वे पढने नहीं लगे।

ी वाचुंक लागचीना. - वे पढने नहीं लगेंगे।

ापकु पाठ शीकौंचाक लागना. - अध्यापक पाठ पढाने नहीं लगता।

वाक्य

ारांरि आमगेलें खावनु जातलें.	दस बजे हम खा चुकेंगे।
येवंचे फूडे आमगेलें वाचून जालें.	तुम्हारे आने से पहले हम पढ चुके।
म केन्ना करनु (करुन) जातलें?	यह काम कब कर चुकेगा ?
ी चाय पीवनु जालीवे ?	क्या, वे चाय पी चुके ?
लें सामान व्हरनु जालेंवे ?	तुम सामान ले जा चुके ?

गाद्यां थाकून भात हाणु (हाडून) जालें.	खेत से धान ला चुका।
जेवण जालें.	खाना हो चुका।
जांवचें जालें.	जो होना था, हो चुका।
तें चेरडूं रोडुंक (रडुंक) लागता.	वब बच्चा रोने लगता है।
ती रोडुंक लागली.	वह रोने लगी।
ते खावुंक लागले.	वे खाने लगे।
तूं खंय वचाक लागलो?	तुम कहाँ जाने लगे?
ताणें सांगलें आयकूनु हांव हासुंक लागलों.	उसका कहना सुनकर मैं हंस लगा
पावसु पडुंक लागलो.	पानी बरसने लगा।
तो आम्बो खावुंक लागलो.	वह आम खाने लगा।
रामान आज थांगा वचाक नज.	राम को आज वहाँ जाना नहीं चाहिये
रामाचान आज थांगा वचाक नज.	राम आज वहाँ जा नहीं सकता
तांणी आतां कोंकणी वाचुंक नज.	उनको अब कोंकणी पढनी नहीं चाहिये
तांचान आतां कोंकणी वाचुंक नज.	वे अब कोंकणी पढ़ नहीं सकते।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

वह खाना खा चुका। क्या, वह लिख चुका? हाँ, वह लिख चुका। क्या, तुम पढ़ चुके? उसने अपना काम खतम नहीं किया। हम आठ बजे हिन्दी पाठ सीख चुके। यह काम कब हो चुकेगा? वह पाठ लिख चुका। वह पानी बाहर फेंक चुका।

ह शहर देख चुके। तुम कल से यह काम करने लगोगे।
गडने लगा। तुम कब कोंकणी सीखने लगोगे? वह अंग्रेज़ी
लगा। मैं कब कोंकणी समझने लगूँगा? तुम थोडे दिनों
दी पढने लगोगे। वे दफ़्तर में काम करने लगे। तुम यह
कब सीखने लगोगे? वे एक दूसरे को गालियाँ देने लगे।
ो चिट्ठी लिखने में रोज़ दो घंटे लगते हैं। मुझको भूख
। तुम को प्यास लगी।

तुम को कल सबेरे यहाँ आना चाहिये। उनको यह काम
पडेगा। हम को परसों उनके घर जाना पडेगा। उनको
*हमारे यहाँ आना पडेगा। राम को कृष्ण के यहाँ बैठना
। क्या, तुम आज सिनेमा जा सकते हो? क्या, तुम रास्ता देख
हो? मैं नहीं आ सकता। क्या, तुम अंग्रेज़ी सीख सकते हो?
ल्दी चल नहीं सकता क्योंकि वह लंगडा है। मैं इतनी दूर
हीं सकता। तुम मुझको यह बता सकते हो कि वह कहाँ
है? क्या, मैं तुम्हारेलिये कुछ कर सकता हूँ?

रे यहाँ	– आमगे थंय (आमगेर)	मेरे यहाँ	– मागे थंय (मागेर)
के यहाँ	– रामा थंय (रामागेर)	तुम्हारे यहाँ	– तुगे थंय (तुगेर)
के यहाँ	– सीते थंय (सीतेगेर)	आप के यहाँ	– तुमगे थंय (तुमगेर)

पाठ 19

जानता हूं – 'जाण' और नहीं जानता – 'नेण' का प्रयोग

मशीद	- मसजिद	गिरायक	- ग्राहक
फटवण	- धोखा	साळ	- साही (porcupir
सेजारी	- पडोसी	सेजार	- पडोस
गरज	- ज़रूरत	मानगें, सिसरि	- मगर
हुकुम	- हुकुम	वोत	- धूप
सोदु	- तलाश	माप	- नाप, माफ़
चाम	- चमडा	सालि	- खाल
हारि	- हार (defeat)	जोडि	- जोडी
भाडें	- किराया	सौकापोळि	- साबुन
लाळ	- लार	नित्तू	- थूक
मेण	- मोम	वाति	- बत्ती
मत, अभिप्रायु	- अभिप्राय	नातु	- पौत्र
खान्दो	- डाल (N.)	मूगु	- मूँग
कूरु	- निशाना	बोरें, बरें, चांग	- अच्छा (adv.)
देरु	- देवर	बाकुल	- बिलाव
बारीक	- बारीक	पोटयो	- पेटू
इगराज	- गिरिजा	कंकण	- कंकण
जिकुंक	- जीतना	हारवुंक	- हारना
आधारुंक	- मदद देना	सोवुंक, गाळावुंक	- गाली देना
फटौंक	- धोखा देना	फटवुंक	- धोखा खाना

	- मानना (agree)	मापुंक	- नापना
	- तलाश करना	देकून धरुंक	- मालूम करना
	- गिनना	हारि खावुंक	- हार खाना
, ावुंक	- जानना	नेणुंक, नेणं जावुंक, नक्लो जावुंक	- न जानना

'जानना' के अर्थ में कोंकणी में दो क्रियायें होती हैं । अलग अलग निपेधार्थ रूप भी होते हैं । लेकिन इन में भिन्न-कालों के क्रिया-रूप बनाने के लिये 'जाणं जावुंक' और 'नेणं' रूप ही प्रयुक्त होते हैं । वर्तमान काल में केवल 'जाणं' नेणं' रूपों का ही प्रयोग होता है । 'जावुंक' छोड दिया है । जैसे :–

वर्तमान काल

एकवचन		बहुवचन	
ंव जाणं	- मैं जानता हूँ	आमी जाणात	- हम जानते हैं
ूं जाणं	तू जानता है, तुम जानते हो	तुमी जाणात	- आप जानते हैं
ो / ी / ं जाणं	वह जानता है ते / वह जानती है त्यो / वह जानता है तीं	जाणात	वे जानते हैं / वे जानती हैं / वे जानते हैं

निषेधार्थ रूप

	एकवचन		बहुवचन	
उ०	हांव नेण	मैं नहीं जानता	अमी नेणात	हम नहीं जानते
म०	तूं नेण	तू नहीं जानता / तुम नहीं जानते	तुमी नेणात	आप नहीं जानते
अ०	तो नेण	वह नहीं जानता	ते नेणात	वे नहीं जानते
	ती नेण	वह नहीं जानती	त्यो नेणात	वे नहीं जानतीं
	तें नेण	वह नहीं जानता	तीं नेणात	वे नहीं जानते

इस क्रिया के दूसरे काल 'आसुंक' या 'जावुंक' क्रिया की सहायता से बनते हैं। जैसे :—

भविष्यत काल

	एकवचन		बहुवचन	
उ०	हांव जाण आसतलों / जाण जातलों	मैं जानूंगा	आमी जाण आसतले / जाण जातले	हम जानेंगे
म०	तूं जाण आसतलो / जाण जातलो	तू जानेगा, तुम जानोगे	तुमी जाण आसतले / जाण जातले	आप जानेंगे
	तो जाण आसतलो / जाण जातलो	वह जानेगा	ते जाण आसतले / जाण जातले	वे जानेंगे
अ०	ती जाण आसतली / जाण जातली	वह जानेगी	त्यो जाण आसतल्यो / जाण जातल्यो	वे जानेंगी
	तें जाण आसतलें / जाण जातलें	वह जानेगा	तीं जाण आसतलीं / जाण जातलीं	वे जानेंगे

निषेधार्थ रूप

	एकवचन			बहुवचन	
वें	जाण आसचीना जाण जावंचीना या जावना	मैं नहीं जानूंगा	आमी	जाण आसचीना जाण जावंचीना	हम नहीं जानेंगे
व	नेण आसतलों नेण जातलों	मैं नहीं जानूंगा	आमी	नेण आसतले नेण जातले	

इसी तरह दूसरे रूप भी बनाये जा सकते हैं।

भूतकाल

	एकवचन			बहुवचन	
हांव	जाण आसलों जाण जालों	मैं ने जाना	आमी	जाण आसले जाण जाले	हम ने जाना
तूं	जाण आसलो जाण जालो	तू ने जाना तुम ने जाना	तुमी	जाण आसले जाण जाले	आप ने जाना
तो	जाण आसलो जाण जालो	उसने जाना	ते	जाण आसले जाण जाले	उन्होंने जाना
ती	जाण आसली जाण जाली	उसने जाना (स्त्री.)	त्यो	जाण आसल्यो जाण जाल्यो	उन्होंने जाना (स्त्री.)
तें	जाण आसलें जाण जालें	उसने जाना (नपु.)	तीं	जाण आसलीं जाण जालीं	उन्होंने जाना (नपु.)

निषेधार्थ रूप

एकवचन			बहुवचन		
हांव	नेण आसलों नेण जालों	मैंने नहीं जाना	आमी	नेण आसले नेण जाले	हमने नहीं जाना

‘जाण’ के स्थान पर ‘नेण’ का प्रयोग करके इसका निषेधार्थ रूप बनाया जाता है। जैसे :–

आदि

वाक्य

तो कोण म्हणु हांव नेण.	मैं नहीं जानता कि वह कौन है।
तो चोरु म्हणु हांव जाण.	मैं जानता हूँ कि वह चोर है।
फायि थांगा वचूनु हांव तें जाण जायन.	कल वहाँ जाकर मैं वह जानूंगा।
तुमी जाण जालेवे ?	क्या आपने जाना ?
तो कोंकणी जाणवें ?	क्या वह कोंकणी जानता है ?
ताका कोंकणी कळता.	उसको कोंकणी मालूम है।
हाका हिन्दी येना.	इसको हिन्दी नहीं आती।
माका जाय जलें.	मुझे ज़रूरत पडी।
तो तुका हांगा इत्याक येबंचाक दीना ?	वह तुमको यहाँ क्यों आने नहीं देता ?
ताका औंन्दु शुट्टेर वचाक दिवना.	उसको इस साल छुट्टी पर जाने नहीं देंगे।
ह्यो व्हाणों चांग्यो न्हंय.	ये जूते अच्छे नहीं है।

चाम बाल्लाव.	इनका चमडा खराब (है)।
ुस्तकां मोयि.	वे पुस्तकें गिनो।
ागेलें घर जाणवे ?	क्या तुम उसका घर जानते हो ?
ांय राबता म्हणु हांव नेण.	मैं नहीं जानता कि वह कहां रहता है।
न हें काम केन्ना करुंक जातलें ?	तुम यह काम कब कर सकोगे ?
ान आमकां वरां सांगुंक जातावे ?	आप हम को समय बता सकते हैं ?
मिग्गेलें काम धा वरां फूडे करुंक लागना.	मैं अपना काम दस बजे से पहले करने नहीं लगता।
लागि कितलीं पुस्तकां आसात ?	तुम्हारे पास कितनी पुस्तकें हैं ?
तुग्गेले बगेक लुगट घेवूंवे ?	मैं तुम्हारे लिये कपडा खरीदूँ या मंगावूँ ?
कां कालि चाप्पाती खावंका जाली.	हमको कल चपाती खानी पडी।

णी में अनुवाद कीजिये :—

क्या तुम अंग्रेज़ी जानते हो ? नहीं, मै अंग्रेज़ी नहीं जानता। तुमको हिन्दी मालूम है ? हाँ, मुझे हिन्दी अच्छी तरह म है। क्या, वे उनको जानते हैं ? हां, वे ज़रूर उनको ते हैं। वह आदमी यहां किसी को नहीं जानता। मैं ने नहीं कि वह तुम्हारा भाई है। तुम जानते हो कि वह कौन है कहां से आया है ? हम नहीं जानते कि उसके मां-बाप नहीं हैं। आप मोटोर चला सकते हैं ? तुम दस तक गिन सकते हो ? आदमी हिन्दी सीख चुका। दुश्मन हार खाकर भागने लगा।

हम आग जला चुके । हम को कल वहां जाना है । मालूम क कि मेरी कलम कहाँ है । तुम इस घर को क्या किराया देते हो यह मोम बत्ती अच्छी तरह नहीं जलती । लक्ष्मण सीता देवर है । दशरथ और कौसल्या राम के माँ-बाप हैं । तुम य टूटा बरतन क्यों लाये हो ? मैं अगले साल विलायत जा चाहता हूँ । ईसाई लोग गिरजे में जाकर प्रार्थना करते हैं ।

पाठ 20

'होना' (to have) 'आसुंक' का प्रयोग

हींडु	- झुंड, भीड	मडतेल	- हथौडा
खीळो	- कील	तापु	- बुखार
भरकूण	- सर्दी, जुकाम	भूइं	- ज़मीन
दूकि, दुक्की	- दर्द	कपाल	- माथा, भाग्य
फुरसत	- फ़ुरसत	दामु-दुड्डु	- दौलत
आचारु	- दस्तूर	कम्बळि	- कम्बल
नीद	- नींद	कूळार	- मैंके का घर
असलो	- ऐसा	तसलो	- वैसा
कसलो	- कैसा	होचि	- यही
एकमेकाक	- एक दूसरे को	अमको	- अमुक
कोणकोण	- कौन-कौन	जैतो	- कई, बहुत
मातशी	- ज़रा	भैलो	- बाहर का

क' (होना) क्रिया के कुछ विशेष प्रयोग

लागि (माजे कडेन) दोनि रुपया आसात.	- मेरे पास दो रुपये हैं।
पुस्तक तुमचे कडेन (तुमचे लागि) आसावे ?	- मेरी पुस्तक तुम्हारे पास है ?
कितलों वर्सां आसात ?	- तुम्हारी उम्र क्या है ?
बीस वर्सां आसात.	- मेरी उम्र बीस साल की है।
आजि तापु आसा.	- मुझे आज बुखार है।
ी एकि भयणि मद्रासाक आसा.	- मेरी एक बहन मद्रास में है।
लागि त्या दीसु पैसो नासिलो.	- हमारे पास उस दिन पैसा नहीं था।
राकडे (घरकडे) आसतलेवे ?	- आप घर पर होंगे ?
लागि सिगरेट ना.	- उनके पास सिगरट नहीं।
डाक जन्नेरल ना.	- इस कमरे में खिडकी नहीं।

वाक्य

तापु आसा.	आप को बुखार है।
दूकि ना.	उसको दर्द नहीं।
मात्यान्तु दुक्की आसा.	मुझे सिर-दर्द है।
हिन्दी पुस्तक तुमचे कडेन आसावे ?	क्या, मेरी हिन्दी पुस्तक तुम्हारे पास है ?
लागि कांय ना.	उनके पास कुछ नहीं।
चेरडूवां आसातवे ?	तुम्हारे बच्चें हैं ?
ागि लुगट ना.	उनके पास कपडा नहीं।

तांचे कडेन दोनि कम्बळयो आसात.	उनके पास दो कम्बल हैं।
ह्या कूडाक कवड ना.	इस कमरे में दरवाज़ा नहीं।
तुका माजे लागि कितें काम?	तुमको मेरे साथ क्या काम?
माका फुरसत ना.	मुझे फ़ुरसत नहीं।
त्या मनुष्याक आजि कांय काम ना.	उस आदमी को आज कुछ का नहीं।
ताका एकुची पायु आसा.	उसके एक ही पैर है।
आमकां हांगा भूइं ना.	हम को यहाँ ज़मीन नहीं है।
सीतेक जैतो दुड्डु आसलो.	सीता के पास बहुत धन था।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

सिपाहियों के पास तलवार होती है। मास्टरों के पा किताबें होती हैं। तुम्हारे कितने भाई हैं? उसके पास चार गा हैं। राम के पास पैसा नहीं था। इस फोटो में कौन-कौन ख हैं? इस कागज़ में कितने रंग हैं? दूकानदार के पास बहुत सामा है। तुम्हारे क्लास में कितने लडके हैं? तुम को क्या बीमारी है इस कमरे में हवा गरम है। आपको कल फ़ुरसत होगी? उस एक हाथ है। वह आज सबेरे अकेले अपने घर गया। राम पास बहुत पैसा है। इस बाक्स में मेरे कपडे हैं। दवात में स्याह है। राम की तीन बहनें थीं। आदमी के दो कान और द आँखें होते हैं।

उक्ति भेद—Direct and Indirect Narration

क	- शादी	जाति	- जात
ल	- वधू	व्होरेतु	- वर
ा	- बारात	व्होर	- वर-वधू
मीरें	- कालो मिर्च	मीरी	- सिकुडन
	- उदाहरण केलिये	बुब्बु	- बीमारी
	- सन्दूकचा	पेट्टूळ	- सन्दूकची
	- पकवान	सूव	- सूई
ल	- कर्णपट	पाटलो	- भूत, गत
	- हटना, खतम होना	सारुंक	- खतम करना
करुंक	- सेवा करना, नौकरी करना	धूर सरुंक	- हट जाना
क	- परिचित होना	जाय जावुंक	- ज़रूरत पडना
ारुंक	- शोर मचाना	रोडुंक	- रोना

ेद

उक्ति प्रकाश के दो भेद हैं। जब हम वक्ता के वक्तव्य को शब्दों में ज्यों का त्यों प्रकट करते हैं, तब 'प्रत्यक्ष उक्ति' है। जैसे :—

सांगलें—"हांव फायि मद्रासाक वतलों."

= राम ने कहा—"मैं कल मद्रास जावूंगा।"

ह्ळ्ळें—"हांव येतां." = उसने कहा—"मैं आता हूँ।"

लेकिन वक्ता का वक्तव्य और कोई प्रकट करे तो वह 'परोक्ष उक्ति' है। जैसे :—

तो येता म्हणु रामान सांगलें. = राम ने कहा कि वह आता है

तो फायि थांगा वतलो म्हणु रामान म्हळ्ळें. = राम ने कहा कि वह कल वहाँ जायेगा

कोंकणी में परोक्ष उक्ति का प्रयोग होता है। इसमें संज्ञा उपवाक्य पहले और मुख्य उपवाक्य बाद में आता है। योजक 'म्हणु' (कि) का प्रयोग दोनों के बीच में होता है। उदाहरण ऊपर दिये गये हैं।

वाक्य

मागेलो भाउ भित्तरि आसावे म्हणु ताणें माजेलागि निमगीलें ?	उसने मुझसे पूछा कि मेरा भाई अन्दर है ?
ताजान हें काम करुंक जायतवे म्हणु ताका विचारि.	उससे पूछो कि वह यह काम कर सकेगा
तागेल्या पुताक इतें जाय म्हणु ताजे लागि नींगि ?	उससे पूछो कि उसके पुत्रको क्या चाहिये
हांवे तुगेली चीटि पेट्टेयलीना म्हणु ताणें माजे लागि सांगलें.	उसने मुझसे कहा कि मैंने तुम्हारी चिट्ठी नहीं भेजी
हांव खंय राबता आनी मागेलें नांव इतें म्हणु ताणें माका विचारलें ?	उसने मुझसे पूछा कि तुम कहाँ रहते हो और तुम्हारा नाम क्या है
बोब मारनाका म्हणु ताका सांग.	उससे कहो कि वह शोर न करे
तो हांगा नवो आनी ताका हांगाची भास कळना म्हणु ताणें तुका सांगलेंवे ?	क्या, उसने तुमसे कहा कि वह यहाँ नया है और उसको यहाँ की भाषा मालूम नहीं

ी में अनुवाद कीजिये :—

सीता से पूछो कि वह कल यहाँ आयेगी कि नहीं। लडके ी कि उसके मास्टर आज न आयेंगे। वह कहती थी कि वह की भाषा नहीं जानती है। विद्यार्थी ने कहा कि वह पुस्तक र भूल गया। बीमार कहता है कि उसको भूख लगी है। विद्यार्थियों से कहा कि वे पाठ अच्छी तरह पढें। उससे कहो ह अन्दर न आये, बाहर खडा रहे। यह मालूम करो कि विवाह हो चुका है कि नहीं। उस आदमी से कहो कि पत्नी बीमार है। अध्यापक ने विद्यार्थी से पूछा कि तुम सीखते हो? उसने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ रहता हूँ और ाम क्या है? उससे कहो कि वह जल्दी हिन्दी सीखे।

पाठ 22

प्रेरणार्थक क्रियायें

	- जखम	विमान	- हवाई जहाज़
बाळ	- शिशु	फाव	- लायक
	- वापस	बाब	- श्रीमान
	- श्रीमती	खोरें	- खुदाली
	- माम	आपप्पा	- चाचा
	- चाची	मांयि	- मामी
	- हरिजन	पाप	- पाप
		पाड्क	- बछडा

थापट	- चपत	फळें	- तख्ता (plank)
फळारु	- लघु भक्षण	फाफराचो	- लात
लैलांव	- नीलाम	बान्धुक	- बान्धना
तुकुंक	- तोलना	सीवुंक	- सीना
न्हावुंक	- नहाना	पाडुंक	- फल तोडना

प्रेरणार्थक क्रिया से यह जाना जाता है कि कर्ता, क्रिया स्वयं न करके किसी दूसरे को उसके करने की प्रेरणा देता है। जिसे प्रेरणा दी जाती है उसे प्रेरित कर्ता कहते हैं। कोंकणी मे अकारान्त धातुओं के साथ 'ऐ' लगाकर प्रेरणार्थक धातु बनायी जाती है। बाकी धातुओं के साथ अकसर 'वै' जोड दिया जाता है।

मूल धातु	प्रेरणार्थक धातु
कर	करै
देंव	देंवै
चड	चडै
बैस	बैसै
सोड	सोडै
जेव	जेवै
मार	मारै
जिक	जिकै
चाब	चाबै
लेंव	लेंवै
खा	खावै

धू	धूवै
पी	पीवै
दी	दीवै
घे	घेवै

अपवाद

देक	दाकै
भि, भी	भिसराय

कुछ मूल धातु हो 'ऐ' कारान्त होती हैं जो प्रेरणार्थक नहीं। साथ भी 'वै' जोडकर प्रेरणार्थक रूप बनाया जाता है।

मूल धातु	प्रेरणार्थक
बरै	बरैवै
उल्लै	उल्लैवै
आपै	आपैवै
कालै	कालैवै

किसी किसी धातु के साथ 'कारै' लगाकर प्रेरणार्थक धातु ी जाती है।

उठ	उठकारै

किसी किसी धातु के साथ 'उडाय' लगाकर प्रेरणार्थक धातु ी जाती है।

धांव	धांवडाय
घूंव	घूंवडाय
भोंव	भोंवडाय

इन क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप नहीं है। वरुंक, येवुं
जावुंक, वचुंक—

प्रेरणार्थक धातुओं का प्रयोग सभी कालों और अर्थों में होत
है और इनके निषेधार्थ रूप भो नियमानुसार बनाये जाते हैं।

प्रेरित कर्ता के साथ हमेशा 'करान' (से) प्रत्यय जोड दिय
जाता है। जैसे :—

रामु ताजेकरान हें काम करैता. = राम उससे यह काम करवाता है
तो चेरडुवां करान बूकु वाचैता. = वह बच्चों से किताब पढवाता है

वाक्य

जॉण दरजीकरान चोगो सीवैंता.	जॉण दरजी से कुर्ता सिलवाता है
चेरडुवांक भिसरावंचाक नज.	बच्चों को डराना नहीं चाहिये
घोडयाक धावंडाव नाका.	घोडे को मत दौडावो।
हांवें हें बरप ताजे करान वाचैलें.	मैंने यह पत्र उससे पढवाया।
तांणि कागत जळैलें.	उन्होंने कागज़ जलाया।
ताणें कागत जळैवेंलें.	उसने कागज़ जलवाथा।
हांवें व्हाणों चांगी करैल्यो.	मैंने जूतों की मरम्मत करवायी
तुमी तांचेकरान जैतें काम करैतात वे?	क्या, आप उनसे अधिक का लेते हैं? (करवाते हैं
ताका खाल बैसै (बैसय).	उसको नीचे बिठाओ।
आमी तांकां धांवडायले.	हमने उनको दौडाया।
तें पेन माका दाकै.	वह कलम मुझे दिखाओ।
आवय चेरडाक दूद पीवैंता.	माँ बच्चे को दूध पिलाती है।
माय चेरडाक न्हाणैता.	माँ बच्चे को नहलाती है।

जेकरान उल्लैवैंता. | वह मुझसे बोलवाता है।
ा हांगा भौवंडावनु दाकै. | तुम इनको यहाँ घुमाकर (सैर कराके) दिखाओ।

ी में अनुवाद कीजिये :—

उस आदमी को खाना खिलाओ। हमारे कुर्ते दर्जी से ाओ। बच्चों को खाना खिलाओ। उनको यह पत्र भिजवाओ। ों को गरम चाय पिलाओ। बच्चे को सुलावो। हम हेड- से आप को इनाम दिला देंगे। यह कमरा साफ़ कराओ। कससे चिट्ठी लिखवायेगा? तुम वहाँ जाकर यह चिट्ठी पढवाओ। नौकर को यहाँ बुलवाओ। आटे में घी डालकर तरह मिलाओ।

पाठ 23

शब्दों की पुनरुक्ति

, सोयरी	- मेहमान	सोयरीक	- वास्ता, संबन्ध
	- मुँह, चेहरा	भासावणि	- वादा
	- प्रार्थना	भासावुंक	- वादा करना
	- उतरना	खरसावुंक	- थका देना, हंपा देना
क	- छीलना	निदावुंक	- सुलाना
क	- सोना	आंगवण	- चढावा (offering)
	- बचना, छूटना		

शब्दों की पुनरुक्ति

1) अर्थ पर ज़ोर देने केलिये विशेषण और संबन्ध सूचक शब्द की पुनरुक्ति होती है ।

चांग चांग आम्बे हाडि. = अच्छे अच्छे आम लाओ ।
वूणे वूणे वाडि. = थोडा थोड़ा परोसो ।
मुकारि मुकारि सोरनाका. (सरनाका) = आगे आगे मत बढो ।
तो धूरा धूरा वता. = वह दूर दूर जता है ।

2) प्रत्येकता की सूचना देने केलिये संख्या वाचक शब्दों की आवृत्ति होती है ।

तांकां दोन्दोनि आम्बे दी. = उनको दो दो आम दो ।
तांकां तीन तीन (तींतींन) कुटके दी. = उनको तीन तीन टूकडे दो ।

3) पूर्वकालिक कृदन्त की पुनरुक्ति से क्रिया के कई बार करने का बोध होता है ।

तो दुड्डु दीवनु दीवनु गरीब जालो. = वह धन देदेकर गरीब हो गया ।
पंडित गडगडेवनु गडगडेवनु तळचा मेटारि पावलो. = पंडित लुढक लुढक कर तालाब के घाट पर पहुँचा ।
थेम्बो पोणु पोणु आयदन भरलें. = (पानी की) बूँद गिर-गिरकर बरतन भर गया ।
तो चोणु चोणु (चडून चडून) उंचारि पावलो. = वह चढ चढकर ऊपर तक पहुँच गया ।

4) अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त की आवृत्ति से क्रिया के करते रहने का बोध होता है । कोंकणी में यह कृदन्त, धातु के साथ 'अतां', 'यातां' जोडकर बनाया जाता है ।

...तां जेवतां नीदलो.	= वह खाते खाते सो गया ।
...तां पीतां चेलो उट्टावनु गेलो.	= दूध पीते पीते लडका उठकर चला गया ।
...वतां धांवतां खरशेलो.	= वह दौडते दौडते थक गया (हाँप गया) ।

वाक्य

...वाचुंक चांग चांग पुस्तकां हाडका.	मुझे पढने अच्छी अच्छी किताबें लाना ।
...जावनु ते तांग तांगेलया घरकडे गेले.	खाना खाकर वे अपने अपने घर चले गये ।
...मागलान मागलान चमक.	मेरे पिछे पीछे चलो ।
...तां वतां तो खाला वता.	रोज़ (दिन) जाते जाते वह नीचे जाता है ।
...तांकां चारि चारि (चाचारि) बिस्कुतां दी.	आज उनको चार चार बिस्कुट दो ।
...पांच पांच (पांपांच) रुपया काडयात.	आप पाँच पाँच रुपये लीजिये ।
...धावनु तो खंय पांवतलो.?	दौड दौड कर वह कहाँ पहुँचेगा ?
...ो जावनु भित्तरि येयात.	एक एक करके भीतर आइये ।
...तां खातां उल्लैता.	वह खाते खाते बात करती है ।
...देकतां दीसु गेलो.	देखते देखते दिन बीत गया ।
...राति आमी वाचतां वाचतां निदेवनु पळ्ळे.	कल रात हम पढते पढते सो गये ।

तीणें वतां वतां राति जाली.	उसके जाते जाते रात हो गयी।
आमी स्टेषनान्तु पावंता भाण्डि आयली.	हमारे स्टेषन पहुँचते पहुँचते गाडी आयी।
ताका बैसून बैसून पूरो जालें.	बैठते बैठते वह ऊब गया।
तो येवनु येवनु येना.	वह आते आते न आता। (पहुँचता)
ते वचुनु वचुनु वचनाति.	जाते जाते वे न चले जाते।
चौंकून चौंकून आमी हांगा पावले.	चलते चलते हम यहाँ पहुँचे।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

एक एक करके सब आदमी चले गये। तुम पढते पढते क्यों थक जाते हो? आज यहाँ कौन कौन आयेंगे? बैठे-बैठे वह ऊब गया। हमने उसको मार मारकर मार डाला। वे दौडते दौडते थक गये। खा खाकर उनका पेट भर गया। मैंने उनको दस दस आम दिये। तुम मेरे आगे आगे चलो। किताबें पढ पढकर उनकी आखें खराब हो गयी। उनको दो-दो करके कमरे में आने दो। यहाँ रोज़ कौन कौन आते हैं? वे खा खाकर मोटे हो गये। राम मुझे देख देखकर हंसता था। तुम ये छोटे छोटे आम कहाँ से लाये? तुम मुझे मीठे मीठे फल खिलाओ। वह पढ पढकर पंडित बन गया।

पाठ 24

जब-तब; जो - वह—का प्रयोग

- इतवार	पूर्व, केळक[1]	- पूरब
- सोमवार	पश्चिम, पणजीर	- पश्चिम
- मंगलवार	उत्तर, बडक[1]	- उत्तर
- बुधवार	दक्षिण, तेक	- दक्खिन
- गुरुवार		
- शुक्रवार		
- शनिवार		
- कंकण बेचनेवाला	बारकाय	- हलकापन
- थूक	थू करुंक	- थूकना
- मालिक	मानाय	- मज़दूर
ग्गें - खीरा	तवशीणि	- खीरेकी लता
- युवक	युवती	- युवती
- बाघ	आप्पीस	- दफ़तर
- सिपाही	कूलि	- मज़दूरी
ण्डि - रेल गाडी	मोंचूव	- नाव
- लिफ़ाफ़ा	लोकु	- दुनियाँ, लोग
- गढा	खोणुंक (खणुंक[1])	- खोदना

न्ना-तेन्ना — जब-तब—का प्रयोग :—

थांगा आयलों तेन्ना तूं खंय गेल्ललो ? } = जब मैं वहाँ आया तब तुम कहाँ गये थे ?

जेन्ना तुवें माका देकलो, तेन्ना हांव हिन्दी सिकतालों.	=	जब तुम ने मुझे देखा, तब मैं हिंदी सीखता था। (सीख रहा था)
जेन्ना चोरानी पोलीसांक देकले, तेन्ना ते धावनु गेले.	=	जब चोरोंने पुलिसों को देखा तब वे दौड गये

कालवाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य कोंकणी में 'जेन्ना' से शुरू होता है और 'तेन्ना' से खतम होता है।

धातु के साथ 'अताना' या वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ 'आसताना' प्रत्यय जोडकर 'करते समय' का बोध कराया जाता है।

वताना (वतासताना) हांवें ताका देकलो.	=	जाते समय मैंने उसको देखा।
हांवें खातासताना तो आयलो.	=	मेरे खाते समय वह आया।
धांवतासताना तो चेलो गरगडेवनु पळ्ळो.	=	दौडते समय वह लडका गिर पडा।
हांवें येताना तूं खंय वतालो ?	=	मेरे आते समय तुम कहाँ जाते थे। (जा रहे थे)

क्रिया विशेषण उपवाक्य के अन्त में (जेन्ना......तेन्ना) के बदले 'वेळारि' जोडकर भी यह भाव प्रकट किया जाता है। जैसे :—

हांवें आयल्या वेळारि तूं कितें करतालो ?	=	जब मैं आया तव तुम क्या करते थे ? (कर रहे थे)
हांवें सिक्च्या वेळारि बोब मारनाका.	=	मेरे सीखते समय शोर मत करो।
ताणें काम करच्या वेळारि उल्लौंचाक[1] नज.	=	उसके काम करते समय मत बोलो।

जो, जी, जें ... ... तो, ती, तें; जे, ज्यो, जीं ... ... ते, त्यो, तीं; जो – वह, वे—का प्रयोग :—

ीषु कालि मागेल्या घरकडे ा, तो मागेलो भाउ (तं).	=	जो मनुष्य कल मेरे घर आया, वह मेरा भाई (है)।
ेक तुवें देकली ती मागेली भयणि (तं).	=	जिस लडकी को तुम ने देखा, वह मेरी बहन (है)।
ाक तुवें घेतलें, तें चांग न्हंय.	=	जो पुस्तक तुमने खरीदी, वह अच्छी नहीं।
हैं काम केलां तांकां तूं ओळकता वे ?	=	जिन्होंने यह काम किया है, उनको तुम जानते हो ?
हें काम केलें, ताका तूं ओळकता वे ?	=	जिसने यह काम किया है, उसको तुम जानते हो ?

विशेषण उपवाक्य 'जो' से शुरू होता है और 'तो' से खतम है।

वाक्यांश के रूप में भी इस उपवाक्य का प्रयोग होता है।

— तुवें हाळ्ळलीं पुस्तकां – तुम्हारी लायी पुस्तकें

आयललो मनीषु – आया मनुष्य (जो मनुष्य आया वह)

आयलली बायल – आयी स्त्री (जो स्त्री आयी वह)

आयलल्यो बायलो – आयी स्त्रियाँ

वाक्य

ध्यापक क्लासान्तु आयलो ल्ले उट्टावनु राबले.	जब अध्यापक क्लास में आये तब लडके उठ खडे हुए।
नमाक वच्या वेळारि माका ा किते ? (कित्याक)	सिनिमा जाते समय तुम मुझे क्यों नहीं बुलाते ?
ा आयलल्या (आयल्या) तुमी खंय गेलेले ?	जब वे यहाँ आये थे तब आप कहाँ गये थे ?

हांव घरकडे पावलल्या वेळारि पावसु पडुंक लागलो.	जब मैं घर पहुँचा तब पान बरसने लगा।
परीक्षेन्तु इनाम मेळका म्हळ्ळलो चेल्लो चांग कोरनु शिकता.	जो लडका परीक्षा में इनाम पान चाहता है, वह अच्छी तर सीखता है।
जो तुमकां मदद दीता, ताका केदनांय विसरुंक नज.	जो आप की मदद करता है, उसे कभी न भूलना।
आज बरप हाळ्ळलो चेडो कोण म्हणु हांव नेण.	जो लडका आज पत्र लाया, मैं नहीं जानता कि वह कौन है।
पयरि तुमी देकल्यान तुमचे लागि इते सांगलें?	जिसको परसों आपने देखा उसने आपसे क्या कहा?
तुमी राबल्या घरान्तु आजि कोण राबता?	जिस घर में आप रहे थे, उसमें आज कौन रहता है?

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

जो कुछ तुम लिखते हो ठीक नहीं। जो कुछ वह कहता है ठीक नहीं। जो कुछ वह करता है, ठीक-ठीक करता है। जो कुछ वह कहता है, मैं नहीं समझता। जो आदमी यह खत लाया, वह जवाब नहीं ले गया। जो आदमी तुमको दूध देता है, तुम जानते हो कि वह कहाँ रहता है। जिस दिन रामने यह कलम खरीदी, उसी दिन मैं ने यह पुस्तक भी खरीदी। जो दूसरों के लिये गढा खोदता है, वह स्वयं उसमें गिरता है। जब मैं घर पहुँचा, तब मैं ने देखा कि वह घर पर नहीं है। जब बच्चों ने बाप को देखा तब वे उनके पास दौड गये। जब वह पेड पर चढ रहा था, तब नीचे गिर पडा।

पाठ 25

अपूर्ण वर्तमान काल और तात्कालिक भूतकाल

ह्	- थाली	शाळा	- पाठशाला
ासो	- घडा	कोळसूलो	- छोटा घडा
ा	- दराज़	साब्बाव, अश्शीच्चि	- योंही
ुक	- जलाना	वाडवोवुंक, सोन्तु करुंक	- बुझाना
(जोडु)	- भारी	वेळु, समयु	- समय
ुंक	- काटना	आज्ञा, आदेशु	- आज्ञा
	- गुण	दोष	- दोष
	- पक्षी	काणी	- कहानी
र	- वचन	उत्तर दीवुंक	- वचन देना
त	- पता	देहस्थिति	- स्वास्थ्य
ी	- हाथी	निंबूवो	- नींबू
कळेवुंक	- खिलना	विसकळावुंक	- खोलना
ा उदक	- गुलाब जल	चाम्पें	- चम्पा
ोरें	- मोगरा, कुंद	जायि	- जुही
	- भिण्डी	दाळि	- दाल
पी	- रसोइया	वास्सरि	- रसोईघर
ापेट	- दियासलाई	हान्तूण	- बिस्तरा

कोंकणी में अपूर्ण वर्तमान काल और तात्कालिक भूतकाल
त करने केलिये क्रिया के कोई विशेष रूप नहीं होते । क्रिया

के सामान्य वर्तमान काल और अपूर्ण भूतकाल रूप के प्रयोग से ही इनका बोध होता है। जैसे :—

तो हांगा येता. — वह यहाँ आता है। (आ रहा है)

हांव फळ खातां. — मैं फल खाता हूँ। (खा रहा हूँ)

तो बूकु वाचतालो. — वह किताब पढता था। (पढ रहा था)

तो बरप बरेयताली. — वह चिट्ठी लिखती थी। (लिख रही थी)

वाक्य

तूं आजि थांगा इतें करता ?	तुम आज वहाँ क्या कर रहे हो?
तो बूकु वाचता.	वह किताब पढ रहा है।
तो कसलो बूकु वाचता ?	वह क्या किताब पढ रहा है?
हांव चीटि बरेयतां.	मैं पत्र लिख रहा हूँ।
आमी काम करतात.	हम काम कर रहें हैं।
कालि सांजे तुमी कितें करताले.	कल शाम आप क्या कर रहे थे?
आमी ताजे लागि उल्लैताले.	हम उससे बोल रहे थे।
ते केदनायि खेळताले.	वे हमेशा खेल रहे थे।
रामु आतां कापि पीता.	राम अब काफ़ी पी रहा है।
हांव गेलेल्या वेळारि तो खेळतालो.	जब मैं गया, तब वह खेल रहा था।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

मैं हिन्दी सीख रहा हूँ। हम पाठ पढ रहे हैं। तू क्या कर रहा है? तुम वहाँ क्यों जा रहे हो? सीता कहानी सुन रही है। लडकियाँ मैदान में खेल रही हैं। राम पानी नहीं पी

। वे कपड़े धो रहे हैं। आप क्या बोल रहे हैं? लोग
ि शहर आ रहे हैं।

राम चिट्ठी लिख रहा था। तुम कल वहाँ क्या कर रहे थे?
ी रहे थे। सीता चाय पी रही थी। वे वहाँ क्या देख
? वे कल शाम को कहाँ जा रहे थे? सीता रेडियो पर
ुन रही थी। कल रात ज़ोर से पानी बरस रहा था।

पाठ 26

संदिग्ध वर्तमान काल और संदिग्ध भूत काल

	- पसीना	भारकूण	- जुकाम
	- खासी	भेंरि	- दस्त
	- मच्छड	बिक्कुण्डु	- खटमल
	- चिड़िया	पारवो	- कबूतर
	- गधा	सोरोपु	- साँप
	- ऊँट	बागूळें	- चमगीदड़
त	- दीमक	मृग	- पशु
ळ	- दमा	घुवळि	- चक्कर
	- उलटी	पागार	- दीवार
ा घालुंक	- खोना, फेंक देना	रान्दुंक	- पकाना
क	- उबलना	सिजौंक	- उबालना
	- पीसना	वोवुंक, ओवुंक	- बोना

धूरा सरुंक	- हटना	धूरा काडुंक	- हटाना
बुडुंक	- डूबना	चीरुंक	- चीरना
पींजुंक	- फटना	पींजौंक	- फाडना
कातरुंक	- कटना, काटना	वरुंक	- जीना
आडावुंक	- रोकना	आडावण	- रुकावट

संदिग्ध वर्तमान काल

क्रिया के वर्तमान काल में संदेह या अनिश्चय प्रकट करने के लिये कोंकणी में मुख्य क्रिया के वर्तमान काल के रूपों के साथ 'जावुंक' क्रिया के निश्चित या साधारण भविष्यत काल के रूपों का उपयोग करते हैं। जैसे :-

तो आतां येता जातलो. – वह अब आता होगा।

ती गाडी मद्रसाक वत्ता जातली. – वह गाडी मद्रास जाती होगी।

भुरगीं आतां खेलतात जातलीं. – बच्चे अब खेलते होंगे।

संदिग्ध वर्तमान काल

उल्लौंक – बोलना

	एकवचन		बहुवचन	
उ०	हांव उल्लैतां जातलों	- मैं बोलता हूँगा	आमी उल्लैतात जातले	- हम बोलते होंगे
म०	तूं उल्लैता जातलो	- तू बोलता होगा; तुम बोलते होगे	तुमी उल्लैतात जातले	- आप बोलते होंगे

तो उल्लैता - वह बोलता		ते उल्लैतात - वे बोलते	
जातलो	होगा	जातले	होंगे
ती उल्लैता - वह बोलती		त्यो उल्लैतात - वे बोलती	
जातली	होगी	जातल्यो	होंगी
तें उल्लैता - वह बोलता		तीं उल्लैतात - वे बोलते	
जातलें	होगा	जातलीं	होंगे

भूतकाल

भूत काल में संदेह या अनिश्चय प्रकट करने के लिये कोंकणी य क्रिया के सामान्य भूतकाल के रूपों के साथ 'जावुंक' क्रिया श्चित या साधारण भविष्यत काल के रूपों का उपयोग है। जैसे :—

तो मद्रासाक गेलो जातलो. - कल वह मद्रास गया होगा।
(गेलो जायत) (गया हो)

ईं काम केलें जातलें. - उसने यह काम किया होगा।
(केलें जायत) (किया हो)

तागेलें पाठ वाचलें जातलें. - रामने अपना पाठ पढा होगा।
(पढा हो)

संदिग्ध भूतकाल

उल्लौंक — बोलना

एकवचन		बहुवचन	
ांव उल्लैलों - मैं बोला		आमी उल्लैले - हम बोले	
जातलों	हूंगा	जातले	होंगे
उल्लैलो - तू बोला		तुमी उल्लैले - आप बोले	
जातलो	होगा; तुम बोले होगे	जातले	होंगे

अ०	तो उल्लैलो जातलो	- वह बोला होगा	ते उल्लैले जातले	- वे बोले होंगे
	ती उल्लैली जातली	- वह बोली होगी	त्यो उल्लैल्यो जातल्यो	- वे बोली होंगी
	तें उल्लैलें जातलें	- वह बोला होगा	तीं उल्लैलीं जातलीं	- वे बोले होंगे

मुख्य क्रिया के निषेधार्थ रूप के साथ 'जावुंक' क्रिया के ये ही रूप जोडकर इन दोनों कालों के निषेधार्थ रूप बनाये जाते हैं।

संदिग्ध वर्तमान काल – निषेधार्थ रूप

	एकवचन		बहुवचन	
उ०	हांव उल्लैनां जातलों	- मैं बोलता न हूँगा	आमी उल्लैनात जातले	- हम बोलते न होंगे
म०	तूं उल्लैना जातलो	- तू बोलता न होगा; तुम बोलते न होगे	तुमी उल्लैनात जातले	- आप बोलते न होंगे
अ०	तो उल्लैना जातलो	- वह बोलता न होगा	ते उल्लैनात जातले	- वे बोलते न होंगे
	ती उल्लैना जातली	- वह बोलती न होगी	त्यो उल्लैनात जातल्यो	- वे बोलती न होंगी
	तें उल्लैना जातलें	- वह बोलता न होगा	तीं उल्लैनात जातलीं	- वे बोलते न होंगे

संदिग्ध भूतकाल – निषेधार्थ रूप

	एकवचन		बहुवचन	
उ०	हांव उल्लैलोंना जातलों	- मैं बोला न हूंगा	आमी उल्लैलेनात जातले	- हम बोले न होंगे

उल्लैलोना - तू बोला जातलो न होगा; तुम बोले न होंगे	तुमी उल्लैलेनात - आप बोले जातले न होंगे
तो उल्लैलोना - वह बोला जातलो न होगा	ते उल्लैलेनात - वे बोले न जातले होंगे
ती उल्लैलीना - वह बोली जातली न होगी	त्यो उल्लैल्योनात - वे बोली न जातल्यो होंगी
तें उल्लैलेंना - वह बोला जातलें न होगा	तीं उल्लैलींनात - वे बोले न जातलीं होंगे

वाक्य

आतां पुस्तक वाचता जातली.	शारदा अब पुस्तक पढती होगी।
तिग्गेल्या भयणीक एक चीटि बरेयता जातली.	सीता अपनी बहन को एक चिट्ठी लिखती होगी।
दु आतां हिन्दी शीकता जातलो.	गोविन्द अब हिन्दी सीखता होगा।
डियोन्तु गीन्तु आयकता जातली.	रमा रेडियो पर गीत सुनती होगी।
चेरडाक दूद दीता जातली.	माँ बच्चे को दूध देती होगी।
ट्ठ कापड धूता जातलो.	धोबी कपडा धोता होगा।
य पीतात जातले.	वे चाय पीते होंगे।
यि थांगा वचना जातली.	वह कल वहाँ जाती नहीं होगी।
ाजे लागि उल्लैना जायत.	राम उससे बोलता न हो।
ां सांगनात जायत.	वे उनसे कहते न हों।

आवयन रोंटी केली ना जातली.	माँ ने रोटी बनायी नहीं होगी।
ताणें चीटि हाळ्ळो (हाडली) जातली.	वह चिट्ठी लाया होगा।
तांणी मागेल्या नांवांरि एक पत्र घालें जायत.	उन्होंने मेरे नाम एक पत्र डाला हो। (भेजा हो)
तो दफ्तरान्तु थाकून आयलो जातलो.	वह दफ़तर से आया होगा।
रामु परीक्षेन्तु पास जालो जातलो.	राम परीक्षा में पास हुआ होगा।
ताणें खाण खालें (खेल्लें) जातलें.	उसने खाना खाया होगा।
तो उदक पीलो (पिल्लो) जातलो.	उसने पानी पिया होगा।
तो आतांय घरकडे आयलोना जायत.	वह अभी घर पर आया न हो।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

वह अब रोटी खाता होगा। वे किताब पढते होंगे। सीता आज मद्रास से आती होगी। उसका भाई कालेज आता होगा। राम घर में काम न करता होगा। लडकियाँ अब हिन्दी पढती होंगी। वह कमरे में सोता होगा। वे अब नहाते हों। वह अपनी बहन को एक चिट्ठी लिखती होगी। वे कल यहाँ आते नहीं होंगे। उसका बाप अब घर में क्या करता होगा? वे अपना पाठ नहीं पढते होंगे। परसों सीता रेडियो पर गाती नहीं होगी। राम ने यह बात उससे कही हो। वह अब दफ़तर गया हो। उसने अब चाय पी होगी। तुम ने उसको देखा होगा। तुमने यह किताब पढी नहीं होगी। उन्होंने गरीबों को धन दिया होगा। राम ने यह चीज़ कहाँ से लायी होगी? वे दिल्ली से वापस न पहुँचे होंगे। अध्यापक अब स्कूल गये होंगे। उन्होंने हिन्दी सीखी नहीं होगी। तुम ने रामचन्द्र की कथा सुनी हो।

पाठ 27

हेतुहेतुमद् भूतकाल

	- बन्धक, धरोहर	घाणो	- कोल्हू
	- ब्याज, सूद	मदल	- पूँजी
ान	- पान	चुन्नो	- चूना
	- सुपारी	धूरापान	- तम्बाकू
(धुव्वर)[1]	- धुआँ	कारापूल	- लौंग
	- इलायची	कोत्तम्बरि	- धनिया
	- जीरा	मिरियासांग	- मिर्च
ल	- नारियल का तेल	तीळेल	- तिल का तेल
	- तिल	सासम	- सरसों
ां	- मिटी का तेल	मीट	- नमक
	- हलदी	मोट्टो	- अण्डा
	- कोयला	दोवु	- बरफ़
	- अनाज	कोपु	- गुस्सा
	- ईख	मोगु	- प्रेम, प्यार
र	- कैंची	सूत	- धाग, सूत
	- रूई	निस्सणि	- निसेनी
	- जामाता	सून	- बहू
	- ससुर	मांयं	- सास
	- पुत्र या पुत्री का ससुर (समधी)	वेंणि	- पुत्र या पुत्री की सास (समधिन)
	- धंधा, पेशा	दंदेली	- पेशेवर
	- सोनार	कोलंचो	- लोहार

मुकवंचो	- मछुवा	ब्यारी	- व्यापारी
कूडि	- पूजाघर	वासरि	- रसोई घर
न्हाणि	- स्नानागार	जग्गलि	- बरामदा

हेतुहेतुमद् भूतकाल

इस काल की क्रिया से यह ज्ञात होता है कि कार्य भूतकाल में होनेवाला था किन्तु कारणवश न हो सका। मुख्य क्रिया के निश्चित भविष्यत काल के रूपों के साथ 'आसुंक' क्रिया के भूतकाल रूप जोडकर कोंकणी में इस काल की क्रिया का रूप बनाया जाता है। जैसे :—

तूं पास जातलो आसलो.	– तुम पास होते।
तो येतलो आसलो.	– वह आता।
हांव थांगा वतलों आसलों.	– मैं वहाँ जाता।
पावसु पडतलो आसलो.	– पानी बरसता।

हेतुहेतुमद् भूतकाल के प्रयोग में उपवाक्य की क्रिया, सामान्य भूतकाल रूप से 'जाल्यार'* जोड कर बनायी जाती है। जैसे :—

तो काल हांगा आयलो जाल्यार	- वह कल यहाँ आता (आया) तो
तो गेलो जाल्यार	- वह जाता (गया) तो
ताणें वाचलें जाल्यार	- वह पढता (पढा) तो
ताणें खालें (खेलें) जाल्यार तागेलें पोट भरतलें आसलें	- अगर वह खाता तो उसका पेट भरता

*भूतकालिक कृदन्त से 'यार' जोडकर जो क्रिया रूप बनाया जाता है उससे क्रिया के होने की संभावना रहती है। जैसे: –

तो आयल्यार	– वह आये तो
तो गेल्यार	– वह जाये तो
ताणें वाचल्यार	– वह पढे तो
तो आयल्यार हांव वतलों	– वह आये तो मैं जावूँगा।
ताणें वाचल्यार तो पास जातलो	– वह पढे तो पास होगा।

पडलो (पळ्ळो) ना र हांव थांगा वतलों आसलों.	- पानी न बरसता (बरसा) तो मैं वहाँ जाता ।
का सांगलें जाल्यार तो येतलो आसलो.	- अगर तुम उससे कहते तो वह आता ।
ांगलें जाल्यार ताणें वचीना आसलें.	- अगर तुम कहते तो वह न जाता ।

वाक्य

ायलो जाल्यार पुस्तक व्हरतलो आसलो.	(अगर) वह आता तो किताब ले जाता ।
मागेल्या घराक आयलो र हांव थांगा वतलों आसलों.	(अगर) आप मेरे घर आते तो मैं वहाँ जाता ।
भूक आसली जाल्यार हांव जेवतलों आसलों.	मुझे भूख होती तो मैं खाना खाता ।
न सांगलेलें चेरडुवानी ं जाल्यार परीक्षेक हारवचीना आसलें.	अध्यापक का कहना मानते तो लडके परीक्षा में फ़ेल न होते ।
नगिलें जाल्यार तो माका ुस्तक दीतलो आसलो.	मैं मांगता तो वह मुझे पुस्तक देता ।
गि दाम आसलो जाल्यार ो बूकु काडून घेतलों आसलों.	मेरे पास पैसा होता तो मैं वह पुस्तक खरीदता । (लेता)
ले जाल्यार तुमगेली भूक वतली आसली.	तुम भोजन करते तो तुम्हारी भूख मिटती ।

आज सकाळिं पावस पळ्ळो (पडलो) ना जाल्यार हांव तुगेल्या घराक येतलों आसलों.	आज सबेरे पानी न बरसता (बरसा) तो मैं तुम्हारे घर आता।
तुवें हें ओकद खालें (खेलें) जाल्यार दूकी वतली आसली.	तुम यह दवा खाते तो दर्द चला जाता।
चोरांचे (व्या) मागल्यान धावलो जाल्यार तांकां धरयेत आसलें.	चोरों का पीछा करते तो उनको पकड लेते।

कोंकणी में अनुवाद कीजिये :—

अगर वह न दौड़ता तो न गिरता। भारत में एकता होती तो अंग्रेज़ भारत पर शासन न करते। कल शाम अगर तुम मेरे घर आते तो हम सिनेमा देखने जाते। वे अच्छी तरह पढते तो परीक्षा में पास होते। अगर मैं उससे मिलता तो यह बात ज़रूर उससे कहता। अगर वह ठीक समय पर जाता तो तफ़्तर पहुँचता। तुम पहले कहते तो मैं चिट्ठी लिखता। यदि नौकर यह काम ठीक न करता तो साहब नाराज़ होते। यदि तुम साफ़-साफ़ कहते तो मैं ठीक ठीक समझता। अगर गान्धीजी दक्षिण भारत में आते तो मैं उनके दर्शन करता।

पाठ 28

बातचीत

e phrases of common use and expressions.

1

?	तुम कौन (हो) ?
क चेलो ।	मैं एक लडका (हूँ)।
ांव इतें ? (कितें)	तुम्हारा नाम क्या है ?
नांव गोपाळ ।	मेरा नाम गोपाल है ।
ो ?	तुम कहाँ के हो ?
चीचो ।	मैं कोचीन का (हूँ)।
राबता ?	तुम कहाँ रहते हो ?
च्ची राबता ।	मैं कोचीन में रहता हूँ ।
घरान्तु कोण कोण आसात?	तुम्हारे घर में कौन-कौन हैं ?
घरान्तु मागेले माय-बाप,	मेरे घर में मेरे माँ-बाप, भाई
, आनी भयणि आसात.	और बहन हैं ।
बापाचें नांव इतें ? (कितें)	तुम्हारे पिता का नाम क्या है ?
बापाचें नांव गोविन्द.	मेरे पिता का नाम गोविन्द (है)।
कसलें काम करता ?	गोविन्द क्या काम करता है ?
कारी काम करता.	वह सरकारी काम करता है ।
आवय कसलें काम करता ?	तुम्हारी माँ क्या काम करती है ?
नें काम करता ।	वह घरका काम करती है ।
तल्यो भयण्यो आसात ?	तुम्हारे कितनी बहनें हैं ?
गीं जणां भयण्यो आसात.	मेरे तीन बहनें हैं ।

भाव कितले आसात ?	भाई कितने हैं ?
दोग जणां भाव आसात.	दो भाई हैं।
एकलो माजे पाशीय व्हळ्ळो आनी दूसरो माजे पाशीय धाक्टो। (धाकलो)	एक मुझसे बडा और दूसरा मुझसे छोटा। (है)
व्होडु (व्हड) भाउ स्कूलान्तु वता, धाकलो (धाकटो) भाउ भो सानु.	बडा भाई स्कूल जाता है, छोटा भाई बहुत छोटा। (है)
तुगेली भयणि[1] कितें करता ?	तुम्हारी बहन क्या करती है ?
तीवय शिकता।	वह भी सीखती है।

2

तूं विष्णुक ओळकता वे ?	क्या तुम विष्णु को जानते हो ?
व्हय, (होय) हांव ताका ओळकतां.	हाँ, मैं उसको जानता हूँ।
तागेली प्राय (वय) कितें ? (इतें)	उसकी उम्र क्या है ?
तागेली प्राय वीस वर्षां.	उसकी उम्र बीस साल की है।
तो मागेलो आपप्पा.	वह मेरा चाचा (है)।
तो खंय काम करता ?	वह कहाँ काम करता है ?
तो दफतरान्तु काम करता.	वह दफ़तर में काम करता है।
ताका वेतन (पागार) कितें मेळता ?	उसको क्या वेतन मिलता है ?
ताका मासाक शेंभर रुपय मेळता.	उसको महीने में सौ रुपया मिलता है।
तागेलें घर खंथंय ?	उसका घर कहाँ (है)।
तागेलें घर गोयांत.	उसका घर गोवा में (है)।
आमी कोण ?	हम कौन (हैं) ?

भारतीय.	हम भारतीय (हैं)।
ी मायभास कितें?	आपकी मातृभाषा क्या (है)?
ली मायभास कोंकणी।	हमारी मातृभाषा कोंकणी (है)।
आमगेली राष्ट्रभास.	हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा (है)।
ण?	यह कौन (है)?
क चेडूं (चेली).	यह एक लडकी (है)।
लेचें नांव कितें (इतें)?	इस लडकी का नाम क्या (है)?
नांव शारद।	इसका नाम शारदा (है)।
कृष्णाली भयणि तं।	शारदा कृष्ण की बहन है।
तें (इतें) करता?	वह क्या करती है?
न्त शिकता।	वह गीत सीखती है।
वायलिन (फ़िडिल) वाजुंक कळता वे?	क्या, वह वयलिन (फ़िडिल) बजाना जानती है?
वाजुंक कळना, म्हणुंक कळता।	वह बजाना नहीं जानती, गाना जानती है।

3

हांगा यो, कदेलार बैस.	लडके, यहाँ आओ, कुरसी पर बैठो।
य खंय वतलो?	तुम कल कहाँ जाओगे?
कलकत्ताक वतलो.	मैं कलकत्ता जावूँगा।
ाय राति णव्व वरां भांडीक (भाण्डीक) वतलों.	मैं कल रात नौ बजे की गाडी से जावूँगा।
ताक तुगेलो कोण आसा?	कलकत्ते में तुम्हारा कौन है?

कलकत्ताक मागेल्या बापाचो दोस्तु राबता.	कलकत्ते में मेरे बाप का दोस्त रहता है।
तो थांगा कितें करता?	वह वहाँ क्या करता है?
तो थांगा ब्यार करता.	वह वहाँ व्यापार करता है।
कसलो ब्यार करता?	क्या व्यापार करता है?
तेल्लाचो ब्यार करता.	तेल का व्यापार करता है?
कितलीं वर्षा ज़ालीं?	कितने साल हुए?
तीनि वर्षां जालीं.	तीन साल हुए।
हें कोण?	यह कौन (है)?
ही एक गाय।	यह एक गाय है।
ग़ाय आमकां दूद दीता.	गाय हमको दूध देती है।
गायचें दूद गोड आसा।	गाय का दूध मीठा है।
आमी गायचें दूद पीतात.	हम गाय का दूध पीते हैं।
आमी म्हशीचें दूद मेणायं करुंक काडतात.	हम भैंस का दूध दही बनाने लेते हैं।
गायक चार पाय आसात.	गाय के चार पैर होते हैं।
तिज्या मात्यार दोनि सींगा आसात।	उसके सिर पर दो सींग होते हैं।
तिका एक बाल आसा.	उसके एक पूँछ होती है।
गायचें बाल दीग आसा.	गाय की पूँछ लंबी होती है।
गाय एक साधु मृग (तं[1]).	गाय एक सीधी सादी जानवर (है)।
गायचे लागि वचाक[1] नज म्हणु चेरडुवां लागि सांग.	बच्चों से कहो कि वे गाय के पास न जायँ।

4

भाउ मद्रासा थाकून केन्ना आयलो ?	तुम्हारा भाई मद्रास से कब आया ?
ाज सकाळि आयलो.	वह आज सबेरे आया ।
घरकडे थाकून केदना (केन्ना) भायर सरले ?	आप घर से कब निकले ?
घरकडे थाकून सांजे चार वरांर भायर सरलों.	मैं घर से शाम को चार बजे निकला ।
तो चेलो आतांय सन्तान्त ांकून परतून आयलो नावे ?	क्या, वह लडका अब तक बाज़ार से वापस न आया ?
ी आतांय परतून आयलोना.	नहीं, वह अब तक वापस न आया ।
ति कितल्या वरांर निद्दलो? (नीदलो)	तुम रात को कितने बजे सोये ?
धा वरांर निद्दलों (नीदलों).	मैं दस बजे सोया ।
हो बूकु खंय थाकून हाडलो ? (हाळ्ळो)	सीता यह किताब कहाँ से लायी?
ड थाकून हाळ्ळो.	दूकान से लायी ।
गा कितले दीस राबलों ?	वह यहाँ कितने दिन रहा ?
गा खंय राबलो ?	वह यहाँ कहाँ ठहरा ?
गा सत्रान्तु राबलो.	वह यहाँ धर्मशाला में रहा ।
ली भयणि खंय गेली ?	जॉण की बहन कहाँ गयी ?
पणाल्या घराक गेली.	वह अपने घर गयी ।

5

मागेल्या भावाक केदना देकलो ?	तुमने मेरे भाई को कब देखा ?

हांवें ताका काल दन्पारां देकलो.	मैं ने उसको कल दोपहर को देखा।
तो कितें करतालो ?	वह क्या कर रहा था ?
तो कदेलार बैसून बूकु वाचतालो.	वह कुरसी पर बैठकर किताब पढ रहा था।
तुमी आतां कितें करतात ?	आप अब क्या कर रहे हैं ?
हांव आतां बरप बरेयतां.	मैं अब चिट्ठी लिख रहा हूँ।
रामान कवड दिल्लेंवे ? (दीलेंवे)	क्या, राम ने किवाड बन्द किया?
व्हय, ताणें कवड दिल्लें. (दीलें)	हाँ, उसने किवाड बन्द किया।
ताणें कवड कित्याक बन्द केल्लें ?	उसने दरवाज़ा क्यों बन्द किया?
हांव नेण, ताणें माजेलागि सांगलें ना.	मुझे मालूम नहीं, उसने मुझ से नहीं कहा।
तुगेल्या आवयन (आम्मान) ताका कित्याक सान्तान्त पेटेयला ?	तुम्हारी माँ ने उसको क्यों बाज़ार भेजा है ?
मागेल्या आम्मान ताका सामान हाडुंक पेटेयला.	मेरी माँ ने उसको सामान लाने भेजा है।
ताणें माका कित्याक उळदीला ?	उसने मुझे क्यों बुलाया है ?
कित्याक म्हळ्यार तागेलो भाउ आज कलकत्ताक वत्ता.	क्योंकि उसका भाई आज कलकत्ते जा रहा है।

6

ती कोण ?	वह कौन है ?
ती गोपळाची भयणि.	वह गोगाल की बहन (है)।
तूं तिका ओळकतावे ?	क्या, तुम उसे जानते हो ?

हांव तिका चांग जावनु ओळकतां.	हाँ, मैं उसको अच्छी तरह जानता हूँ।
दनाय तुगेल्या घरकडे येतावे?	क्या, वह रोज़ तुम्हारे घर आती है?
ती केदनाय येना, हफ्तेन्तु दोन दीस येत्ता.	नहीं, वह रोज़ नहीं आती, हफ़्ते में दो दिन आती है।
ा तिजेलागि कसल्या (कसल) भासेन उल्लैता?	माँ उससे किस भाषा में बोलती है?
तिजेलागि कोंकणी भासेन उल्लैता.	वह उससे कोंकणी भाषा में बोलती है।
ागेल्या आम्माक देकुंक येता.	वह मेरी माँ से मिलने आती है।
कोंकणी कळतावे?	क्या, उसको कोंकणी मालूम है?
स्वल्प-स्वल्प कोंकणी कळता.	हाँ, थोडी थोडी कोंकणी मालूम है।
ा कोंकणी शिकतलीं.	मैं भी कोंकणी सीखूँगी।
ाय शिकका.	मुझे भी सीखना चाहिये।
ंणी स्वयंशिक्षक’ काडून घे आनी शीक.	‘कोंकणी स्वयं शिक्षक खरीदो और सीखो।
णी एक आर्य भास तं.[1]	कोंकणी एक आर्य भाषा है।
ास गोयान्तुलें जनां[1] उल्लैता.	वह भाषा गोवा की जनता बोलती है।
णी उल्लौचें जनपद मंगलूर, क्षिण आनी उत्तर कन्नड देश ानी केरळ–हांगा राबता.	कोंकणी बोलनेवाली जनता मंगलापुरम, दक्षिण और उत्तर कन्नड और केरळमें रहती हैं।
णो भासेक साहित्य आसावे?	क्या, कोंकणी भाषा का साहित्य है?
त्य ऊणें.	साहित्य कम।

तें साहित्य कसल्या (कसल) लिपीन्तु मेळता?	वह साहित्य किस लिपि में प्राप्त है?
तें तीनि लिपीन्तु मेळता—कन्नड, नागरी आनी रोमन लिपीन्तु.	वह तीन लिपियों में मिलता है-कन्नड, नागरी और रोमन लिपि में।

7

आरे राम, कालि तूं खंय गेल्ललो ?	अरे राम, कल तुम कहाँ गये थे।
कालि हांव मागेल्या मामाथंय[1] गेल्ललों.	कल मैं अपने मामा के यहाँ गया था।
तागेलें घर खंथंय ?	उसका घर कहाँ है।
तागेलें घर गावान्त तं[1].	उसका घर गाँव में है।
तूं एकलो गेल्ललो ?	क्या, तुम अकेले गये थे ?
न्हंय, माजेलागि मागेलो भावूय आसलो.	नहीं, मेरे साथ मेरा भाई भी था।
तुगेलो मामु हांगा केदना आयललो ?	तुम्हारा भाई यहाँ कब आया था?
तो हाँगा तीन दीस फूडे आयललो, त्यावेळार तूं हांगा नासललो.	वह यहाँ तीन दिन पहले आया था, उस समय तुम यहाँ नहीं थे।
मामु आनि केदना येतलो ?	मामा फिर कब आयेगा ?
हांव नेण[1]. एक समयार चार दीस सारनु येतलो.	मुझे मालूम नहीं। शायद चार दिन बाद आयेगा।
तुगेल्या हातान्तु कितें (इतें) आसा ?	तुम्हारे हाथ में क्या है।
मागेल्या हातान्तु पुस्तक आसा.	मेरे हाथ में किताब है।
कसलें पुस्तक ?	कौनसी किताब ?
कोंकणी स्वयं शिक्षक.	कोंकणी स्वयंशिक्षक।

ी शिकता वे ?	क्या, तुम कोंकणी सीखते हो ?
व एक मासु जालो कोंकणी शिकतां.	हाँ, एक महीना हुआ मैं कोंकणी सीखता हूँ ।
़णी कोण शिकैता ?	तुम को कोंकणी कौन सिखाता है?
मास्तर कोंकणी शिकैता.	मुझे एक मास्टर कोंकणी सिखाता है।
ोंकणी शिकुंक वतली ना वे ?	तुम भी कोंकणी सीखने जाओगी ना ?
जरूर (निश्चय जावनु) वतलीं.	हाँ, मैं ज़रूर जाऊँगी ।
हिन्दीवरी एकि चांगि भास तं.[1]	कोंकणी हिन्दी की तरह एक अच्छी भाषा है।

8

ी आसात ?	आप कैसे हैं ?
आसां.	मैं चंगा हूँ ।
ां चांग करो. (बरें करो)	ईश्वर आपका भला करे ।
थाकून येतात ?	आप कहाँ से आ रहे हैं ?
सा थाकून येतां.	मैं मद्रास से आ रहा हूँ ।
ोरडुवां कशशी आसात ?	आपके बच्चे कैसे हैं ?
आसात.	वे अच्छे है ।
ाबतात ?	वे कहाँ रहते हैं ?
ागि राबनात.	वे मेरे साथ नहीं रहते ।
शिकतात.	वे स्कूल में पढते हैं ।
स्तलान्त राबतात.	इसलिये होस्टल में रहते हैं ।

तांचेलागि थाकून बरप (चीटि) येतावे ?	उनके पास से चिट्ठी आती है?
व्हय, तीं माका बरप (चीटि) बरेयतात.	हाँ, वे मुझको चिट्ठी लिखते हैं।
तांगेलीं बरपां माका हफ्तेन्तु दोनि (दोन) फान्ता मेळतात.	उनकी चिट्ठियाँ मुझे हफ्ते में दो बार मिलती हैं।
अरे जॉण, तुगेल्या घरकडे आज कोण सोयरो आयला ?	अरे जॉण, तुम्हारे घर में आज कौन रिश्तेदार आया है?
मागेल्या घरकडे मागेली मौसी आनी तिगेलो पूतु आयल्यात.	मेरे घर में मेरी मौसी और उसका पुत्र आये हैं।
तीं मागेल्या घरकडे आयलींनात कित्याक ?	वे मेरे घर में आये नहीं क्यों?
तीं मागेल्या घरकडे येनातिल्लें गेलीं.	वे मेरे घर आये बिना चले गये।
मागेल्या घरकडे येनातिल्लें गेलीं देकूनु तीं तुगेल्या घरकडे गेल्यांत म्होणु माका मनान्तु जालें (कडलें).	चूँकि वे मेरे घर आये बिना चले गये इसलिये मुझे मालूम हुआ कि वे तुम्हारे घर गये हैं।
तीं आनी केदना येतलीं ?	वे फिर कब आयेंगे?
हांव नेण, माजेलागि कांय सांगलेलें ना.	मालूम नहीं, मुझसे कुछ नहीं कहा है।
आनी दोन मासांक तानी येवना म्हणु दिसता.	मालूम होता है कि वे और दो महीने तक न आयेंगे।
तीं आयल्यार माका सांगका.	वे आयें तो मुझसे कहना।

9

तुमकां कितें (इतें) जाय ?	आपको क्या चाहिये ?
माका उदक जाय.	मुझे पानी चाहिये।

तान लागली.	मुझे प्यास लगी है ।
तो खोल्लो हांगा हाडुंक जायतवे ?	क्या, तुम वह गिलास यहाँ ला सकते हो ?
जायत, हांव हाडीन.	मुझसे हो सकता है, मैं लाऊंगा ।
र हांव तुका तान्तु उदक दीन.	तो मैं तुमको उसमें पानी दूँगा ।
आज थांगा वचकावे ?	क्या, आपको आज वहाँ जाना है?
माका आज थांगा वचका नाका.	नहीं, मुझको आज वहाँ जाना नहीं है ।
मागेथंय येश्शीवे ?	क्या, तुम कल मेरे यहाँ आओगे? (आ सकते हो)
का येवंचाक जावंचीना.	नहीं, मैं आ नहीं सकूँगा ।
हें काम केदना करुंक लागतले ?	आप यह काम कब करने लगेंगे ?
ाय थाकून हें काम करुंक लागतलों.	मैं कल से यह काम करने लगूँगा ।
य हांगा यतलो म्हणु तुमी जाणात वे ?	आप जानते हैं कि वह कल यहाँ आयेगा ?
आमी नेणात. परां हांगा ते येतले खंय.	नहीं जानते, हम नहीं जानते । कहते हैं कि परसों वे यहाँ आयेंगे ।
ांगा एक परिषद आसतलें खंय.	कहते हैं कि कल यहाँ एक सम्मेलन होगा ।
ोण कोण उल्लैतले ?	उसमें कौन कौन बोलेंगे ?
ण, माका कळना.	मैं नहीं जानता, मुझे मालूम नहीं ।

हांव जाण, माका कळता.	मैं जानता हूँ, मुझे मालूम है।
त्या परिषदान्तु व्हळे व्हळे मनीष उल्लैतले, अश्शी सांगतात.	उस सम्मेलन में बडे बडे लो बोलेंगे, ऐसा कहते है

10

ह्या आंगडिन्तु कितें कितें (इतेतकूट) मेळता.	इस दूकान में क्या क्या मिलत है
हांगा ओरोवु, दाळि, तेल, मीट, मीरसांग (मिरियासांग) आदि मेळता.	यहाँ चावल, दाल, तेल, नमक लालमिर्च आदि मिलते हैं
तुमका कितें कितें जाय ?	आपको क्या क्या चाहिये ?
माका एक लितर तेल आनी दोनि किलोग्राम ओरोवु जाय.	मुझे एक लिट्टर तेल और द किलोग्राम चावल चाहिये
तेल कसलें जाय ? नारलेल कि तीळेल ?	तेल कौन-सा चाहिये ? नारियल का तेल या तिल का तेल
माका नारलेल पूरो, तीळेल नाका.	मुझे नारियल का तेल काफ़ी है तिल का तेल नहीं चाहिये
आनी कितें (इतें) जाय ?	और क्या चाहिये ?
आनी कांय नाका.	और कुछ नहीं चाहिये।
लेक करि (कर). कितलो पैसो जालो।	हिसाब करो। कितना पैसा हुआ
पन्नेरा रुपय पन्नास पैसो जालो.	पन्द्रह रुपये, पचास पैसे हुए।
घे, पैसा काडून घे.	लो, पैसा ले लो।
तेल्लाक मोल कितें (इतें) ?	तेल का भाव क्या है ?
तेल्लाक लितराक धा रुपय पांचेवीस पैसा.	तेल केलिये फ़ी लिट्टर दस रुपये पचीस पैसे।

क मोल चडलें (चळ्ळें). तेल म्हारग जालें.	तेल का भाव बढ गया है। तेल महंगा हो गया।
तेल आज ससार (सवाय) काल हाजाकूय मोल चड आसलें.	नहीं, तेल आज सस्ता हुआ। कल इसकी अपेक्षाभाव अधिक था।
, हांव वतां, मागीर देकूं. नमस्कार. देवु बरें करो.	अच्छा, मैं जाता हूँ। फिर मिलूँगा। नमस्ते। इश्वर भला करे।

पाठ 29

कायळो आनी गुरबजि (गिरबुज)

एक आसलो कायळो. एक आसली गुरबजि. कायळान शेण ालें. गुरबजेन मेण पुंजायलें. कायळान शेणा घर केलें. जेन मेणा घर केलें. कायळालें घर शेणाचें, गुरबजेलें घर वें.

एक दीस कायळान म्हळ्ळें– "व्हळ्ळें एक ओत येवो, जेलें घर कोळनु (कडून) वचो". हें आयकून गुरबजेन ळें– "व्हडु एक पावसु येवो, कायळालें घर व्हळनु वचो."

हेरदूसा सकाळि मळबारि चारीय तान्तु मोड दवरनु आयलें. झोडु आयलो आनी घो घो जावनु पावसु पडुंक लागलो. णाधारेच्या पावसान्तु कायळाल्लें घर व्हळनु गेलें. सांजे थापून पाकां फडफडावनु शीयान कडकडेवनु गुरबजेल्या

घराक कायळो आयलो. घरा कवड दीवनु आसलें. कव
मारनु ताणें सांगलें—"गुरब-गुरबजे कवड काडि."

गुरबजि वासर्यान्तु चेरडुवांक वाडतालो. शब्दु आय
तीणें (तिणें) सांगलें- "राब, चेरडुवांक वाडूनु (वाणु) येतां
एक घडी गेली गुरबजि येना. ताणें दुसरीय म्हळ्ळें-"गु
गुरबजे, कवड काडि." कायळालें उत्तर आयकून गुरबजेन सां
"राब, चेरडुवांक लावनु येतां." गुरबजेली जाप आयकून काय
नुतो राबलो. मागोरीय गुरबजि आयलीना. दुसरीय कायळ
म्हळ्ळें- "गुरब-गुरबजे कवड काडि." आतां गुरबजेन सांग
"राब कायळ्या, चेरडुवांक निदावनु येतां."

गुरबजेन चेरडुवांक लायलीं, आवंयलीं आनी तांकां पाळ्ळय
निदायलीं. त्या उपरान्ते येवनु कवड काळ्ळें (काडलें). काय
भित्तरि आयलो, चारीय कडेन चोयलो पाळ्ळयान्तु सात पिल
निदल्यांत दिकलीं (देकलीं). ताणें सांगलें- "गुरबजक्का, मा
नींद आयली मुगे, हांवें खंय पडचें ?" कायळो शींयान कडकडेता
हें आयकून गुरबजेन सांगलें—"कायळ्या, तूं रान्दणी परला
पड." ताव्वळि कायळान सांगलें— "रान्दणि पडतलीमू.
"जाल्यार कूडीं पड." "कूडि पडतलीमू." "जाल्यार पाळ्ळ
पोन्दाक पड." "पाळ्ळें पडतलेंमू" हांव पाळ्ळयान्तु एक क
पडन गुरबजाक्का"—कायळ्यान सांगलें. गुरबजि कांय उल्लैलीन
कायळो पाळ्ळयान्तु चडून (चोणु) पडलो). गुरबजि भाव
तिगेल्या मान्दूरेर निदली (निद्देली).

रात मद्रात जाली. सगटंय नीदलीं (निद्देलीं). त
वेळारि पाळ्ळयान्तु एक शब्दु "कुटुस". शब्दु आयकून गुरबा
जागी जाली. तिका दीसलें— कायळो इतेंकी खाता म्ह

निमगीलें— "कायळा, कायळा कितें (इतें) खाता ?" कायळान दीली (दिल्ली) "म्हान्तारायेन दिल्लेले दोनि चोणे"). "माकाय दी". "सरले मू."

एक घडि गेली । कायळान दूसरया एक पिल्लाक काडलें "कुटुस" केलें । शब्दु आयकून गुरबजि जागी जाली । निमगीलें "कायळा, कायळा कितें (इतें) खाता ?" ंतारायेन दीलेले दोनि आटाणे" — "माकाय दी"। लेमू"— कायळान सांगलें ।

अशशी कायळान गुरबजेल्या सातय पिल्लांक खालीं (खेल्लीं) तो निद्देलो (नीदलो).

फालें जालें गुरबजि उटायली । घराचो कोयरु–सित्तडो केलो चेरडुवांक न्हाणोवंचाक उदक तापैलें । उपरान्ते पाळ्ळ्यान्तु चोय, चेरडूवां नांत (नांय) । कायळो खूब नीद काडता । जेक कार्यरि कळीं (मनां जालीं) । व्हड दुख पावली । यार कितें (इतें) करुंक ?

ती वासर्यान्तु गेली । लोकण्डा कायलातो इंगळयार दवरनु नो । ताम्बडो जावंचाक काडलो, हाडलो आनी निद्देल्या ळयाच्या पोटार दवरलो । 'चुर्र'— कायळ्याचें पोट पिंजून ां भायर आयलीं । कायळो पापी मरनु गेलो । ताका काडून र विन्दलो आनी गुरबजि पिल्लांकूय घेवनु सुखान राबली.

आमी केदनांय वेगळाक बाल्लाव आठौंचाक नज[1] ।

पाठ 30

कायळो आनी कीडि

एक दीस एक कायळो फालें जावंचाक एक बायंचे कडेन बैसलो। बायंचे लागि भेंडीणि ओयिल्ली आसिली। भेण्डीणीच्या एक पन्नार ताणें एक कीडि देकली। तिका देकचाक ताज्या तोण्डान्तु उदक आयलें। ताणें म्हळ्ळें—"कीडी, कीडी, हांव तुका आतां खातां।" हें आयकून कीडीक भो भय जालें। जाल्यार ती भावडी कितें करतली? तीणें सांगलें-"कायळा, कायळा, तुगेली चोंचि बुरश्शी मू। ती चांग करनु धूय आनी तूं माका खा।"

कायळाक लज्ज जाली। ताणें व्हयीचि म्हणु आठेयलें। तो धारार बायंचेर आयलो, बायंन्तु चोयलो आनी म्हळ्ळें— "बायें, बायें दी उदक, धूवूं तोण्ड, खावूं कीडि, कुटुस।"

कायळालें उत्तर आयकून बायेन सांगले— "हांवें तुका उदक कश्शी दीवूंक? तूं उंचार बैसला, उदक पोन्दाक आसा। तूं कुम्बरालागि वच, कोळसूलो हाडि आनी उदक काडि।"

कायळो ऊबून कुम्बरालागि गेलो आनी म्हळ्ळें— "कुम्ब-कुम्बरा, दी कोळसूलो, घालूं बायन्तु, काडूं उदक, धूवूं तोण्ड, खावूं कीडी, कुटुस।"

कुम्बरान सांगलें— "आरे पापिया, हांगा कोळसूलो तय्यार ना मूरे। कोळसूलो करुंक माती जाय। तूं गाद्यार (शेतांत) वच आनी माती हाडि। तुका कोळसूलो करनु (करून) दितां।"

कायळो गाद्यार गेलो आनी ताणें गाद्यालागि म्हळ्ळें— "गाद्या, गाद्या, दी माती, दीवूं कुम्बराक, करूं कळसूलो, घालूं बायन्तु, काडूं उदक, धूवूं तोण्ड, खाऊं कीडि, कुटुस।"

गाद्यान सांगलें— "माती खणुंक खोरें जाय मू कायळया. तूं कोरलंचालागि वच, खोरें हाडि आनी माती खोणु (खण) व्हर."

कायळो ऊबून कोरलंचालागि गेलो आनी म्हळ्ळें— "कोरल-कोरलंचा, दी खोरें, खोणीन माती, दीवूं कुम्बराक, करूं कोळसूलो, घालूं बायन्तु, काडूं उदक, धूवूं तोण्ड, खावूं कीडि, कुटुस."

कोरलंचान सांगलें— "खोरें करुंक लोकण्ड तापौंका. लोकण्ड तापौंचाक उज्जो जाय. म्हान्तारेलागि वच आनी उज्जो हाडि. हांव तुका खोरें करून दितां."

कायळो ऊबलो आनी म्हान्तारेल्या घरार वचून बैसलो. म्हान्तारी भायर आयदनां घासताली. ताणें म्हळ्ळें— "म्हान्तारे म्हान्तारे एदो उज्जो दी." "पुता, रान्दणीन्तु इंगाळो आसा; तूं वच आनी काडि."

कायळो रान्दणी परलान्तु गेलो आनी इंगळयाक चोंचि मारली. ताजी चोंचि लासली. तो रडत रडत थांगा थाकून ऊबलो. बायंचेरि येवनु ताणें कीडोलागि सांगलें— "माजे भयणी, हांव तुका कष्ट दिवचांक गेलो. माकाचि कष्ट जाले. दुष्टतकाय दाकौंचाक गेल्लेल्या फल माका मेळ्ळें." कीडीक ताजेर पावत्व (माया) दीसलें. तीणें समझायलो—"वेगळयाक दुख दिवंचें चांग न्हंय. आमी मोगान राबुया."

परिशिष्ट I

1 गिनती

1 एक
2 दोनि
3 तीनि
4 चारि
5 पांच
6 स
7 सात
8 आट
9 णव्व
10 धा
11 इखरा
12 बारा
13 तेरा
14 चौदा
15 पन्नेरा
16 सोळा
17 सत्तेरा
18 आषा
19 एकूणीस
20 वीस
21 एकेवीस
22 बावीस
23 तेवीस
24 चोवीस
25 पांचेवीस
26 सोवीस
27 सात्तावीस
28 आट्टावीस
29 एकूणतीस
30 तीस
31 एकतीस
32 बतीस
33 तेतीस
34 चौतीस
35 पान्तीस
36 सत्तीस
37 सात्तीस
38 आटतीस
39 एकूणचाळीस
40 चाळीस
41 एकेचाळीस
42 बावेचाळीस
43 तेवेचाळीस
44 चोवेचाळीस
45 पांचचाळीस
46 सवेचाळीस
47 सात्तेचाळीस
48 अष्टचाळीस
49 एकूणपन्नास
50 पन्नास
51 एकावन
52 बावन
53 तेपन
54 चौपन
55 पान्चावन
56 सप्पन
57 सातावन
58 आट्टावन
59 एकूणसाटि
60 साटि
61 एकसष्टि
62 बासष्टि
63 तेसष्टि
64 चौसष्टि
65 पांसष्टि
66 ससष्टि
67 सातसष्टि
68 आटसष्टि
69 एकुणसत्तरि
70 सत्तरि
71 एकासतरि
72 बासतरि
73 त्यासतरि
74 चौरासतरि
75 पांचासतरि

सतरि
ासतरि
ासतरि
णाशि
श
र्शि
श
शि
ाशि
ाशि
शि
ाशि
ाशि
णाणवि
ा
णवि
वि
ावि
ाणवि
ाणवि
णवि
ाणवि
ाणवि

99 णवाणवि
100 शें
101 एकशें एक
102 एकशें दोनि
103 एकशें तीनी
104 एकशें चारि
105 एकशें पांच
150 देडुंशें
200 दोन्नीशीं, (दोनशीं)
300 तिन्नीशीं
400 चारशीं
500 पैंशीं
600 सशशीं
700 सातशीं
800 आटशीं
900 णवशीं
1000 सासु, सास
2000 दोनि सास
10000 धा सास
100000 लक्षु
1000000 धा लक्ष
10000000 कोटि

2 तिथियों के नाम

प्रथमा	पंचमि	पंचमी
द्वितीया	सष्टि	षष्टी
तृतीया	सप्तमि	सप्तमी
चतुर्थी	अष्टमि	अष्टमी

नमि	नवमी	त्रयोदशि	त्रयोदशी
दस्समि	दशमी	चतुर्दशि	चतुर्दशी
एकादशि	एकादशी	पुन्नव/उमास	पौर्णमी/अमावास्य
दुवादशि	द्वादशी		

3 महीनों के नाम

1	चैत्र	5	श्रावण	9	आग्रहायण
2	वैशाख	6	भाद्रपद	10	पौष
3	ज्येष्ठ	7	आश्विन	11	माघ
4	आषाढ	8	कार्तिक	12	फालगुण

4 नक्षत्रों के नाम

1	अश्वीनि	14	चितीरें (चित्रें)
2	भरणी	15	स्वाति
3	किर्तीके	16	विशाखें
4	रोहीणि	17	अनुरादें
5	मृगशीरें	18	ज्येष्टें
6	आद्रें	19	मूळ
7	पुनर्पुश्शें	20	पूर्वाषाढें
8	पुश्शें	21	उत्राषाढें
9	आश्लेषें	22	श्रावण
10	मोग्गें	23	धनिष्टें
11	उब्बें	24	शतपिश्शें
12	उत्तरें	25	पूर्वाबादपतें
13	हस्त	26	उत्राबादपतें
		27	रेवति

5 पर्वों के (परबो) नाम

1 संसर पाडवो	5 गोकलाष्टमि
2 लागगज परब	6 विन्नाचव्वति
3 नागर पंचमि	7 चतुर्दशि
4 सुत्तां पुन्नव	8 दीवाळि

6 क्रियापदों की रूपावली

क्रिया : उल्लौंक बोलना

वर्तमान काल

य वर्तमान काल

	एकवचन	बहुवचन
उ०	उल्लैतां	उल्लैतात
म०	उल्लैता	उल्लैतात
अ०	उल्लैता	उल्लैतात

र्थ

	एकवचन	बहुवचन
उ०	उल्लैनां	उल्लैनात
म०	उल्लैना	उल्लैनात
अ०	उल्लैना	उल्लैनात

अपूर्ण वर्तमान काल कोंकणी में नहीं है। वर्तमान काल से का अर्थ निकाला जाता है।

संदिग्ध वर्तमान काल

		एकवचन	बहुवचन
उ०	०पु	उल्लैतां जातलों	उल्लैतात जातले
	स्त्री०	उल्लैतां जातलीं	उल्लैतात जातल्यो
म०	पु०	उल्लैता जातलो	उल्लैतात जातले
	स्त्री०	उल्लैता जातली	उल्लैतात जातल्यो
अ०	पु०	उल्लैता जातलो	उल्लैतात जातले
	स्त्री०	उल्लैता जातली	उल्लैतात जातल्यो
	न०	उल्लैता जातलें	उल्लैतात जातलीं

निषेधार्थ

		एकवचन	बहुवचन
उ०	पु०	उल्लैनां जातलों	उल्लैनात जातले
	स्त्री	उल्लैनां जातलीं	उल्लैनात जातल्यो
म०	पु०	उल्लैना जातलो	उल्लैनात जातले
	स्त्री०	उल्लैना जातली	उल्लैनात जातल्यो
अ०	पु०	उल्लैना जातलो	उल्लैना जातले
	स्त्री०	उल्लैना जातली	उल्लैना जातल्यो
	न०	उल्लैना जातलें	उल्लैना जातलीं

भविष्यत काल

त भविष्यत काल

	एकवचन	बहुवचन
पु०	उल्लैतलों (नों)	उल्लैतले
स्त्री०	उल्लैतलीं (नीं)	उल्लैतल्यो
पु०	उल्लैतलो	उल्लैतले
स्त्री०	उल्लैतली	उल्लैतल्यो
पु०	उल्लैतलो	उल्लैतले
स्त्री०	उल्लैतली	उल्लैतल्यो
न०	उल्लैतलें (नें)	उल्लैतलीं (नीं)

श्चित भविष्यत काल

एकवचन	बहुवचन
उल्लैन	उल्लौवूं
उल्लैशी	उल्लैशात
उल्लैत	उल्लैतीत

र्थ (निश्चित और अनिश्चित भविष्यत काल के)

} उल्लौंचीना, उल्लौना

निषेधार्थ रूप की क्रिया के कर्ता के साथ एकवचन में 'न' और बहुवचन में 'नी' प्रत्यय जोड दिया जाता है।

संभाव्य भविष्यत काल

	एकवचन	बहुवचन
उ० म० अ०	उल्लौयेत	उल्लौयेत

निषेधार्थ

भविष्यत काल का निषेधार्थ रूप ही इसका भी निषेथार्थ रूप है।

सूचना: इस काल की क्रिया के कर्ता के साथ एकवचन में 'न' और बहुवचन में 'नी' का प्रयोग होता है।

संभाव्य भविष्यत काल (अनुमति बोधक, Concessive)

	एकवचन	बहुवचन
उ०	उल्लौवूं	उल्लौवूं, उल्लौवयां
म०	उल्लै	उल्लैयात
अ०	उल्लोवो	उल्लोवोत

निषेधार्थ

	एकवचन	बहुवचन
उ० म० अ०	उल्लौंनाका	उल्लौंनाकात

भूतकाल

सामान्य भूतकाल

		एकवचन	बहुवचन
उ०	पु०	उल्लैलों	उल्लैले
	स्त्री०	उल्लैलीं	उल्लैल्यो
म०	पु०	उल्लैलो	उल्लैले
	स्त्री०	उल्लैली	उल्लैल्यो

		एकवचन	बहुवचन
अ०	पु०	उल्लैलो	उल्लैले
	स्त्री०	उल्लैली	उल्लैल्यो
	न०	उल्लैलें	उल्लैलीं

र्थ

		एकवचन	बहुवचन
उ०	पु०	उल्लैलोंना	उल्लैलेनात
	स्त्री०	उल्लैलींना	उल्लैल्योनात
म०	पु०	उल्लैलोना	उल्लैलेनात
	स्त्री०	उल्लैलीना	उल्लैल्योनात
अ०	पु०	उल्लैलोना	उल्लैलेनात
	स्त्री०	उल्लैलीना	उल्लैल्योनात
	नं०	उल्लैलेंना	उल्लैलींनात

भूतकाल

		एकवचन	बहुवचन
उ०	पु०	उल्लैतालों (नों)	उल्लैताले
	स्त्री०	उल्लैतालीं (नीं)	उल्लैताल्यो
म०	पु०	उल्लैतालो	उल्लैताले
	स्त्री०	उल्लैताली	उल्लैताल्यो
अ०	पु०	उल्लैतालो	उल्लैताले
	स्त्री०	उल्लैताली	उल्लैताल्यो
	नं०	उल्लैतालें (नें)	उल्लैतालीं (नीं)

र्

		एकवचन	बहुवचन
उ०	पु०	उल्लैनासलों (नों)	उल्लैनासले
	स्त्री०	उल्लैनासलीं (नीं)	उल्लैनासल्यो

		एकवचन	बहुवचन
म०	पु०	उल्लैनासलो	उल्लैनासले
	स्त्री०	उल्लैनासली	उल्लैनासल्यो
अ०	पु०	उल्लैनासलो	उल्लैनासले
	स्त्री०	उल्लैनासली	उल्लैनासल्यो
	न०	उल्लैनासलें (नें)	उल्लैनासलीं (नीं)

आसन्न भूतकाल

		एकवचन	बहुबचन
उ०	पु०	उल्लैलां	उल्लैल्यात
	स्त्री०	उल्लैल्यां	उल्लैल्यांत
म०	पु०	उल्लैला	उल्लैल्यात
	स्त्री०	उल्लैल्या	उल्लैल्यात
अ०	पु०	उल्लैला	उल्लैल्यात
	स्त्री०	उल्लैल्या	उल्लैल्यात
	न०	उल्लैलां	उल्लैल्यांत

निषेधार्थ : सामान्य भूतकाल का निषेधार्थ रूप ही इसका भी निषेधार्थ रूप है ।

पूर्ण भूतकाल

		एकवचन	बहुवचन
उ०	पु०	उल्लैललों (लोलों)	उल्लैलले (लेले)
	स्त्री०	उल्लैललीं (लेलीं)	उल्लैलल्यो (लेल्यो)
म०	पु०	उल्लैललो (लोलो)	उल्लैलले (लेले)
	स्त्री०	उल्लैलली (लेली)	उल्लैलल्यो (लेल्यो)
अ०	पु०	उल्लैललो (लोलो)	उल्लैलले (लेले)
	स्त्री०	उल्लैलली (लेली)	उल्लैलल्यो (लेल्यो)
	न०	उलैललें (लेलें)	उल्लैललीं (लेलीं)

र्थ : सामान्य भूतकाल का निषेधार्थ रूप ही इसका भी निषेधार्थ रूप है।

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
पु०	उल्लैलों जातलों	उल्लैले जातले
स्त्री०	उल्लैलीं जातलीं	उल्लैल्यो जातल्यो
पु०	उल्लैलो जातलो	उल्लैले जातले
स्त्री०	उल्लैली जातली	उल्लैल्यो जातल्यो
पु०	उल्लैलो जातलो	उल्लैले जातले
स्त्री०	उल्लैली जातली	उल्लैल्यो जातल्यो
न०	उल्लैलें जातलें	उल्लैलीं जातलीं

र्थ

	एकवचन	बहुवचन
०पु	उल्लैलोंना जातलों	उल्लैलेना जातले
स्त्री०	उल्लैलींना जातलीं	उल्लैल्योना जातल्यो
पु०	उल्लैलोना जातलो	उल्लैलेना जातले
स्त्री०	उल्लैलीना जातली	उल्लैल्योना जातल्यो
पु०	उल्लैलोना जातलो	उल्लैलेना जातले
स्त्री०	उल्लैलीना जातली	उल्लैल्योना जातल्यो
न०	उल्लैलेंना जातलें	उल्लैलींना जातलीं

तात्कालिक भूतकाल का प्रयोग कोंकणी में नहीं है। अपूर्ण ा का ही प्रयोग होता है।

जब सकर्मक क्रिया का प्रयोग सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूतकाल में होता है, तब कर्ता के साथ एकवचन

में 'न' और बहुवचन में 'नी' का प्रयोग होता है। तब साधारणतया क्रिया कर्म के लिंग वचन के अनुसार रहती है।

हेतुहेतुमद् भूतकाल

उल्लैतलो आसलो, उल्लैल्यार, उल्लेलो जाल्यार

आज्ञार्थ

उल्लै — उल्लैयात

निषेधार्थ

उल्लौनाका, उल्लैशी उल्लौनाकात, उल्लैश्यात

संभावनार्थ

उल्लैल्यार

आवश्यकताबोधक क्रिया : उल्लौंका

कृदन्त

वर्तमानकालिक कृदन्त : उल्लैतल्लो—ल्ली-ल्लें; ल्ले—ल्ल्यो—ल्लीं

भूतकालिक कृदन्त : उल्लैलो—ली—लें; ले—ल्यो—लीं

पूर्वकालिक कृदन्त : उल्लौन

भाववाचक कृदन्त : उल्लौप (उल्लवप)

कर्तृवाचक कृदन्त : उल्लौपी

धातुविशेषण : उल्लौंचो—ची—चें; चे—च्यो—चीं

साधारण रूप : उल्लौंक, उल्लौंचाक, उल्लौपाक

परिशिष्ट II

शब्दावली

कोंकणी — हिन्दी

— अङ्क
— घबराहट
— अपचनीयता
— साढे आठ
— अढाई
— भाग्य
— अनन्नास
— भात
— दुर्लभ
न — लालन
— अमुक
— पीडा
— घृणा
— ऐसे
— ऐसा
— गंदगी
— हाँ
— शरीर
— दूकान
— चढावा
ा — दुपट्टा
(आंवगालें) — कपडा
— अंगोछा
— धर्मार्थ बांटना, देवता पर चढाना

आंजीर — अजीर
आका — बडी बहन
आगटें — चूल्हा
आगा — (संबोधन शब्द)
आगे — ,,
आजि — आज
अजून (आतांय) — अब तक, अभी
आज्जी — नानी
आज्जो — दादा, नाना
आट — आठ
आटवो — आठवाँ
आटुंक — जमना, घना होना
आटोंक — जमाना, गाढा करना
आटोंणी — गढापन
आठवप — सोचना
आठोंक — सोचना
आड — बदले में
आडनांव — कुल नाम
आडसर — नर्म नारियल
आडळि — खुरचने का यंत्र
आडळुंक — टकराना
आडावण — रुकावट
आडावुंक — रोकना

आडवाट	— चोर-रास्ता
आतां	— अब
आतांचि	— अभी
आतांयि	— अभी तक
आदीं	— पहले
आनी	— और
आनु	— बडा भाई
आपणागेलो	— अपना
आपण	— आप
आपडुंक	— छूना
आप्याप	— आप से आप
आपा	— बाप
आपापा	— चाचा
आपौंक	— बुलाना
आम्बसट	— अमावट
आम्बडुंक	— दूर भगाना
आम्बाडि	— आमड़ा
आम्बाडो	— आमडा (पेड)
आम्बसाणि	— खट्टापन
आम्बसुंक आम्बसेवुंक	— खट्टा होना
आम्बूलि	— कच्चा छोटा आम
आम्बूस	— खट्टा
आम्बो	— आम
आमचेर	— हम पर
आमगेलो	— हमारा
आमचो	— हमारा
आम्मा	— मां
आमी	— हम
आयकुंक	— सुनना

आयकौंक	— सुनाना
आयचो	— आजका
आयणो	— पंखा
आयतारु	— इतवार
आयदन	— बरतन
आयला	— आया है
आयलो	— आया
आयि	— दादी
आरे	— संबोधन शब्द
आरमालि	— अलमारी
आलतडि	— इसपार
आल्लें	— अदरख
आवय	— माँ
आसडुंक	— पछोरना, छानना
आसुंक	— होना
आळशो	— सुस्त
आळें	— क्यारी, पहेली
इंगाळो	— कोयला
इखरा	— ग्यारह
इत्तें, कित्तें	— क्या
इतलो	— इतना
इत्याक, कित्याक	— क्यों
उकडुंक	— उबालना
उंगोटो	— अंगूठा
उगटो	— खुला
उगडास (उडगास)	— याद
उगडुंक	— खोलना
उंचार	— ऊपर
उजवाडु	— रोशनी, प्रकाश

— आग
— उठना (खडा होना)
क — खडा करना
— कूद
ंक — कूदना
— कौर
डीद — उडीद
— लड्डू
— फेकंना
— कमी
— कम
— छिछला
— पानी
— जलमय
न्दीर — चूहा
— बदले
— बाद
— सुस्ती
क } — उबालना
उंबोर — देहली
— उठाना
— लंबरूप
ऊबुंक — उडना
— उडाना
— उखाडना
— सालन
— कपडा पत्थर पर मार कर धोना
— जीना, होना, रहना

उलदुंक — बुलाना
उल्लौंक — बोलना
उव्वारु — बाढ
उश्शें — तकिया
उष्टें — जूठन
उसळुंक — दर्द होना

ऊणाव — कमी
ऊणें — कम
ऊब — भाप
ऊम — पसीना
एकटांय — एक साथ
एकबगत — एक बार खाना
एकसानि — एक साथ
एददो — इतना
एददोळ — अब तक
एवाळें — सांप

ओंकुंक — कै करना
ओकद — दवा
ओजें — बोझ
ओण्टु, ओण्ट — होंट
ओडुंक — खींचना
ओत्तुंक — ढालना
ओप — हस्ताक्षर
ओमतुकं — औंधाना
ओल्लें — गीला, तर
ओवूट — साढे तीन
ओमसोर — जल्दीपन
ओळकुंक — परिचित होना

औन्दु — इस साल
कडु, (कोडु) — कडुवा
कडौंक — औंटाना
कदेल — कुरसी
करटें — छिलका
करम्बल — एक फल
करुंक — करना
कवड — दरवाज़ा
कवडी — चिक
कवळुंक — लुढकाना
करशी — कैसे
कळुंक — मालूम होना
कळौंक — मालूम करना
कडे — पास
कणंग — कंद
कणस — भुट्टा, बाली
काखें — कांख
कागत — कागज
काण्डुक — कूटना
काणसो — काना
कातरुंक — काटना
कातळि — गरी
कांतुंक — गरी निकालना
कातो — रेशा
कान, कानु — कान
कानसळ — कर्णपट
कापु, काप — लकडी का कटा टुकडा
कापड — कपड़ा
कापणि — हजामत

कापणि काडुंक — हजामत करना
कापूसु, कापूस — रूई
कांम्बळि — कम्बल
काम — काम
कामत — खेत जांच करनेवाला
काय — क्या
कांय — कुछ
कायलि — कढाई
कायरें — कार्य
कायलातो — कलछुल
कायळो — कौआ
काराफूल — लौंग
कारातें — एक कडुआ फल
काल, कालि — कल
काल्लौंक — मिलाना
कावळो, कायळो — कौआ
कास — कसनि
काळींग — कुम्हडा
काळो — काला
काळुकु, काळुक — अन्धकार
कितें (इतें) — क्या
कितलो — कितना
कित्याक — क्यों
कित्याक — क्योंकि म्हळयार
किरांगोळि — कनिष्ठिका
की — कि
कीटि — चिनगारी
कीडि — कीडा
कीरु — तोता

— बास का नव पौधा
— जेब
— मुरगा
— टुकडा
— लंगडाना
— भूसी
— किसान
— कुम्हार
— अंधा
— केकडा
— निशाना
— कुष्माण्ड
— टुकडी
— सांप
— वांसी होना
— कुल्हाडी
— छोटी कुल्हाडी
— मैके का घर
— कुळीत
— कमरा
— पावस का कण
— कमर
— नोकीली चीज़
केन्ना — कब
— कभी
— कितना
— कब तक
— वहरा
— बाल, केश
— नाई

केळि — केले का पेड
केळें — केला (फल)
कोंकण — कोंकण देश
कोंकणो — कोंकणवासी
कोंकणी — कोंकणी भाषा
कोंकि — घाव
कोंकु — अंकुश
कोळें — कांटा
कोक्को — अन्न
कोण — कौन
कोणेक — कोई एक
कोणेय — कोई
कोणकोण — कौन कौन
कोणागेलो, कोणालो — किसका
कोम्पर, कोम्पोरु — केहुनी
कोम्बु — पापाय का पत्ता, तुरही
कोम्बो — मुरगा
कोयती — दराती
कोयलूव — खपरैल
कोल्लो — सियार
कळसो, कोळसो — घडा
कळसूलो, कोळसूलो — छोटा घड़ा
क्रिस्तांव — ईसाई
क्रीस्तु — ईसा
खडावो — खडावूं
खण्णी — खुदाई
खणुंक — खोदना
खत — दाग
खतखतंक — खौलना

खतखताउंक — खौलाना
खबर — खबर
खरखरी — खुरखुरा
खरज (खोरोज) — खुजाली
खरजुंक — खुजलना
खरडो — गंजा
खरपुंक — खुजालना
खरवोतु — आरा
खरसावुंक — दम घुटाना
खरशेवुंक — दम घुटना
खरें — सच
खर्चु — खर्च
खर्चुंक — खर्च करना
खंवटाणि — उबसा व बूदार
खवळ — छिलका
खळि — नाला
खळ — आगंन
खांकि — खांसी
खांखुक — खांसना
खांचि — छेद
खाटलें — खाट
खाड — दाडी
खाडू — रस्सी की फांस
खाण — खाना
खाण्डे — तलबार
खाणि — नाला
खातीरि — खातिर
खातडि — किचकीच
खान्दु — कंधा
खान्दो — डाल, शाखा
खाम्बु — दीपदान
खाम्बो — स्तंभ
खारु — तंकार
खारो — इसाई
खारसाणि — नमकीलापन
खाल — नीचे
खावुंक — खाना
खास्त — किसान
खिबो — माफ़
खिळखीळो — खिलौना
खीळो — कील
खीण — टखना
खुंटी — कील
खुपसुंक — उलझना
खुशालि — तमाशा, विनोद
खूंय, खंय — कहाँ, कहा जाता है
खूरु — पहिया(चीजों का)
खूळ — एडी
खेळु — खेल
खेळुंक — खेलना
खंथंय, खंय — कहाँ, कहते हैं कि
खंयचों — कहाँ का
खोटो — टोकरा
खोटूळ — टोकरी
खोडो — हथकडी, सजा
खोतु — टेकेदार
खोन्चुंक — भोंकना
खोम्पी — झोंपडी
खोम्मट — झोंपडिया

— नारियल की सूखी गरी
, नारलेल — नारियल का तेल
— कुदाली
— प्याला
— कटहल का पत्ता
— लगाना
— मंथनी
— खेत
— की तरह
— तकिये का आवरण
— गलफांसी
— बान्धना
— कायर
— गधा
— गूँथना
— खेत
— केलें का तना
ळु — केंचुवा
— गलगण्ड रोग
— घिरनी, चरखी
— गाली
— गाली देना
— छानना
— कच्चा कटहल
— लिखना
— ग्राहक
— निगलना
— गरमी का मौसम
गिरबुज — गौरैया

गुडलावुंक — आवेष्टित करना
गुडगूडु — गरजन
गुडगुडुंक — गरजना
गुडदी — काग, डाट
गुड्डो — नाटा
गूळि — गोली
गोंवटो — गला
गोट्टारली — हजार पा
गोटो — पशुशाला
गोटो — अंड़कोष
गोड — गुड
गोडु — मीठा
गोडसाणि — मिठास
गोंदोळु — चहलपहल
गोबोरु — राख
गोवाय — समन्दर

घट्टि — घना
घड़सुंक — मिलाना
घडि — तह, ढाई घण्टे
घष्टुंक — मलना
1
घडायु — गुच्छा
घाणि — बदबू
घायु — घाव
घालुकं — डालना
घासु — ग्रास
घासुंक — मलना
घुवळि — चक्कर
घुवंडावुंक — घुमाना
घुवुंक — चक्कर लगना, घूमना

घुघूम — उल्लू
घेवुंक — स्वीकार करना, लेना
घोणि — 'परिन्दा
घोसु — गुच्छा
घळौंक, आसडुंक — चालना

चड्डु — ज़्यादा
चडुंक — चढना
चलुंक — चलना
चवड — साढे चार
चवळी — एक धान
चाडि — चुगली
चांगु — अच्छा
चान्नी — गिलहरी
चाबुंक — चबाना, काटना
चारि — चार, कटहल की खाल
चाळुंक — चलाना
चाळौंक — मुँह बनाना
चाळिं — छलनी
चाळींदाय — छलनीदार चमचा
चिक्कोलु — कीचड
चिंच — इमली
चिंचाम्ब — इमली फल की गरी
चिंचारो — इमली की गुठली
चिचन्दोरि — छछुन्दर
चिन्दी — पट्टी
चिरडुंक — दबाना
चीरि — थैली
चीरुंक — चीरना
चीवुंक — चूसना
चीप — चमचा
चुकुंक — गलती करना
चूकि — गलती
चेडी — वेश्या
चेडूं, चेल्लीं — लडकी
चेडो, चेल्लो — लड़का
चेल्लाण — जंगिया
चो — का
चोग्गो — चोगा, कुरता
चोंचि — चोंच
चोंचोरो — हकलानेवाला
चोवुंक — देखना
चौग — चार (आदमी)
चौगूलो — दोस्त
च्यान — से, से होकर

जड — भारी
जडुंक — कमाना
जळुंक — जलना
जळौंक — जलाना
जळूव, जोळूव — जोंक
जरशी — जैसा
जाणुंक, जाण
जावुंक — जानना
जाणौंक — बताना
जाप — जवाब
जायि, जाय,
जाय जावुंक — चाहिये
जायत — हो सकता है
जायना — हो नहीं सकता
जायतो, जैतो — बहुत

ल्यारि, जाल्यार — तो
वंय — दामाद
वुंक — होना
ळ — द्वेष
कुंक — जीतना
वो — हरा
वित — जीवन
दना, जेन्ना — जब
वण — भोजन
वुंक — भोजन करना
रलो — मकोडा
ु — पक्षा
ाडुंक — झगडना
ाडें — झगडा
ाडावुंक — झगडा करना
ड — झाड
डि — झाडी
डुंक — झाडू लगाना
ुक — झूझना
— झूझ
ो — गुच्छा
रु (डोंगोरु) — पहाडी
कावळो — कौआ
— डकार
ुंक — पीना
व — नौ
वाड — साडे नौ
— नब्बे
— है, हैं, हूँ, हो

तगड — रकाबी
तडि — किनारा
तण — घास
तरी — तिस पर भी
तरणो — तरुण, कच्चा
तवशें — खीरा
तसलो — उस प्रकार का
तश्शी — तैसे
तळोंक — तलना
तळय — तालाब
तळें — तालाब
तळत — ताड पत्र
तळि — थाली
ताक — छाछ
तांक — योग्यता
तांकुंक — हो सकना
तांकोंक — कर सकना
ताट — थाला
ताणें — उसने
ताणुंक — खींचना
तान्दुळ — चावल
तान्दुळें — चावल धोया पानी
तान — प्यास
तान लागुंक — प्यास लगना
तानीं — उन्होंने
ताम्बडो — लाल
ताम्बें — ताम्बा
तारूं — जहाज़
तावळि — तब
तासुंक — छीलना

ताळ्वो — हथेली
ताळूव — सिर पर का मध्य भाग
ताळो — तालू
तिण्टो — बाजार
ती — वह
तीं — वे
तींत — स्याही
तीणें — उसने
तीनि — तीन
तीळू — तिल
तीळेल — तिल का तेल
तुकुंक — तोलना
तुण्टुंक — टूटना
तुण्टोंक — तोडना
तुमी — आप
तुवें — तुम ने
तू — तू
तूप — घी
तें — वह
तेग — तीन (व्यक्ति)
तेंकुंक — सहारा लेना
ते — वे
तेदना, तेन्ना — तब
तेरा — तेरह
तेरावो — तेरहवें दिन का श्राद्ध
तेल — तेल
तो — वह
तोडोवु (तडवु[1]) — देरी
तोण्ड — मुँह
तोपुंक — खोंसना
त्या भायर — उसके अलाव
त्यो — वे
थंय, थूंय — वहाँ
थरावुंक — निश्चय करना
थाकून — से
थांगा — वहाँ
थांगाचो — वहाँ का
थापट — थापट
थापुंक — लगाना
थू, थूक — थूक
थूकरुंक — थूकना
थेम्बो — बूंद
थोण्टो — लगंडा
थोरु — मोटा
दवरुंक — रखना
दंब्यारि — मुफ़्त
दामुंक — दबना
दामावुंक — दबाना
दळुंक — पीसना
दाकोंक — दिखाना
दान्तु — दान्त
दान्तें — चक्की
दान्तोणि — कंघी
दादलो — पुरुष
दायि — चमचा
दावो — बायाँ
दावल — चमचा
दिग्गी — लंबाई

दिंभु	— घुटना	घंघ	— धंधा
दिवटी	— दीपशिखा	घन्नी	— मालिक
दिसानदीसु	— प्रति दिन	घरुंक	— पकड़ना
दिसुंक	— दिसना	घवो, धोवो	— सफ़ेद
दीगु	— लंबा	धा	— दस
दीसु	— दिन	धाड़ुंक	— भेजना
दीवोड्डु, दीवड्डु	— सांप	धापणें	— ढकना
दीवुंक	— देना	धारारि	— जल्दी
दीवो	— दीपक, दिया	धावुंक	— दौड़ना
दुक्की	— दर्द	घुंवोरु	— धुवां
दुखुंक	— दुखना	घुवरुंक	— धुँआना
दुखौंक	— दुखाना	घुवुंक	— धोना
दुड्डु	— धन	घूरा	— दूर
दुद्दी	— कद्दू	घूव	— पुत्री
दूद	— दूध	नंज[1]	— नहीं हो सकता
देकुंक	— देखना	नणंद	— ननद
देकी	— उदाहरण	नवरो	— दुल्हा, वर
देकूनु, देकून	— इसलिये	न्हंय	— नदी, नहीं
देग	— किनारा, कोर	ना	— ना
देण्टु	— डंठल	नाका	— मत, नहीं चाहिये
देड्डु	— डेढ़	नांक	— नाक
देरु	— देवर	नांकूट	— नाखून
देवुंक	— उतरना	नाति	— पोती
दोग	— दो व्यक्ति	नातू	— पोता
दोनपार, दनपार	— दो पहर	नारलु	— नारियल
दोनि	— दो	नारलेल	— नारियल का तेल
दोर	— रस्सी	नावं	— नाम
दोवु	— कुहरा	न्हाणि	— स्नानघर
दोळो	— आंख	न्हाणौंक	— नहलाना
घंड्डु, घोड्डु	— घना	न्हावुंक	— नहाना

निदेंवुंक — सोना
निदावुंक — सुलाना
निपुंक — छिपाना
निंबूवो — नींबू
निब्ब — बहाना
निब्बोरु, निब्बरु — कडा
निमगुंक — पूछना
निसरुंक — छूटना
निसरावुंक — छोडना
नींद — नींद
नींब — नीम
नीवुंक — ठंडा होना
[1] नेण — न आनता
नेणतां — बिना जाने
नेणुंक, नेण जावुंक — न जानना
न्हेसुंक — पहनना
पडुंक, पोडुंक — गिरना
[1] पयरि — परसों
[1] परारुं, पोरारुं — परसाल
परत, परतूनु — वापस
परतुंक — वापस करना
परणो — पुराना
परब — पर्व
परमळु, परमोळु — खुशबू
परस — की अपेक्षा
[1] परां — परसों
परान, पर्यन्त — तक
पसावत — के बारे में, के कारण, से

[1] पळोंक, पोळोंक — देखना
पावटि — बार
पाकूळि — दल
पांगरुंक — ओढना
पातळावुंक — पतला करना, फैलाना
पाती — दल
पान — पत्ता
पायु — पहिया
पारवो — कबूतर
पाल्लो — पत्ता
पावल — कदम
पावुंक — पहुँचना
पाष्ट — खराब
पाळ — तरंग
पासूनु — के बारे में
पिकुंक — पकना
पिंजुंक — फाडना
पिट्टी — आटा
पिट्टो — चूर्ण
पिड्डो — नारियल या ताड का पत्ता
पिळगें — पीढी
पिरशों — पागलपन
पीउंक — पीना
पील — बच्चा
पीळुंक — निचोडना
पीट — गीला आटा
पुंजावुंक — चुनना

पुसुंक	— पोंछना	फटवुंक	— धोखा खाना
पुण, पण	— लेकिन	फडि	— टुकडा
पूतु	— पुत्र	फणो	— गुच्छा
पूरुंक	— गाढ देना	फपळ	— सुपारी
पूरो	— बस, काफ़ी	फरंगी	— फिरंगी
पेट्टौंक	— भेजना	फल	— नतीजा
पेर	— अमरूद	फळ	— फल
पेरि	— अमरूद का पेड	फळि, फळें	— तख्ता
पेलु	— गेंद	फाटि	— पीठ, पीछे
पेल्लो	— दूसरा	फातरु	— पत्थर
पैको	— कुलनाम	फांतां	— बार
पैलो	— प्रथम, पहला	फांत्यार	— बडे सबेरे
पोक्कळु, पोक्कोळु	— खोखला	फान्ति	— कतार
पोंग	— कूबड	फाफराचो	— लात
पोट	— पेट	फायि, फाय	— कल
पोडगो, पोगडो	— कढाई	फारुंक	— चुराना
पोणतु, पणतु	— प्रपौत्र	फालें	— सबेरा
पोणोसु, पणस	— कटहल	फाल्या	— कल
पोन्द	— निचला भाग	फाळुंक	— फाड़ना
पोन्दाक	— नीचे	फुंकुंक	— फूँकना
पोवुंक	— तैरना	फुल्ली	— नथनी
पोसको	— दत्तपुत्र	फुल्लुंक	— फूलना
पोसुंक	— पालना	फूडे	— पहले
पोळि	— पकवान	फूडान्तु	— साथ
पोळो	— चिल्हा	फूल	— फूल
प्रथम, मुरथम	— पहले	फेणु	— फेण
फ़क्त	— सिरफ़	फोण्डु	— गढा
फटवण, फट्टि	— झूठ	बड्डी	— लकडी, छडी
फटौंक	— धोखा देना		

बन्तर — गूदड
बरें, बरो — अच्छा
बरि — पार्श्व
बरौंक — लिखना
बळ — बल
बळ्ळीक — चेचक
बांकु — बेंच
बाटुंक, बाटौंक — धर्म परिवर्तन करना
बान्दु — बांध
बान्दुंक — बांधना
बाब — जी, श्रीमान
बाबु — बालक
बामुणु — पति
बांयि, बांय — कुआँ, बाई
बायल — स्त्री, पत्नी
बारा — बारह
बाल — पूँछ
बालावु — बुरा
बाळान्ति — जननेवाली
बाळान्तीरो — प्रसव
बिकण्ड — कटहल का बीज
बी — शायद, बी
बीं — बीज
बुक्को — बिलाव
बुडुंक — डूबना
बुतांव — बट्टन
बुब्बु — रोग
बुरडुंक — नोचना
बैसुंक — बैठना
बोट — उँगली
बोड — सिर
बोब — चिल्लाहट
बोंब — नल
बोंबूलि — नाभी

भरुंक — भरना
भरसुंक — मिलाना
भावु — भाई
भांगार — सोना
भाणशीरें — चिथडा
भात — धान
भारकूण — सर्दी
भावडो — बेचारा
भाशेन — तरह
भास — भाषा
भीउंक — डरना
भुरगें — बच्चा
भूज — कन्धा
भूयिं — भूमि
भेतुंक — तोडना
भो — बहुत
भोंकुंक — भूँकना
भोंवंडी — सैर
भोंवतणीं — चारों ओर
भोवुंक — सैर करना

मडतेल — हथौडा
मडें, मोडें — शव
मणु — मन
मददें — मध्य में
म्हणिण — कहावत

म्हणुंक — कहना
म्हणु — कि
म्हळ्यार — अर्थात, याने
म्हशि — भैंस
म्हस्त — बहुत
मळब — आसमान
म्हा — बहुत
म्हारु — हरिजन
म्हारगु, म्हारोगु — महंगा
म्हारयान्तु — साथ
म्हाव — काफ़ी
माय-बाप — माँ-बाप
मांकड — बन्दर
माका — मुझको
माकशीं,
मागल्यान — पीछे
मागीरि, मागीर — बाद
मागुंक — माँगना
मागो — मांग
माजर — बिल्ली
माडो — नारियल का पेड
माडी — सुपारी का पेड
मातें — सिर
मान्दुरी — चटाई
मानुंक — मानना
म्हालगडो — गुरुजन
मीट — नमक
मिट्टस — खारा
मुक्कारि, मुकार — सामने
मुतुंक — पिशाब करना

मुद्दी — अंगूठी
मूयि, मूय — चींटी
मूसु — मक्खी
मेकळुंक — छोडना
मेजुंक — गिनना
मेण — मोम
मेणायिं — दही
मेळुंक — मिलना
मोगु — प्रेम
मोडुंक — तोडना
मोवु — मुलायम
मोवुंक — गिनना
म्होसु — बेवकूफ़
म्होवु — शहद
येवुंक — आना
रकोंक — डालना
रगडो — कूटने का पत्थर
रगत — रक्त
रडुंक — रोना
राकूड — लकडी
राखुंक — राखना
राति — रात
रान्दणि — चूल्हा
रान्दुंक — खाना पकाना
राबुंक — रहना
रितो — खाली
रून्दु — चौडा
रूकु — पेड
रे — अरे
रेंव — रेत

लकलकी — चमक
लकुंक — हिलना
लागि — से
लागुंक — लगना
लागून — नजदीक, लगकर
लानु — मुलायम, छोटा
लावुंक — लगाना
लावुंक — खिलाना
लासुंक — जलाना
लाळ — राल
लिपुंक — छिपना
लींबू — नींबू
लुगट — कपडा
लुवणि — फसल
लुवुंक — लूनना, फसल काटना
लेवुंक — चाटना
लैलांव — नीलाम
लोकण्ड — लोहा
लोणचें — अचार
लोणि — मक्खन
लोळुंक — लोटना
ल्हवु, ल्होवु — हल्का, धीरे
वेंकारो, वोंकि — कै
वंकुंक — कै करना
वचुंक — जाना
वयरि — ऊपर
वरचील — बाकी
वरी — तरह
वरीष्ट — उमदा
वरुंक — जीना
वर — बजा
वळकुंक — परिचित होना
वांकूडो — ठेढा
वाकोरु — उश्तरा
वागतो — खुला
बाचुंक — पढना
वाचौंक — पढाना
वांचुंक — बचना
वांचौंक — बचाना
वाजुंक — बजाना
वांझि — वन्ध्या स्त्री
वाट — रास्ता
वाटूली — थाली
वांटुंक — बांटना
वाटुंक — कूटना
वाडकूळो — गोल
वाडुंक — परोसना
वाति — बत्ती
वान — ऊखल
वायटु — बुरा
वारें — हवा
वासुरं — बछडा
व्हाण — चप्पल
व्हारडीक — शादी
व्हय, व्होय, होय — हाँ
विकट — बुरा

विकरुंक — विखरना
विचारुंक, निमगुंक — पूछना
विन्दुंक — फेकंना
विशीं — खातिर
विस्कळु, चिस्कोळ — विशाल
विसरुंक — भूलना
व्हीरु — छिपटी
वींणुंक — बुनना
वीकुंक — बेचना
वूणें, ऊणें — कम
वेगळो — अलग, दूसरा
वेंचुंक — चुनना
वेणि — सास
वेयु — ससुर
वेळु — समय
वेळ — समुन्दर का किनारा
वोत — धूप
वोरोवु — चावल
व्हूनु, हूनु — गरम
व्होक्कल, होक्कल — वधू
व्होडु, व्हड — बडा
व्होन्नी, होन्नी — भाभी
व्होर — बर-वधू
व्होराण, होराण — विवाह यात्रा, बारात
व्होरुंक, व्हरुंक — ले जाना
व्होरेतु, होरेतु — वर
शाणो — बुद्धिमान, होशियार
शिंपुंक — सींचना
शीं — ठंडी
शीं खावुंक — ठंडी लगना
शींकुंक — छींकना
शें — सौ
शेकुंक — सेंकना

शेण्डी — चोटी
शेण — गोबर, पावस का कण
शेणि — उपला
शेणतूर — प्रपौत्र की संतान
शेळु — ठंडा
सकल — नीचे
सकाळीं — सबेरे
सगटय — सब
सगळो — सारा
स[1] — छे
समझुंक — समझना
समझावुंक — समझाना
सरु, सोरु — माला
सरुंक — घिसना, बीतना
सरि — तार
सवंयि[1] — आदत
ससारु — सस्ता
सळ — विद्वेष
सांकवु, सांकोवु — पुल
साकूनु, थाकून — से
सांगुंक — कहना
सांज — शाम
साटि — साठ
सात — सात
सान्त — हाट, बाज़ार
सातूलि — छत्री
सातें — छाता
सानु, लान — छोटा
सारणि — झाड़ू
सारि — चिताभस्म
सारुंक — खर्च करना

सारें	— खाद
सिकुंक, शिकुंक	— सीखना
सिकौंक	— सिखाना
सिजुंक	— उबालना
सितोडो	— गोबर-पानी
सिन्दुंक	— काटना
सीवुंक	— सीना
सुकुंक	— सूखना
सुक्को	— सूखा
सुजुंक	— सूजना
सूंटि	— सूंठ
सूणें	— कुत्ता
सून	— बहू
सूरु	— शराब
सूव	— सुई
सेजार	— पडोस
सेजारि	— पडोसी
सोकनी	— चिपकली
सोडुंक	— छोडना
सोडोवुंक	— मुक्त करना, छुडाना
सोण	— नारियल का छिलका
सोदुंक	— ढूँढना
सोपूरु	— पतला
सोंपें	— आसान
सोयरी, सोयरो	— अतिथि
सोल	— छिलका
सोल्लुंक	— छीलना
सवो, सोवो	— गाली
हस्ती	— हाथी
हरवो	— कच्चा
हरदें	— हृदय
हळदि	— हळदी
हळदूवो	— पीला
हां	— हाँ
हांगा	— यहाँ
हागुंक	— टट्टी जाना
हाड	— हड्डी
हाडुंक	— लाना
हातु	— हाथ
हारवुंक	— हारना
हारवोवुंक	— हराना
हारि	— हार
हालुंक	— हिलना
हालौंक	— हिलाना
हांव	— मैं
हासुंक	— हंसना
हीं	— ये
ही	— यह
हुंगुंक	— सूँघना
हुम्माण	— पहेली
हुरहूरें	— सीतला
हो, हें	— यह
होय, व्हय	— हाँ
होळु	— आहिस्ते
ह्यो, हे	— ये

हिन्दी — कोंकणी

अंगार	— इंगाळो
अंगीठी	— आगटें
अंगूठा	— उंगोटो
अंगूठी	— मुद्दी
अंगोछा	— आंगूटी
अंटी	— पुरवुंटो
अंदर	— भित्तरि
अंधा	— कुरडो
अंधेरा	— काळुकु
अकल	— अकल
अगर	— गान्द
अंचार	— अडगय
अच्छा	— चागुं
अच्छूत	— म्हारु, हरिजन
अजगर	— हारु
अंजनबी	— परकिष्टु
जवायन	— वोंवों
जी	— आगा
ढाई	— अड्डेच
त:, अतएव	— देकून
तरसों	— ऐवेरां ऐवेरिं (एवेर)
दरक	— अल्लें
धर	— ओंटु
नवास	— अनवास
ार	— धाळींब
ना	— आपुणागेलो

अब	— आतां
अभी	— आतांचि
अमरूद	— पेर
अमावट	— आंबसट
अमुक	— अमको
अरथी	— किडबीडि
अल्फ़ाज़	— शब्दावळि
अलोना	— अळ्ळीं
अस्तबल	— गोट्टो
अस्तुरा(अस्तरा)	— बक्कोरु
अहाता	— [1] परम
आँख	— दोळो
आँगी (छकनी)	— चाळिं
आँठी	— पारि
आँवला	— आवाळो
आग	— वुज्जो
आगे	— मुक्कारि
आज	— आजि (आज)
आजा	— आजो, आबु
आजी	— आयि (आय), आजी
आदत	— [1] सवंय
आदमी	— मनीषु
आधा	— अर्द्धे
आना	— येवुंक
आपन	— आपन
आम	— आम्बो

आलवाल — आळें
आलू — कूक
आवाज़ — शब्दु
आसमान — मळब
आसान — सोंपें
आस्ते — सन्त
इकलौता — एकलो
इतना — इतलो
इतवार — ऐतारु
इमली — चिंच
इलायची — एळु
इल्ला — खोरोजु ([1]खरजु)
इस्पात — तिक्कें
उँगली — बोट
उडेलना — रकौंक
उंदुर — उंदीर
उकलाई (कै) — ओंकि
उखाडना — उम्माटुंक
उगना — किरलुंक
उच्छिष्ट — उष्टें
उठना — उटुंक
उडद — उडीद
उडना — उब्वुंक
उडाना — उब्बौंक
उडुस (खटमाल) — बिक्कुण्डु
उडेलना — रकौंक
उतना — उतलो
उतरना — देवुंक
उतराना — देवौंक

उदक — उदाक, उदक
उदर — पेट
उपराँत — उपरान्ते
उपला — शेणि
उपवीत — ज्ञानूवें
उपानह (जूता) — व्हाण
उमर — पिराय, पिरायि
उलटना — परतुंक
उलूक — घुघूम
उस्तरा — वक्कोरु, वक्कर
ऊँघना — कुरवुंक
ऊँट — करें
ऊख (ईख) — कोब्बु
ऊखल — वान
ऊपर — उँचारि
ऋण — रीण
एँडी — खूळ
एक — एक
ऐसा — अश्शी
ओंट — ओंटु
ओखली — वान
ओट — आड
ओढना — पांगरुंक
औंधाना — उमति करुंक
औंधा — उम्ति
और — आनी
औरत — बायल
कंघी — दन्तोणि
कंचुकी — चोळि

कंदुक — पेलु
कंधा — खान्दु
कई — जायतो, जैतो
कच्चा — हरवो
कच्छप — कासवु, (कासोवु)
कछनी — चाळिं
कटना — कातरुंक
1
कटहल — पणसु, पोणोस
कठौता — मरगी
कडुआ — कडु, कोडु
कतरना — कातरुंक
कद्दू — दुद्दी
कपडा — लुगट
कब — केद्दाना, केन्ना
कबूतर — पारवो
कम — ऊणें, वूणें
कमर — कूरडु
कमीज़ — चोग्गो
करतल — ताळवो
करना — करुंक
करेला — कारातें
कल — कालि, काल,
फायि, फाय
कलई — मनकट
कलम — पेन
कवर — उण्डी
कहना — सांगुंक, म्हणुंक
कहलाना — सांगोंक, म्हणोंक
कहाँ — खंयंय, खंय
कहा — सांगलें

कहानी — काणि
कहावत — हुम्माण, म्हणिण
कांख — खाखें
क़ांटा — कांटी
काका — आपापा
काकी — मौसी
कागज़ — कागत
काटना — कातरुंक
कान — कानु
काफ़ी — पूरो
काला — काळो
काली मिरच — मिरियाकणु
कितना — कितलो, इतलो
किताब — बूकु
किधर — खंथंय
किनारा — तडि
किराया — भाडें
कीमत — मोल
कील — खीळो
कुआँ — बायिं, बायं
कुछ — कांय
कुत्ता — सूणें
कुदाली — खोरें
कुबडा, कुम्हडा — कूवाळें
कुरसी — कदेल
कुहनी — कंपरु, कंपोर
कूटना — दलुंक, दोलुंक
कूदना — उडकी मारुंक
केंचुआ — गायंडोळु
केला — केळें

कैंची — कातरि
कैसा, कैसे — कश्शी
कोपीन — व्ल्लाणें
कोल्हू — घाणो
कौआ — कायळो
कौन — कोण
कौर — उण्डी
क्यों — कित्याक, इत्याक
क्योंकि — कित्याक म्हळ्यार
खट्टा — आम्बूस
खत — चीटि
खनना — खणुंक, खोणुंक
खबर — खब्बर
खरगोश — सांसो
खराब — बल्लाव
खरीदना — घेवुंक
खांखी — खांखि
खाट — मांचो
खाना — खावुंक
खारा — मिट्टस
खिलौना — खेळु
खीचंना — वोडुंक
खुजली — खरजु, खोरोजु
खुशबू — परमळु, परमोळु
खून — रगत
खेत — गाद्दो, शेत
खेलना — खेळुंक
खोखला — पोक्कोळु
खोटा — कूडो
खोदना — खणुंक, (खोणुंक)
खोलना — उगडावुंक, वागते करुंक
खौलना — उण्ड़ाळेवुंक
गधा — गाडव
गन्ना — कोब्बु
गया — गेल्लो (गेलो)
गरदन — गोवंटो
गरम — हून, हून
गरी — खोबरें
गलती — चूकि
गला — गळो
गली — केरि
गाय — गाय
गाली — सोवो, सवो
गिनना — मवुंक, मोवुंक, मेजुंक
गिरना — पडुंक
गिलहरी — चान्नी, चानी
गीदड — वागूळें
गीला — वोल्लें
गुच्छा — घोसु, फणो
गुठली — पारि
गूँगा — मन्नो, मोन्नो
गू — गू
गून्थना — गान्तुक
गेन्द — पेलु
गेहूँ — गोंवु
घडा — कळसो
घर — घर
घास — तण
घिग्घी — पासूळां भारकूण
घी — तूप

ाना — घुंवडावुंक
— घट्ट (घोट्ट)
सला — घूड्ड
लना — करगोंक
द — घडायु
ा — चांगु
न्द्रिका — चान्दीणें
की — दान्तें
ींडा — पडळें
ना — चडुंक
ा — चणो, चोणो
त — थापट
पल — व्हाण
गीदड — वागुळें
चा — दायि
ची — दावल
ली — मोगरें
ना — चमकुंक
न्दी — रूपें
चा — आपापा
वी — मौसी
टना — लेवुंक
बना — चाबुंक
र — चारि
ल — वरवु (वोरोवु)
हिये — जाय
ड़ा — फोवु
ड — परनें आंगवालें
ाग — दीवो

चींटी — मूय
चीनी — शक्कर, पैन्दार
चीरना — चीरुंक
चुनना — वेंचुंक
चुनांचे — देकूनु, देकून
चुनाव — वेंचप
चुराना — फारुंक
चूल्हा — रान्दणि
चूहा — विन्दूरु, उन्दीरु
चैला — कापु, काप
चैली — कापट्टी

छप्पर — मुग्गीळु
छलकना — चक्कुन्दूळेवुंक
छलना — फटवुंक
छिपकली — सोकनी
छिपना — लिंपुंक, निपुंक
छीलना — सोल्लुंक
छुरी — पेसकाति
छूना — आपडुंक
छोटा — सानु, लानु
छोडना — सोडुंक

जंगल — रान
जखम — धायु
जगह — स्थायु
जगाना — जागोंक
जचा — बाळान्ति
जनाई — नल्लाइ
जब — जेन्ना
ज़बान — जीभ

जमाई — जावंयि
जरठ — जरडो
जलद — मोड
जलना — जळुंक
जलाना — जळौंक
जल्दी — धारार
जवाब — जाप
जहाज़ — तारूं
जागना — जागो जावुंक
जान — जीव, जीवु
जानना — जाणुंक, जाणं जावुंक
जानवर — मृग
जिन्दगी — जीवीत
ज़िन्दा — जीवो
जुकाम — भारकूण
जुगनू — काजलो
जुड़वाँ — जव्वळ
जुही — जायि
जूँ — ऊ, वू
जूठन — उष्टें
जूता — व्हाण
जेंवना — जेवुंक
जेठानी — जाव
जोंक — जळुव
जो — जो
जोतना — कोसौंक
ज्वार — भरती
झगडना — झगडुंक
झाड — झाड
झाडना — झाडुंक
झाडू — सारणि
झूकना — बावगुंक
झुकाना — बावगौंक
झुर्री — मीरि
झूठ — फट्टि
झोंपडी — खोंपी
टहनी — सिरपूट
टाँग — पायु
टीला — डंगरु (डोंगोरु)
टुकड़ा — कुटको (कुटूको)
टूटना — भेत्तुंक
ठंडक — थंडी
ठंडा — शेळु
ठंठेरा — कासारु
ठहरना — राबुंक
ठाँव — स्थायु
ठीक — खरें
ठोस — धड
डंठल — देंटु
डटना — राबुंक
डर — भय
डरना — भीवुंक
डाल — खान्दो
डुबकी — बुडकी, बुडकूळि
डुबोना — बुडौंक
डूबना — बुडुंक
डेढ — देड
डोर — दोरि

ढकन	— धांकणें
ढढोरा	— डांगीरो
ढपना, ढकना	— धांपुंक
ढकेलना	— धिंगलुंक
ढाई	— अडेज
ढूंढना	— सोदुंक
तंबाकू	— धूम्रपान
तक	— पर्यन्त, परान
तकदीर	— भाग्य, नसीब
तकलीफ़	— कष्ट
तकिया	— उश्शें
तख्ता	— फळें
तख्ती	— फळि
तथापि	— जाल्यारीय
तब	— तद्दाना, तेन्ना
तमाशा	— तमाशा
तरंग	— पाळ
तरजनी	— किरांगळी
तरजुमा	— तरजीमा
तरबूज	— काळींग
तरह	— गदी, वरी
तलना	— तळुंक
तलवा	— ताळवो
तलवार	— खाण्डे
तांबा	— तांबें
ताई	— म्हाव
ताऊ	— म्हान्तु
ताजा	— हरवो, जीवो
तार	— सरि
तावीज	— अन्तर
तिक्त	— कडु (कोडु)
तितली	— पाकी
तिल	— तीळु
तिलक	— तीळो
तीसरा	— तीसरो
तेरह	— तेरा
तेरा	— तुगेलो
तेल	— तेल
तैयार	— तय्यार
तैरना	— पोवुंक
तैराक	— पोंवपी
तैसे	— तश्शी
तोंद	— धोलि
तोडना	— भेत्तुंक
तोता	— कीरु
तोप	— नाळि
थांवला	— आळें
थाली	— पळेरु, वाटें
थूकना	— थू करुंक
थैला	— साकु
थैली	— चीरि
थोडा	— एद्दें
थोथा	— पोलि, पोक्कळ
दंपती	— होर (व्होर)
दबना	— दामुंक
दबाना	— दामौंक
दमा	— पासूळं

दरवाज़ा — कवड, बागिल
दराती — व्हीळों
दर्द — दुक्की
दल — दळ
दलना — दळुंक
दवा — ओकद (वोकद)
दस्त — भैरी
दही — मेणांय, धयं
दाडिम — धाळिंब
दाडी — खाड
दादा — आबु
दादी — आयी
दादुर — बेब्बो
दाम — मोल
दायाँ — उज्जो (वुज्जो)
दारू — दारूव
दिखाना — दाकोंक
दिन — दीसु
दिया — दीवो
दिल — हर्दें
दिलाना — दीवोंक
दीमक — वाळती
दीवार — पागार
दुकान — आंगडि
दुम — बाल
दुलहन — व्होकल, होकल
दुहना — धार काडुंक
दुहिता — धूव
दूध — दूद
दूर — धूरा
दूल्हा — होरेतु, व्होरेतु, व्हरेतु
दूसरा — दुसरो
देखना — चोवुंक, देकुंक
देना दीवुंक
देर — तडवु (तोडोवु)
देवर — देरु
देवराणी — भावज
देवल — देवळ
देहली — हुम्बोरु
दो — दोनि
दो पहर — दनपार
दौडना — धावुंक
दौडाना — धावंडावुंक
दौरी — खोट्टूळ

धमकाना — भिसरावुंक
धमकी — भिसरावप
धरा — भूईं
धवल — धवो
धान — भात
धार — धार
धीरे — सन्त, ल्हवु (ल्होवु)
धीवर — मुकवंचो
धुआँ — धुव्वर
धूप — ओत, वोत
धूली — धूळि
धोका, धोखा — फटवण
धोना — धूवुंक
धोबिन — मडवळि

धोबी	—	मडवळु
न	—	ना
नकद	—	रोखड
नख	—	नांकूट
नातिनी	—	नाति
ननद	—	नणंद
नमक	—	मीट
नमकीन	—	मिट्टूस
नया	—	नवो
नरम	—	मवु (मोवु)
नल	—	नळो (नोळो)
नली	—	नळि
नवनीत	—	लोणि
नवाँ	—	नवावां
नहलाना	—	न्हाणोंक
नहाना	—	न्हावुंक
नहीं	—	न्हंय
नाइन	—	केळसंची
नाई	—	केळसंचो
नाखून	—	नांकूट
नाटा	—	गुड्डो
नाती	—	नातु
नापना	—	मवुंक, मोवुंक
नाभि	—	बम्बूली, बोंबली
नाम	—	नांव
नाव	—	मोंचूव
निंबू	—	निबूवो
निकलना	—	भायर सरुंक
निगलना	—	गीळुंक
निचोडना	—	पीळुंक
निपट	—	निपट
निसेनी	—	निस्सणि
नींद	—	नीद
नीचे	—	खाल, सकल
नीलाम	—	लैलांव
नेवला	—	मुंगूशी, मुंगस
नैहर	—	कूळार
नोक	—	मोन्ने
नोचना	—	खरपुंक
नौ	—	णव्व
पंख	—	पाक
पँखडी	—	पाकूळि
पंखा	—	आयणो
पकडना	—	धरुंक
पकड़ाना	—	धरोंक
पकाना	—	पिकोंक
पका	—	पिक्कल्लो
पगुराना	—	रोन्तावुंक
पचना	—	जीरुंक
पढना	—	पढुंक
पडोस	—	सेजार
पडोसी	—	सेजारि
पतला	—	प्रातळु, सोपूरु
पतोहू	—	सून
पत्ता	—	पान
पत्थर	—	फातरु
पनस	—	पणसु (पोणोसु)
पर	—	चेरि (चेर)

परछाई — सावळि
परसों — [1]पयरि, परां
परोसना — वाडुंक
पर्यन्त — परान
पर्व — परब
पलथी — पालकडि
पलीता — पन्जु, पोंजु
पसारना — पातलावुंक
पसीजना — हुम्मेवुंक
पसीना — हूम
पहनना — न्हेसुंक
पहला — पैलो, प्रथमलो
पहले — पैले, प्रथम
पहाड — मलो (मोलो), डंगरु
पहुँचना — पावुंक
पहुँचाना — पावौंक
पहेली — आळें
पाँव — [1]पावल
पागल — पिरशाचो
पागलपन — पिरशें
पान — फडिचान
पापड — हाप्पोळु
पिघलना — कडुंक
पिघलाना — कडौंक
पिपीलिका — मूयि (मूय)
पिरोना — गान्तुंक
पिलाना — पीवौंक
पीठ — फाटि
पीढी — पिळगें

पीतल — पित्तळि
पीना — पीवुंक
पीव — पू
पीपल — पिम्पळु
पीला — हळदूवो
पीलिया — काळकोयि
पीसना — दान्तौंक
पुकारना — उळदुंक
पुत्र — पूतु
पुराना — परनो
पुल — संकवु (संकोवु)
पुश्त — पिळगें
पूँछ — बाल
पूछना — निमगुंक (नींगुंक), विचारुंक
पेट — पोट
पेड — रूकु
पेशा — धंध
पेशाब — मूत
पैंजनी — पैंजोळ
पैर — पायु
पोंछना — पुसुंक
पोटली — पटळि
पोता — नातु
पोती — नाति
प्याज़ — पिय्यावु
प्यार — मोगु
प्याला — खोल्लो
प्यास — तान
प्रपौत्र — पोणतु

ौत्री — पोणती
टना — तुण्टुंक, पिंजुंक
ल — फळ
सल — लुव्वणि
डना — पिंजुंक
र — आनिकंय
कना — फुंकुंक
ट — फूटि
टना — भेत्तुंक
कना — विन्दुंक
डना — भेत्तुंक
लाद — तिक्के
र — मांकड
ी — पिरलूक
रा — बोकडु, बोक्कोडु
री — बोक्कडि, बोक्कोडि
ाना — वांचौंक
ा — चेरडुं
डा — वासुरं
ना, बजाना — वाजुंक
ा — व्हडु
लाना, बताना — सांगुक, म्हणुंक
ी — वाति
बू — घाणि
लना — परतुंक
ना — जावुंक
वाना — करौंक
ा — बापा

बर — व्हरेतु (व्होरेतु)
बरकत — बरखत
बरगद — वड्डु (वोड्डु)
बरतन — आयदन
बरात — व्हराण (व्होराण)
बवासीर — किरले
बस — पूरो
बसना — राबुंक
बसाना — राबौंक
बहन — भयणि
बहरा — केप्पो
बहुत — जायतो, जैतो
बहू — सून
बाचना — वाचुंक
बांटना — वांटुंक
बायाँ — दावो
बाज़ार — सान्त
बात — कायरें
बाप — बापा
बाबू — बाब
बार — फान्तां
बारिश — पावसु
बारी — पावटी
बारूद — दारूव
बाल — रोम
बावरची — रान्दपी
बाहर — भायर
ब्याना — वीवुंक

बिकना — विकुंक
बिखरना — विकरुंक
बिछौना — हान्तुण
बिठाना — बैसौंक
बिल्ली — माजर
बिसरना — विसरुंक
बीच — मद्दें, मोद्दें
बीज — बीं
बुखार — तापु
बुझना — सोन्तु जावुंक
बुझाना — सोन्तु करुंक
बुढा — म्हान्तारो
बुनना — वीणुंक
बुरा — बाल्लाव
बुलवाना — उलदौंक
बुलाना — उलदुंक
बूँद — थेम्बो
बेचना — विकुंक
बेटा — पूतु
बेटी — धूव
बेवा — रांड, बोडकी
बैठना — बैसुंक
बैल — पाड्डो, बयल
बोझ — वोझें
बोना — ओवुंक, वोवुंक
बोलना — उल्लौक
बोहनी — बणि
ब्याज — वाडि
ब्याह — व्हारडीक

भतीजा — भाचो
भरना — भरुंक
भाई — भाउ, भावु
भात — सीत
भाभी — जाव, होन्नी (व
भावज — भावज
भीतर — भितरि
भुनाना — भाजुंक, तळुंक
भूकना — भोंकुंक
भेजना — पेटौंक
भैंस — म्हशि
भोज — नेगु
भौंह — भोवरी
भ्रमण — भोंबडि
मकान — घर
मक्खन — लोणि
मक्खी — मूसु
मगर — पण
मच्छली — मासळि, नुश्तें
मट्ठा — ताक
मत — नाका, नाकात
मात्था — निड्ळ
मथना — घांटुंक
मथनी — खोवलो
मदद — सहाय
मरना — मरुंक
मर्द — दादलो
मलना — पशेवुंक, घासुंक
मशाल — पोंजु

हंगा	—	म्हारगु
हीना	—	मयनो
ाँ	—	मांय, आवसु, आम्मा
ांगना	—	मांगुंक
ाँग	—	मागो
ाँजना	—	घासुंक
ाँड	—	पेज
ानना	—	मानुंक
ापना	—	मोवुंक
ाफ़	—	माप
ामा	—	मामु
ामी	—	मांयिं
ारना	—	मारुंक
ालूम होना	—	कळुंक
मेट्टी	—	रेवं
मेर्च	—	मिरयासांग
मेलना	—	मेळुंक
मेलाना	—	मेळोंक
ीठा	—	गड्ड (गोड्ड)
ुन्दरी	—	मुद्दी
ुंह	—	तोंड
ुडना	—	घूवुंक
ुफ्त	—	दम्म्यारि
ूतना	—	मूतुंक
ूंदना	—	धांपुंक
	—	आन्तु, आन्त
ेंढक	—	बेब्बो
ेज	—	मेज

मैं	—	हांव
मोटा	—	थोरु
मोती	—	मत्ती
मोम	—	मेण
मोर	—	मोरु
मौरी	—	मसिंग
यह	—	हो, ही, हें
यहाँ	—	हांगा
यही	—	होचि, हीचि, हेंचि
यहीं	—	हांगाचि
या	—	कि, अथवा
याद	—	उडगासु, उगडासु
यानी, याने	—	म्हळ्यार
यों	—	अश्शी
रखना	—	दवरुंक
रगडना	—	वाटुंक
रसोइया	—	रान्दपी
रस्सा	—	हांजो
रस्सी	—	दोर
रहना	—	राबुंक
राख	—	गोब्बोरु
राखना	—	राखुंक
रात	—	रात
राल	—	ताळ
रुधिर	—	रगत
रूपा	—	रुप्पें
रेंगना	—	चरुंक
रेत	—	रेवं
रेशा	—	कातो

रोज़	— दीसु, दिसान-दीसु
रोना	— रडुंक़ (रोडुंक)
रोपना	— ओवुंक, वोवुंक
लंग	— कास
लंगडा	— थोंटो
लंगडांना	— कुंटुंक
लंबा	— दीगु
लकडी	— राकूड, बड्डी
लगना	— लागुंक
लटकना	— लांबुंक
लटकाना	— लाबोंक
लडका	— चेलो, चेलो, चेडो
लडना	— झुझुंक
लडाई	— झूझ
लपेटना	— वेडावुंक, कवळुंक
लवंग	— कारापूल
लवण	— मीट
लहंगा	— गागरो
लहर	— पाळ
लाई	— ल्हाय
लात	— फाफराचो
लादना	— व्हावुंक
लाना	— हाडुंक
लाल	— ताम्बडो
लाश	— मडें (मोडें)
लिखना	— बरोंक
लिटाना	— निद्दावुंक
लिपना	— पुसुंक
लुनना	— लूवुंक
लेना	— घेवुंक, काडुंक
लोग	— जनां
लोटना	— लळुंक (लोळुंक)
लोहा	— लोकंड
लोहार	— कोरलंचो
लौटना	— परतुंक
वट	— वडु
वधू	— व्हक्कल (व्होक्कल होक्व
वन	— रान
वमन	— ओंकि
वर	— व्हरेतु (व्होरेतु) हो
वह	— तो, ती, तें
वहाँ	— थांगा, थंय
वहीं	— थांगाचि
वही	— तोचि, तीचि, तेंचि
वापस	— परतून
विरेचन	— भैरि
वेश्या	— चेडि
शराब	— सूरु
शहद	— म्होवु
शाख	— खान्दो
शादी	— व्हारडीक
शाम	— सांज
शूप	— गेरसी
शोधना	— सोदुंक
सकना	— जावुंक
सगाई	— वेस्त
सत्य	— सत्य, सांत

सज़ा — खडो (खोडो)
सढना — कुसुंक
सफ़ेद — धवो (धोवो)
सब — सग
समझना — समझुंक
समझाना — समझावुंक
समधि — वेयु
सम्मुख — मुक्कारि
सरसों — सासम
सर्दी — भारकूण
ससुर — मावुं
सस्ता — ससारु, सवाय
साढू — सादुक
सात — सात
साथ — लागि
साबुन — सौकापोळि
सारा — सग
सालन — रावन्दय
सांस — मांयिं
सिकुडन — मीरि
सिखाना — शिकौंक
सिझना — सिजुंक
सिझाना — सिजौंक
सियार — कोल्हो
सिर — मातें
सिरफ़ — फकत
सींचना — शिम्पुंक
सीखना — शिकुंक (शीकुंक)
सीधा — नीट

सीना — सीवुंक
सुंघाना — हूंगौंक
सुनना — आयकुंक
सुनाना — आयकौंक
सुपारी — फपळ
सुबह — सकाळि
सुलाना — निद्दावुंक
सुस्त — आळसो
सुस्ती — आळसाय
सूंघना — हूंगुंक
सूअर — डुकर
सूई — सूव
सूखना — सुकुंक
से — थाकून, साकून, सून, थावन, थान, च्यान, पासून, कूय, केय, चेकूय, चेकय, न, नी
सेहरा — भसिग
सोंठ — सूंठि
सोचना — आठौंक
सोना — भागांर
स्कन्ध — खान्दु
स्तंभ — खांबो
स्वेद — हूम
हंसना — हांसुंक
हंसाना — हासौंक
हंसिया — व्हीळो
हज़ामत — कापणि
हजाम — केळसंचो

हटना — धूरा सरुंक
हडपना — गीळुंक
हथेली — ताळवो
हथौड़ा — मडतेल
हम — आमी
हमाम — न्हाणि
हमेशा — केदनांय, केन्नाय
हरना — फारुंक
हरा — पाचवो, हरवो
हराना — हारवौंक
हरिजन — म्हार
हवा — वारें
हाँ — होय
हांपना — खरशेवुंक
हिचकी — खलगडि
हिलना — हालुंक
हिलाना — हालौंक
हिसाब — लेक
हिस्सा — वांटो
ही — चि
हूँ, है, हैं, हो — तं
होंठ — ओंटु
होना — जावुंक
हौले — होळु (हळु), व्हो

कोंकणी स्वयंशिक्षक

आर० के० राव

भारतीय आर्य परिवारकी मधुरतम और अत्यन्त समृद्ध भाषा कोंकणीका हिन्दीके माध्यमसे ज्ञान प्रदान करनेका श्रम इस स्वयंशिक्षकके द्वारा किया गया है। कोंकणी पैंतीस लाख लोंगोंकी मातृभाषा है और लगभग उतनी बड़ी संख्यामें लोग इसे समझते भी हैं। साहित्य अकादमीने भारतकी अन्य विकसित और साहित्यिक भाषाओंके साथ इसकी भी गणना की है। आजकल गैर-कोंकणी लोग भी कोंकणी सीखनेकी इच्छा प्रकट करने लगे हैं जिसकी पूर्तिके हेतु इस स्वयं-शिक्षककी रचना हुई है। भारतकी भावात्मक और सांस्कृतिक एकताकी साधिका राष्ट्रभाषा हिन्दीकी दृष्टिसे भी यह ग्रन्थ महत्वपूर्ण है।

मूल्य : साधारण संस्करण – पन्द्रह रुपये
पुस्तकालय संस्करण – बीस रुपये

Sole Distributors :



PAI & COMPANY

Broadway **ERNAKULAM** · Mount Road **MADRAS** · M. G. Road **TRIVANDRUM** · Kallai Road **CALICUT**